

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-११

शुभाकरगुप्त-विरचिता

अभिसमयमञ्जरी

མཛོེན་པར་རྟེན་པའི་སྒྲེ་མ།



भोट विद्या संस्थानम्

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३७

ख्रीस्ताब्द १९९३

RARE BUDDHIST TEXT SERIES-11

ABHISAMAYAMAÑJARĪ

OF

SUBHĀKARA GUPTA



भोटविद्या संस्थानम्

Editors

PROF. SAMDHONG RINPOCHE
Project Director

PROF. VRAJVALLABH DWIVEDI
Deputy Director

RARE BUDDHIST TEXT RESEARCH PROJECT
Central Institute of Higher Tibetan Studies
SARNATH, VARANASI

B. E. 2537

C. E. 1993

Co-Editors

Pt. Janardan Pandey

Dr. Banarsi Lal

Dr. Tashi Samphel

Dr. Thakur Sain Negi

Thinlay Ram Shashni

Penpa Dorjee

Vijay Raj Vajracharya

First Edition : 550 Copies, 1993

Price : Rs. 35.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi-1993

Published by :

**Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007**

Printed by :

Shivam Printers

C. 27/273, Indian Press Colony

Maldahiya, Varanasi-2

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-११

शुभाकरगुप्त-विरचिता

अभिसमयमञ्जरी

མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྒྲེ་མ།

མཛེས་པ་ལོ། དགེ་བའི་འཕྲུང་གནས་སྤྲུལ་པ།



भोटविद्या संस्थानम्

सम्पादकौ

प्रो० सम्दोङ् रिनपोछे

योजनानिदेशकः

प्रो० ब्रजवल्लभ द्विवेदी

उपनिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३७

ख्रीस्ताब्द १९९३

सहायक-मण्डल

पं० जनार्दन पाण्डेय
डॉ० बनारसी लाल
डॉ० टशी सम्फेल

डॉ० ठाकुरसेन नेगी
ठिनलेराम शाशनी
पेन्पा दोर्जे

विजयरज वज्राचार्य

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९३

मूल्य : रु० ३५.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-१९९३

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक :

शिवम् प्रिन्टर्स

सी० २७/२७३ इण्डियन प्रेस कालोनी

मलदहिया, वाराणसी-२

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना की परामर्शदात्री समिति के 11.8.87 के निर्णय के अनुसार 'धीः' के चतुर्थ अंक में ज्ञानोदय और नवें अंक में डाकिनीजालसंवररहस्य नामक लघु तन्त्र-ग्रन्थों को प्रकाशित किया जा चुका है। अब उसी क्रम में 'धीः' के तेरहवें अंक में अभिसमयमञ्जरी को प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ की हमें चार पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई हैं। इसका भोट अनुवाद भी उपलब्ध है। इन्हीं सबकी सहायता से इस ग्रन्थ को यथामति संशोधित कर इस शोधयोजना के विद्वानों ने प्रस्तुत किया है। सहायक सामग्री का विवरण इस प्रकार है—

क—गुह्यसमयसाधनसंग्रह

व्यक्तिगत संग्रह प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय (कापी 1-2), मूल पाण्डुलिपि धर्मरत्न वज्राचार्य काठमाण्डू, हिदेनोवु ताकाओका की सूची में संकलित सं० DH. 332, (Microfilm Catalogue of the Buddhist Mss of Nepal. 1981, Page-110)।

ख—डाकिनीगुह्यसमयसाधनमालातन्त्रराज

राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डू, लगत सं० 3/719, पत्र सं० 177, लिपि-देवनागरी (अभिसमयमञ्जरी पत्र सं० 9-33), जेराक्स प्रति शान्तरक्षित पुस्तकालय, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, परि० सं० 23268।

ग—गुह्यसमयसंग्रह

इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, न्यूयार्क सं० एम० बी० बी० I-140. लिपि-नेवारी, पत्र सं० 98 (अभिसमयमञ्जरी-पत्र 7 से 25 तक) फोटो प्रति व्यक्तिगत संग्रह प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय।

घ—अभिसमयमञ्जरी

इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, न्यूयार्क संख्या-एम० बी० बी० II-243. पत्र सं० 35. लिपि-प्राचीन नेवारी, नेपाली संवत् 880, फोटो प्रति व्यक्तिगत संग्रह प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय।

भो-भोटानुवाद, देगे तन्युर संस्करण, तो० सं० 1582

इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम क. ख. मातृकाओं में शाक्यरक्षित, घ. मातृका में शान्तरक्षित तथा ग. मातृका और भोट अनुवाद में शुभाकर गुप्त दिया गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ (पृ० 15) में ग्रन्थकार अपने गुरु के ग्रन्थ वज्रावली का उल्लेख करते हैं। तदनुसार ग्रन्थकार का नाम शुभाकर गुप्त ही मानना उचित होगा, क्योंकि निष्पन्नयोगावली, वज्रावली जैसे महनीय ग्रन्थों के रचयिता अभयाकर गुप्त के शिष्यों में शुभाकर गुप्त का नाम प्रसिद्ध है। पण्डित अभयाकर गुप्त बंगाल के पालवंशीय राजा रामपाल के समय (1084-1130) में विद्यमान थे। अतः इनका समय 11वीं शताब्दी का अन्तिम और 12वीं शताब्दी का पूर्व भाग माना जाता है। शुभाकर गुप्त का समय तदनुसार 12वीं शताब्दी का मध्य भाग निर्धारित किया जा सकता है। शान्तरक्षित अभयाकर गुप्त से प्राचीन आचार्य हैं और तन्त्रशास्त्र के इतिहास ग्रन्थों में हमें सिंहल द्वीप में जन्मे एक सिद्ध पुरुष के रूप में शाक्यरक्षित का नाम मिलता है। जिनका प्रतिष्ठाननिर्णय नामक एक ही ग्रन्थ उपलब्ध होता है। फलतः अभी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अभयाकर गुप्त के शिष्य शुभाकर गुप्त ही इस ग्रन्थ के कर्ता हैं। प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि के अन्त में आचार्य अनंगवज्र अपने गुरु शुभाकर का स्मरण करते हैं। निश्चय ही ये शुभाकर भी शुभाकर गुप्त से भिन्न प्राचीन आचार्य हैं।

अपने इस लघु ग्रन्थ में लेखक ने अपने गुरु अभयाकर गुप्त की वज्रावली के अतिरिक्त लूयीपाद (पृ० 8, 15) और सिद्ध शबरपाद (पृ० 29) का तथा लूयीपादाभिसमय के साथ अन्य अनेक अभिसमयों (बहुषु चाभिसमयेषु-पृ० 8) का उल्लेख किया है। फलतः 'अभिसमय' शब्द के अर्थ के विषय में जिज्ञासा होती है। गुह्यसमाज (7.34) और कृष्णयमारि तन्त्र (17.23) में बोधि शब्द के साथ अभिसमय शब्द का भी उल्लेख मिलता है। अभिसमया-लंकार की स्फुटार्था वृत्ति (पृ० 93) में चतुर्विध प्रयोग मार्ग को अभिसमय कहा गया है। नामसंगीति की अमृतकणिका टीका (पृ० 331) में प्रभास्वर निराभास ज्ञान के साक्षात्कार को 'अभिसमय' कहा गया है। इन सबके आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि साधन मार्ग, अर्थात् प्रयोग मार्ग (उत्पत्तिक्रम) की प्रक्रिया का ही नाम अभिसमय है। विभिन्न अभिसमयों (साधनाओं) में अपने-अपने इष्टदेव का साक्षात्कार करने की, तदाकार होने की विभिन्न आचार्यों द्वारा बताई गई प्रक्रिया में उत्पत्तिक्रम की वह सारी पद्धति बताई जाती है, जिसकी सहायता से साधक अपने इष्टदेव का साक्षात्कार कर अन्ततः तद्भावापन्न हो जाता है। ऊपर के उद्धरणों में 'बोधि' शब्द के साथ आया 'अभिसमय' शब्द इसी अर्थ का बोध कराता है, जब कि नामसंगीति की टीका इस प्रयोगमार्ग द्वारा प्राप्त होने वाले प्रभास्वर पद के लिये भी, उसके फल के लिये भी इसी शब्द का प्रयोग करती है।

ऊपर दिये गये हस्तलेखों को सुलभ कराने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने सहायता की है, जिनका नाम-निर्देश ऊपर किया जा चुका है, उनका हम आभार स्वीकार करते हैं। इन ग्रन्थों के संस्कृत और तिब्बती पाठों को परिष्कृत करने वाले दुर्लभ ग्रन्थ शोध योजना में कार्यरत विद्वानों की नामावली का उल्लेख भी यथास्थान कर दिया गया है। इन सबको भी हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने बड़ी तत्परता से पाठ-संकलन और सम्पादन कर तथा यथोचित परिशिष्टों को संयोजित कर इस ग्रन्थ को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। अन्त में हम शिवम् प्रेस के व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहेंगे, जिन्होंने तत्परतापूर्वक ग्रन्थ को प्रकाशित करने में सहयोग दिया।

सारनाथ

एस० रिन्पोछे
निदेशक

P R E F A C E

We have already published two minor text called the *Jñānodayatantra* and *Dākinījālasaṃvararahasyam* at the instance of the Advisory Committee of the Rare Buddhist Text Research Project in the fourth and ninth issues of the *Dhī* journal respectively. Presently in that series we have brought out the *Abhisamayamañjarī* of Śubhākara Gupta.

The text has been collected with the help of four mss. The Tibetan translation of the text is also available. With the help of these mss. the Text has been edited by the scholars of this project and presented for the readers. While the text in its edited form we have taken help from the following—

Ka – *Guhyasamayasādhanaśaṃgraha*

Dharmaratna Vajracharya, Kathmandu, Nepal.

Dh-332, listed in the microfilm catalogue of Buddhist Manuscripts of Nepal, P-110, 1981, ed. Hidenobu Takaoka,

(Copy No. 1-2 from private collection of Prof. Jagannath Upadhyaya),

Kha – *Dākinīguhyasamayasādhanaśaṃgraha*

National Archives, Kathmandu

No—3/719 Folio—177

Script—Devanāgarī

(*Abhisamayamañjarī* Folios 9-33) Photostate copy preserved in the Tibetan Institute, Shantarakṣita Library. Acc. No—23268.

Ga – *Guhyasamayaśaṃgraha*

Institute for Advanced Studies of World Religions, NY.

Ms. MBB-I—140 Script—Newārī

Folio—98

(*Abhisamayamañjarī*, Folio no. 7-25) Photo copy in the private collection of Prof. Jagannath Upadhyaya.

Gha – *Abhisamayamañjarī*

Institute for Advanced Studies of World Religions, NY.

Ms. MBB-II-243 Folio—35

Script—Newārī 880 Nepali Saṃvat

Photo copy in the private collection of Prof. Jagannath Upadhyaya.

Bhoṭa—Tibetan translation, Derge bsTanḥGyur Toh. No. 1582

Variant authorship is ascribed to the text in these mss. Ms Ka and Kha bear Śākyarakṣita as its author and Ms Gha mentions Śāntarakṣita as author.

But in Ms Ga and Tibetan translation it mentions Śubhākaragupta as the author of the text. Page no. 15 of the present text attributed *Vajrāvalī* to his master. This shows that Śubhākaragupta is the author of the text, because he was one of the famous disciples of Ācārya Abhayākara Gupta who wrote celebrated work like *Niṣpannayogāvalī* and *Vajrāvalī*. Ācārya Abhayākara Gupta lived during the time of king Rāmapāla (1084-1130) of Pāla dynasty in Bengal. So we can assert the date of Abhayākara Gupta between the end of eleventh and the beginning of twelfth century A. D. This helps us to assert that Śubhākara Gupta lived in mid 12th century. Ācārya Śāntarakṣita was much earlier than Abhayākara Gupta. Name of Śākyarakṣita could be traced in the History of Tantra Śāstra as a great ascetic born in Simhala island. Only one Text called *Pratiṣṭhānirṇaya* is attributed to his credit. For these reasons we come to the conclusion that Ācārya Śubhākara Gupta, a famous desciple of Ācārya Abhayākara Gupta, is the author of the present text. Ācārya Anaṅga Vajra salutes his master Śubhākara in the end of his text *Prajñopāya-viniścayasiddhi*, which leads us to this assertion that Ācārya Śubhākara was a different scholar who is earlier than Śubhākara Gupta.

In this minor text, beside *Vajrāvalī* of his master, the author had quoted Lūyipāda (p. 15), Siddha Śabarapāda (p. 29) and *Lūyipādābhisamaya* with many other Abhisamayas. In *Guhyasamāja* (7.34) and Kṛṣṇayamāritantra (17.23) mention Abhisamaya with word *Bodhi* can be seen. In *Amṛtakaṇikā*, Commentary of *Nāmasaṃgīti* (p. 331) Abhisamya is asserted as the direct cognition of Buddha nature.

On these bases we can say Abhisamaya (clear realization) is the name of observance of path of preparation. In various Abhisamayas the way and manner of direct cognition of ones personal deity and becoming inseparable with the deity were explained which help a practioner to become one with his deity after direct cognition of his personal deity. The word *Bodhi* coming with Abhisamaya as stated above explains the same perception, But in the commentary of *Nāmasaṃgīti* the word is used for clear light stage (Prabhāsvara) and its fruit which can be obtained from the path of preparation.

We express our gratitude to individuals and the institutions which made the manuscript available for us. We are also thankful to the scholars of RBTRP, who helped edit the Sanskrit and Tibetan versions of the texts. We acknowledge the help of the scholars for collating and placing the appendices accordingly for the benefit of the readers. In the end we thank the management and worker of Shivam Printers to expedite the work in print.

ཕྱོན་གྱི་ཁྲི་འཕྲིན་།

ནང་པའི་ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཆར་གཞིའི་གྲོས་འདེབས་་་་
ཆོག་ས་ཆུང་གི་ ༥༧ ཕྱི་ཟླ་ ༤ པའི་ཆེས་ ༡༡ གི་གྲོས་ཆོད་བཞིན་རྒྱུ་ ཉམས་དེབ་བཞི་པའི་
ནང་དུ་ཡི་ཤེས་འཆར་བ་དང་དུས་དེབ་དགུ་པའི་ནང་དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་དུ་བ་སྡོམ་པའི་སྙིང་
པོ་ཞེས་སྐུད་གཞུང་ཆུང་དུ་གཉིས་དཔར་སྐྱེན་ཞུས་ཡོད་པའི་རིམ་བཤུ་འདྲིའི་འོག་དུས་དེབ་་་
བཅུ་གསུམ་པའི་ནང་དུ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྟེ་མ་དཔར་སྐྱེན་ཞུས་ཡོད།

གསུང་རབ་འདྲིའི་ལག་གྲིས་མ་བཞི་ལག་སོན་བྱུང་ཞིང་ངོད་འགྱུར་ཡང་ཡོད་་་
བ་རྣམས་ལ་བདེན་འཆར་གཞི་འདྲིའི་མཁས་དབང་ལས་ཅིད་རྣམས་ཀྱིས་སྒྲིམ་གང་ཉམས་་་་
ཞུས་དག་བུས་ཏེ་གསུང་རབ་འདྲི་དཔར་སྐྱེན་ཞུས་ཡོད་པར་མཐུན་གྱུར་ཆ་ཀྱིན་ཞུས་ཁྲུངས་
གསུམ་གསལ།

༡—གསང་པའི་དམ་ཆོག་སྐྱབ་ཐབས་བསྐྱུས་པ།

སྟོབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕུག་གི་སྐྱ་སྐར་དཔེ་མཛོད་ (གྲིས་དེབ་ ༡—༢) །

ཀུའམ་ཏུ་ཏུ་འི་རོ་ཆེ་སྟོབ་དཔོན་ཆོས་ཀྱི་རིན་ཆེན་གྱི་ཅུ་པའི་ལག་གྲིས་མ།

(ཉིད་ཅོ་བྱུང་ཀུའམ་ཏུ་ཏུ་འི་དཀར་ཆག་བདུས་ཨང་ DH. 332. བལ་ཡུལ་གྱི་ནང་པའི་
ལག་གྲིས་མ་ (མིན་སྐྱིལ་ཏུ) སྐྱ་གཞུགས་མིང་ཤོག (མའི་ཀྱོ་ཕི་ལུམ་) དཀར་
ཆག་ ༡༩༤༡ ལྷེབ་ ༡༡༠)

ཁ—སྐུད་ཀྱི་སྐུལ་པོ་མཁའ་འགྲོ་མ་གསང་པའི་དམ་ཆོག་སྐྱབ་ཐབས་སྟེང་ག།

བལ་ཡུལ་སྐུལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀུའམ་ཏུ་ཏུ་འི་

ལག་གྲིས་མ་ཨང་ (ལག་དྲ་སྟེ་) ༢/༧ ༡༩

ལྷེབ་གྲངས་—༡༧༧

ཡིག་གཞུགས་དེའུ་གཞི་ (མངོན་པར་དོགས་པའི་སྒྲིམ་གྲངས་ ༧-༢༢) ཡུལ་
 དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ཞི་འཚོ་དཔེ་མཛོད་དུ་བཞུགས་
 པའི་འཁྲུལ་པར་ (རིམ་ཀླུ་) འདྲ་ཤུས་ཉིས་ཡིང་ ༢༢༢༦༤

ག-གསང་བའི་དམ་ཚིག་བསྐྱུས་པ།

ནུ ཡུལ་ འཛམ་གླིང་ཆོས་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་སློབ་ཁང་།

(ཨིན་སུའུ་ཡུའ་ ཨམ་ ཨེའུ་ཤྲིས་ སུའུ་འཛམ་ ཨམ་ འཁྲུའ་ རིམ་ཀླུ་ ནུ ཡུལ་) །

ཡིང་-ཨམ་. བི་. བི་. ༡-༡༧༠

ཡིག་གཞུགས་ནེའུ་རྒྱ་

ལྷོ་བ་གྲངས་-༧༤

(མངོན་པར་དོགས་པའི་སྒྲིམ་ལྷོ་བ་ ༧ ནས་ ༢༥ བར་) །

སློབ་དཔོན་འཛིག་དེན་མགོན་པོ་མཆོག་གི་སྐུ་སྒྲེར་དཔེ་མཛོད་དུ་བཞུགས་པའི་པར་
 བཤུས།

ག-མངོན་པར་དོགས་པའི་སྒྲིམ་

ཨིན་སུའུ་ཡུའ་ ཨམ་ ཨེའུ་ཤྲིས་ སུའུ་འཛམ་ ཨམ་ འཁྲུའ་ རིམ་ཀླུ་ ནུ ཡུལ་།

ཡིང་-ཨམ་. བི་. བི་. ༢-༢༧༢

ལྷོ་བ་གྲངས་-༢༥

ཡིག་གཞུགས་ནེའུ་རྒྱ་རྒྱུང་པ།

བལ་ཡུལ་ལོ་-༤༤༠

སློབ་དཔོན་འཛིག་དེན་མགོན་པོ་མཆོག་གི་སྐུ་སྒྲེར་དཔེ་མཛོད་དུ་བཞུགས་པའི་པར་
 བཤུས།

པོད་འགྱུར་—སྐ་དག་བཞུག་འགྱུར།

ཐུད་— ར། ལྷེབ་ ༢༥—༥༥

མཛད་པ་པོ་— དག་བའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པ།

ཆོས་ཚན་མང་— ༡༥༤༣

ཙ་བའི་མ་དཔེ་ཀ་པ་དང་ཁ་པ་གཉིས་སྐྱ་གཞུང་འདིའི་མཛད་པ་པོའི་མཚན་.....
 འཁྱུ་འཛོལ་དང་། མ་དཔེ་སྐྱ་བའི་ནང་དུ་ཞི་བ་འཛོལ། དེ་བཞིན་མ་དཔེ་ཀ་པ་དང་ངོད་
 འགྱུར་དུ་དག་བའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པ་གསལ་འདུག གསུང་རབ་འདིའི་ (ལྷེབ་ ༢༥)
 ནང་དུ་གཞུང་མཛད་པ་པོས་རང་གི་སྐྱ་བའི་གསུང་རྩི་ཆེ་སྤང་བའི་སྐོར་སྤང་བར་མཛད་.....
 འདུག་པ་དེ་ལྟར་གཞུང་མཛད་པ་པོའི་མཚན་དག་བའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པ་ཉིད་དུ་ཚད་....
 འཛོལ་བྱེད་འོས་པར་སྤང་། གང་གིས་ན་ཆོག་པས་པའི་ནལ་འབྱོར་གྱི་སྤང་བ་དང་རྩི་ཆེའི་
 སྤང་བ་ལྟ་བུའི་གཞུང་གལ་ཆེ་དག་མཛད་པོ་འཛིག་པས་མེད་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པའི་སྐོབ་མ་
 ནམས་ཀྱི་ནང་དག་བའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པའི་མཚན་ཡོངས་སྐྱ་གྲགས་པ་ཞིག་རེད།
 མཁས་དབང་འཛིག་པས་མེད་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པ་ནི་བརྒྱུ་འདི་བུལ་རྒྱལ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་.....
 དག་འཛོལ་གྱི་དུས་ (༡༠༤༥—༡༡༣༠) སྐྱ་ཞལ་བཞུགས་ཡོད་པ་ཞིག་རེད། དེས་ན་
 ཁོང་གི་དུས་ཚད་ནི་བརྒྱ་ཕྱག་བཅུ་གཅིག་པའི་མཇུག་དང་བཅུ་གཉིས་པའི་སྟོད་ཅམ་དུ་ཚད་
 འཛོལ་བྱས་ཡོད་པ་ལྟར་དག་བའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པའི་དུས་བརྒྱ་ཕྱག་བཅུ་གཉིས་པའི་....
 དཀྱིལ་ཅམ་དུ་ངས་གཏན་བྱ་འོས། ཞི་བ་འཛོལ་ནི་འཛིག་པས་མེད་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པ་ལས་
 སྐྱ་བའི་སྐོབ་དཔོན་ཡིན་པ་དང་། ཐུད་ཀྱི་བྱང་རབས་ནམས་སྐྱ་སྤྱུང་འདི་སྤྱིང་དུ་འབྲུངས་
 པའི་གྲུབ་པའི་སྤྱོད་སྤྱུ་ཞིག་གི་ཚལ་དུ་འཁྱུ་འཛོལ་མཚན་བྱང་འདུག་པ་གང་གི་ (མཚན་
 ཐོག་ནས་) གནས་ལ་སོགས་པ་གཏན་ལ་དབབ་པ་ཞེས་པའི་གཞུང་གཅིག་རང་ཉིད་འདུག
 དེས་ན་དེ་ཞིག་འཛིག་པས་མེད་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པའི་སྐོབ་མ་དག་བའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་
 པ་ཉིད་གཞུང་འདིའི་མཛད་པ་པོ་ཡིན་པར་ཐག་གཅོད་བྱའོ། །ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ནམ་

པར་གཏན་ལ་དབབ་པར་སྐྱབ་པའི་མཆོག་ཏུ་སློབ་དཔོན་ཡན་ལག་མེད་པའི་དོ་མཆོག་ཉིད་ཀྱི་
སྒྲ་མ་དགོ་པའི་འབྲུང་གནས་མཆོག་སྤྱད་པར་མཇོད་འདུག། དེས་པར་དུ་འདི་ཡང་དགོ་
པའི་འབྲུང་གནས་སྐྱས་པ་ལས་ཐ་དད་ཀྱི་སློབ་དཔོན་སྒྲ་མ་ཞིག་ཡིན་པར་མངོན།

རང་གི་གཞུང་ཆུང་ཏུ་འདིའི་ནང་ཚོམ་པ་པོས་རང་ཉིད་ཀྱི་སྒྲ་མ་འཛིགས་མེད་ཀྱི་
འབྲུང་གནས་སྐྱས་པའི་དོ་མཆོག་གི་སྤྱད་པར་མཇོད་འདུག་ (ལྷོ་བ ༤, ༡༣) དང་གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་
ཤུམ་པ་དུ་ (ལྷོ་བ ༣༠) དེ་བཞིན་ལྷོ་ཡི་པའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་དང་མཉམ་མངོན་ཀྱི་
རྟོགས་གཞན་མང་པོ་ (ལྷོ་བ་བརྒྱད་པར། མངོན་པར་རྟོགས་པ་མང་པོ་ལས།) ཞིག་གསལ་
པར་མཇོད་འདུག་པ་དེས་ན་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་པའི་ཚིག་དོན་སྒྲིམ་ཤེས་འདོད་ཀྱི་
བདེས། གསང་བ་འདུས་པ་ (༡/༣༠) དང་གཤམ་ཆེ་གཤམ་ནག་གི་ཆུད་ (༡༧/༣༣)
དུ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཚིག་མཉམ་དུ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ཚིག་ཀྱང་བྱང་འདུག། མཚན་ཡང་དག་
པར་བཞེད་པའི་འགྲེལ་པ་བདུད་ཅིའི་ཐིགས་པར་ (ལྷོ་བ ༣༣) འོད་གསལ་རྣམ་པ་མེད་
པའི་ཡེ་ཤེས་མངོན་སྲུང་དུ་བྱེད་པ་ལ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་གསུངས་འདུག་པ་འདི་
དག་ཐམས་ཅད་ལ་དེན་སྐྱབ་ཐབས་ཀྱི་ལམ་མཐོང་ལམ་ (བསྐྱེད་རིམ་) གྱི་ནམ་བཞག་
ཉིད་ལ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཞེས་པའི་དོན་དུ་བརྒྱུད་འོས་པར་རྣམ་པར་སྤྱོད་པར་སྤྱོད་པའི་དཔོན་ནམས་
ཀྱིས་གསུངས་པའི་སྐྱབ་ཐབས་ནམས་སྤྱོད་མངོན་རྟོགས་སྤྱོད་ཚུགས་སྤྱོད་རང་རང་གི་ཡི་དམ་གྱི་
སྤྱོད་མངོན་དུ་བྱ་ཆུང་དང་དེའི་ནམ་པར་འབྱུང་ཆུང་། བསྐྱེད་རིམ་གྱི་ཐབས་ཆུང་འདི་དག་
ཐམས་ཅད་གསུངས་ཡོད་པ་དག་ལ་བདེན་སྐྱབ་པ་པོས་ཡི་དམ་གྱི་སྤྱོད་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ་ཀྱི་
མཐར་དེ་དང་རྟོགས་པ་མཉམ་པར་གྱུར་བུ། གོང་གསལ་དཔེ་མཚན་ནམས་སྤྱོད་ཆུང་ཆུབ་
ཀྱི་ཚིག་མཉམ་དུ་བསྐྱེད་པའི་མངོན་རྟོགས་ཀྱི་ཚིག་ནམས་ཀྱིས་དོན་འདི་རང་བཞག་མེད་ཀྱི་
མཚན་ཡང་དག་པར་བཞེད་པའི་འགྲེལ་པར་སྤྱོད་ལམ་གྱི་སྤྱོད་པའི་ཐོབ་དུའི་འོད་གསལ་ཀྱི་
ཀྱི་ལམ་དང་དེའི་འབྲས་བུའི་དོན་དུ་འདི་ཚིག་འདི་རང་སྤྱོད་པར་བྱས་འདུག།

གོང་གསལ་ལག་གིས་མ་ནམས་ཉིད་ཐབས་སུ་སྤྱི་སྤྱོད་ཁག་ནས་ཕྱོགས་རམ་...
 གནང་ཡོད་པ་དག་གི་མཚན་གོང་དུ་ངེས་སྟོན་ཞུས་ཡོད་པ་ནམས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་སྟོང་...
 བཅངས་ཐོག་ གསུང་རབ་འདིའི་ལེགས་སྤྱད་དང་ངོད་དཔའི་དག་ཞུས་བྱེད་པོ་ནང་པའི་
 ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཆར་གཞིའི་ལས་བྱེད་པ་མཁས་དང་ནམས་...
 ཀྱི་མཚན་ཐོ་སྐབས་མཚམས་སོ་སོར་གསལ་ཡོད་པ་དག་ལ་འདྲ་ཐུགས་སྤྱད་ཆེན་པོས་དག་
 ཞུས་དང་ཞུ་སྤྱོད་ཀྱིས་དགོས་མཁོའི་ཁ་སློང་ལྟ་ན་ཐབས་ཀྱིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་ཏེ་དེ་བ་
 འདི་ཡན་ཐོགས་ཅི་ཆེར་ཡོང་ཐབས་ལ་འབད་ཚུལ་ཏུས་འདུག་པར་ཐུགས་ཇི་ཆེ་ཞུ་བྱུ་དང་།
 དཔར་སྤྱོད་ཞུ་ཕྱོགས་ཐད་ཤིལ་པར་ཁང་གི་འགན་འཛིན་པ་དང་ལས་བྱེད་ཆེ་སྤྱོད་ནམས་...
 ཀྱིས་ཀྱང་དོ་ཁྲར་ཆེན་པོས་མཐུན་གྲོགས་གནང་བར་ཐུགས་ཇི་ཆེ་ཞུ་བྱུ་བཅས་ལྷུ་དབུས་...
 བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་སྤྱལ་སྤྱོད་ཀྱི་ལོ་...

༡༩༩༡ ལྷ ༥ ཆེས་ ༦ ལ་བྲིས།

विषय-सूची

प्रस्तावना—हिन्दी, तिब्बती तथा अंग्रेजी	5-14
मङ्गलाचरणम्	1
वाग्विशुद्धिः	1
बलिमन्त्रविशुद्धिः	1
पञ्चस्कन्धानां पञ्चतथागतानां च वर्णनम्, वर्णमुद्रायुधादीनां चतुर्भूतस्वभावतानिर्देशः	2
चतुर्देवीनां वर्णयुधमुद्रादिनिरूपणम्	3
वीणादिषोडशदेवीनां स्वरूपनिर्देशः	3
सप्तविधानुत्तरपूजानन्तरं बोधिचित्तोत्पादपुरःसरं चतुर्ब्रह्मविहारभावना ग्राह्यग्राहकविशुद्धि- निर्देशश्च	4
आरसातलभूम्यधिष्ठानविधिः	5
काकास्यादि-यमदाढ्यादिदेवीचिन्तनम्	6
आकोटन-कीलनाभ्यां विघ्नवृन्दस्य महासुखेनैकीकरणम्	6
वज्र-चक्र-पद्मप्राकारचिन्तनम्	6
धर्मोदयामण्डले नैरात्म्यादेवीभावनम्	6
लूयीपादाभिसमयशून्यताभावनानन्तरं रक्षापञ्जरादिभावनाविधिः	8
त्रिचक्रेषु पीठस्थितानां डाकडाकिन्यादीनां स्वरूपनिर्देशः	9
लूयीपादोत्तरक्षाकवचस्वरूपम्	10
वाराह्यादिदेवीनां वैरोचनादिवुद्धानां च ध्यानप्रकारः	10
शून्यतान्तर्भावक्रमनिर्देशस्तेन युगनद्धसमाधिसाक्षात्कारश्च	12
जापविधानम्	12
भगवत्या अष्टपदपूजामन्त्राः	13
भगवत्या मालामन्त्रः	13
मन्त्रस्य सामर्थ्यनिर्देशः	14
लूयीपादाभिसमयक्रमेण प्रत्येकदेवीनां मन्त्राः	15
सप्तत्रिंशद्वोधिपाक्षिकस्वभावानां मण्डलनायिकानां वज्रावलीनिर्दिष्टस्वरूपनिरूपणम्	15
बोधिपाक्षिकधर्माणां मण्डलनायिकानां च स्वरूपनिरूपणम्	16
दशभूमिविशुद्ध्या कायमण्डलभावनाविधिः	17
कायमण्डलस्थितचतुर्विंशतिपीठेषु स्थितानां वीरेश्वरीणां निर्देशः	18
पीठादिषु तत्तत्स्थानगतनाडीनां तत्तद्देवतारूपेण परिणमनभावना	19

बलिप्रदानविधिः	19
सन्ध्यादिकालभेदेन विधिभेदनिर्देशः	20
बाह्यपूजाविधिः	21
हस्तपूजाविधिः	22
अध्यात्महोमनिरूपणम्	23
मध्यरुचीनां संक्षिप्तार्थिनां च कृते भावनाविधिः	24
श्रीवज्रघोणाक्रमनिर्देशः	25
जपविधानम्	26
स्वरूपभेदेन जापमन्त्रभेदः	27
पूजाभावनानिर्देशः	28
उपदेशगता पूर्वपूजा	28
सिद्धशबरपादीयवज्रयोगिन्याराधनविधिः	29
योगिनीनये स्थितस्य चर्यानियमाः	30
गुरुमहिमवर्णनं ग्रन्थकारनिवेदनं च	30
परिशिष्ट	31-44
उद्धृतग्रन्थ-ग्रन्थकारानुक्रमणी	31
श्लोकार्धसूची	32
विशिष्टशब्दानुक्रमणी	33
भोट खण्ड	45-94

अभिसमयमञ्जरी

¹ॐ नमो ²वज्रवाराह्यै

नमोऽस्तु वज्रयोगिन्यै शून्यताकरुणात्मने ।

बिभर्ति मूर्तिवैचित्र्यं यो जगद्भावभेदतः ॥

या संबोधिसुधासुधावनवशाद् वैशद्यविद्योतिता

शान्ताद्या तनुते विनेयजनता रागाद्वहिः शोणता ।

बिभ्राणा कुलिशं कपालममलं खट्वाङ्गमुग्रद्युति³

सेयं वज्रविरा(ला)सिनी भगवती भूयाद्विभूत्यै तव ॥

इह गुरुबुद्धयोरभिन्तश्रद्धः ⁴सुगृहीतबोधिचित्तः सम्यगासादिताभिषेको
मुक्त⁵कुण्डलकलापः पञ्चवटिकादिप्रयोगपरिशोधितवक्त्रो योगी क्वचित् श्मशान-
पर्वतादिदेशे सुखासनोपविष्टः साक्षाच्छवोपविष्टो वा ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द
ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष हुं हुं फट्—इत्यालिकालिपङ्क्ति-
स्फुरट(त्)पञ्चरश्मिकां त्रिरुच्चार्य परिवेष्ट्य स्थितां स्फुरन्⁶(त्)त्रिचक्रदेवता-
वृन्द⁷मर्दितविघ्नवृन्दां⁸ भावयेत् । इति वाग्विशुद्धिः ।

विशुद्धिस्कन्धादिसमुत्थः(त्थं) पूजादिकं बोधेः शीघ्रकारणं भवतीति
स्कन्धादिविशुद्धिमधिमुञ्चेत् । तत्र रूपादिषु विज्ञानपर्यन्तेषु फेनबुद्बुदमरीचिकदली-
मायोपमत्वेन ⁹निश्चेयो(या) वैरोचनादयः । तथतायामक्षोभ्यः । यद्वा वैरोचनादि-
देवताधिमोक्ष एव तेषां ¹⁰विशुद्धिः । ¹¹दशदिग्लोकधातुस्था वीरयोगिन्याकर्षयेत् ।

1. 'ॐ' नास्ति ग. घ. । 2. श्रीवज्र-भो. । 3. ज्योतिः-क. ख । 4. संगृहीत-क. । 5. कुण्डल-
ख. ग. । 6. स्फुरन्ति चक्र-क. ख. ग. घ., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । 7. वृन्दं-क. ख. ग. । 8. वृन्दा-
क. ख. ग. । 9. निश्चयो-क. । 10. 'विशुद्धिः' नास्ति-ख. । 11. 'दशदिग्लोक'.....'वल्लिमन्त्रविशुद्धिः'
नास्ति- ग. घ. भो. ।

ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहम् । ॐ आः अरल्लि होः जः हुं वं हो वज्र-
डाकिनी समयस्त्वं दृश्य होः वज्राञ्जल्या ऊर्ध्वविकचमुद्रया वलि दद्यात्
निशाधंके^१ । ॐ ख ख खाहि खाहि सर्वयक्षराक्षसभूतप्रेतपिशाचोन्मादा[पस्मा]र-
डाकडाकिन्यादय^२ इमं वलि गृह्णन्तु समयं रक्षन्तु भुजर्थं पिबर्थं जिघ्रर्थं माति-
क्रमथ मम सर्वाकारज्ञतया^३ सर्वसु[ख]विवृद्धये सहायका भवन्तु हुं हुं फट् फट्
स्वाहा । वलिमन्त्रविशुद्धिः ।

तत्र रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानेषु वैरोचनरत्नसम्भवामिताभामोघसिद्धि-
वज्रसत्त्वाः । रूपादितथतायामक्षोभ्यः । सितपीतरक्तहरितशुक्लकृष्ण[ः]^४ षडेते
वर्णतो बोद्धव्याः । वैरोचन[ः] चक्रोद्यतदक्षिणकरो घण्टायुत^५ सगर्भकटिस्थवामकरः ।
रत्नसंभवामिताभामोघसिद्धयो^६ रत्नरक्तपद्मविश्ववज्रोद्यतसलीलदक्षिणभुजा
घण्टाकटिस्थ^७ वामकराः । वज्रसत्त्वो वज्रधारी सलीलहृद्गतदक्षिणकरः, घण्टायुत-
सगर्व(र्भ)कटिस्थ^८ वामकरः । अक्षोभ्यवज्र[ः]^९ सवज्रभूस्पर्शमुद्रान्वितदक्षिणकरः,
घण्टान्वितसगर्व(र्भ)कटिस्थवामकरः । चक्षुःश्रोत(त्र)घ्राणवक्त्रस्पर्शेषु मोहवज्र-
द्वेषवज्रईर्ष्यावज्ररागवज्रमात्सर्यवज्राः, क्षितिगर्भवज्रपाणिखगर्भलोकेश्वरसर्वणी-
(नी)वरणविष्कम्भीनामान्तराः, शुक्लकृष्णपीतरक्तश्याम^{१०} वर्णाः । सर्वा-
यतनेष्वैश्वर्यवज्रः समन्तभद्रनामान्तरः शुक्लः । मोहवज्रश्चक्रोद्यतदक्षिणकरः,
सलीलघण्टान्वितहृद्गतवामकरः । द्वेषवज्रः सवज्रहृद्गतदक्षिणकरः, घण्टान्वित-
सगर्व(र्भ)कटिस्थवामकरः । ईर्ष्यावज्ररागवज्रमात्सर्यवज्राः क्रमशो रत्न^{११} रक्त-
पद्मविश्ववज्रोद्यतसलीलदक्षिणभुजाः, घण्टान्वितसलीलहृद्गतवामकरः(राः) ।
ऐश्वर्यवज्रस्तु सवज्रहृद्गतदक्षिणकरः, घटान्वितसगर्भकटिस्थवामकरः । तत्र

1. धिको-ख. । 2. इमां-ख. । 3. सततख-क. । 4. एते-क. भो., षट् ते-ख. ।

5. 'सगर्भ' इति भोटपाठे, अत्राऽपि सगर्भपदं क्वापि नास्ति । 6. 'रत्न' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

7. स्था-क. ख, हृद्गत-भो. । 8. स्था-क. । 9. सत्त्व-क. । 10. 'रक्त' इत्यधिकः पाठः-क. ख. ग. घ. ।

11. रक्ष-क., वज्र-ख. ।

मोहविनाशनाद् मोहवज्रः, द्वेषद्वेषणाद् द्वेषवज्रः, ईर्ष्यासर्वासङ्गमात्सर्गविनाशा-
दीर्ष्यावज्रादयस्त्रयः । सर्वैश्वर्यदानादैश्वर्यवज्रः, [एते] पृथिव्यप्तेजोवायुधातु-
^१विशुद्धस्वभावाः ।

पातनी-मारणी-आकर्षणी-नर्तेश्वर्यः पीतकृष्णरक्तहरितवर्णा ^२एकवक्त्रा-
श्चतुर्भुजाः । चक्रकृति-वज्रकृति-^३पद्मकृति-खड्गकृति^४धारिदक्षिणभुजद्वयोः(याः),
कपालखट्वाङ्गधारिवामभुजद्वयोः(याः) । रो(लो)चना-मामकी-पाण्डरा-ताराख्या
आकाशधातुस्वभावाः । पद्मजालिनी^५धूम्रवर्णा धूम्रशुक्लरक्तत्रिमुखा षड्भुजा कपाल-
खट्वाङ्गपाशधारी(रि)वामभुजत्रयो(या), अङ्कुशब्रह्ममुण्डकृतिभूषितदक्षिण^६भुज-
त्रयो(या), धर्मधातुवज्रस्वभावा । तत्र पातन्यादयो नामानुरूपकर्मप्रसाधिकाः ।
वैरोचनादय आलीढ^७पदा जटामुकुटिनस्त्रिनेत्राः पञ्चमुद्रिणः । देव्यो मुक्तकेश्यो
नग्ना आलीढ^८पदास्त्रिनेत्राः पञ्चमुद्राः ।

ततः स्वहृदन्ते^९ शुषिरे ^{१०}रंकारबीजनिर्जातरविमण्डलस्थरक्तवंकारं दृष्ट्वा
तत्किरणैरन्तः^{११}कल्मषमपास्य प्रतिरोमविवरविनि^{१२}गंतैर्वक्ष्यमाणं भगवतीमण्डल-
चक्रं गुरुबुद्धबोधिसत्त्वांश्चाकृष्यानीय ^{१३}नभसि पुरतो विभाव्य वन्दित्वा बीजरश्मि-
विस्फारित^{१४}वीणादिषोडशदेवीभिरर्चयेत्^{१५} । तत्र वीणा वंशा मृदङ्गा मुरजा^{१६} एक-
वक्त्राश्चतुर्भुजा नीलपीतरक्तहरिताः^{१७} स्वस्ववाद्यवादनतत्पराः प्रधानभुजद्वयोः(या),
वज्र-वज्रघण्टाधराऽपरभुजद्वयोः(याः) । हास्या लास्या गीता नृत्या एकमुखाश्चतुर्भुजा
अरुणनीलपीतहरिताः । हास्या ^{१८}लास्याभिनये प्रधानकरद्वयोः(या) । ^{१९}लास्या वज्र-
वज्रघण्टाधारिसगर्व(र्भ)^{२०}लास्याभिनयप्रधानभुजद्वयोः(या) । गीता कंसीकाधारि-

1. 'विशुद्ध' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. 'एक' भुजाः' नास्ति-भो. । 3. 'पद्मकृति'
नास्ति-क. ख. । 4. धारिणं-ख., 'दक्षि' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. ज्वालिनी-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
6. दक्षिणकरे-भो. । 7-8. आलीढ-प्रत्यालीढ-भो. । 9. दन्त-क. ख. ग. । 10. 'रंकार' नास्ति-
क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. कल्मषमयं सूर्य-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. गंतवरै-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
13. तमसि-क. । 14. विस्फुरित-क. । 15. रर्चेत्-ख. । 16. मुरजा-क. ख. । 17. तवर्णाः-भो. ।
18. 'लास्या' नास्ति-भो. । 19. करादयो-क. । 20. 'लास्याभिनय' नास्ति-भो. ।

प्रधानभुजद्वयोः(या) । नृत्या कमलाभिनयप्रधानभुजद्वयोः(या) । आसामन्यदक्षिणेतर-
भुजयोः कपालखट्वाङ्गाः^१ । पुष्पा धूपा दीपा गन्धा श्वेतधूम्रदीपशिखाभरक्त-
वर्णाः, चतुर्भुजैकवक्त्राः । आसां प्रधानैकभुजे पुष्पधूपकटच्छुदीपयष्टि^२गन्धशङ्ख-
धराः,^३ इतरभुजत्रयेषु डमरुकपालखट्वाङ्गानि । आदर्शा रसा स्पर्शा धर्मा
^४श्वेतरक्तहरितधवलाश्चतुर्भुजैकमुखाः प्रधानैकभुजेन दर्पणरसपात्रविश्व^५वज्रधर्मो-
दयधराः, इतरभुजत्रयेषु डमरुकपालखट्वाङ्गानि ।

तदनु वक्ष्यमाणाष्टपदमन्त्रैरभिस्तुत्य^६ पापदेशना-पुण्यानुमोदना-निर्वाण-
काम[ना]-जिनचिरस्थिति-अर्थाध्येषणा-धर्मचक्रप्रवृत्त्यर्थ^७बुद्धयाचना-स्वपुण्यपरिणा-
मना चेति सप्तविधानुत्तरपूजां कृत्वा रत्नत्रयशरणगमन-जिनमार्गाश्रयण-आत्मभाव-^८
निर्यातन-बोधिचित्तोत्पादपुरःसरं ^९सर्वसत्त्वानामेकपुत्रवत्तथैवैकरसमहासुख-
संयोजनां वाञ्छात्मिकां मैत्रीम्, दुःखोद्धरणकामेणा(कामना)कारां करुणाम्, उत्पन्न-
कुशलमूलभोगैश्वर्यादिष्ववियोगेच्छास्वभावां मुदिताम्, सर्वत्र प्रतिघानुनयरहित-
धर्मतायां स्वरसवाहितयो^{१०}(या) प्रवृत्तिलक्षणामुपेक्षां च भावयित्वोपार्जितपुण्य-
संभारो ज्ञानसंभाराभिवृद्धये ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहमित्यर्था-
भिमुखीकरणपूर्वकं पठेत् ।

अत्र स्वभावशुद्धाः सर्वधर्मा इति ग्राह्यविशुद्धिः, स्वभावशुद्धोऽहमिति
ग्राहकविशुद्धिः,

मायां विधाय मायावी यदा संहरते पुनः ।

ना(न) किञ्चिद् विद्यते तत्र धर्माणां सा हि धर्मता ॥

-
1. खट्वाङ्गधारि-भो. । 2. सुगन्ध-क. । 3. 'धराः' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
4. श्वेतक-ख. ग. घ. । 5. वस्त्र-ग. घ. भो. । 6. तुम्यं-क., तुम्य-ख. । 7. 'बुद्ध' नास्ति-भो. ।
8. तमकाय-भो. । 9. 'सर्व' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. 'परहितया धर्मतायां बलेन'
इत्यधिकम्-भो. ।

इति प्रवचनात् । त्रैधातुकमा^१मन्त्रितमण्डलचक्रं च प्रतिभासमात्र^२स्वभावं प्रभास्वर एव प्रवेश्य, आत्मानं च रवी, तं वंकारे, ^३तमर्द्धचन्द्रं(न्द्रे), तं बिन्दौ, तं नादे, तद्विकल्पमपि ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहमित्यर्थानु^४स्मरणो(णेनो)च्चार्य त्यजेत् । शून्यताज्ञानमेवाभेद्यत्वाद् वज्रम्, तस्य स्वभावस्तदात्मको^५ऽहमित्यर्थः । ततः पूर्वप्रणि^६धाना^७वेधवशात् शून्यतासमाधेव्यु(व्यु)त्थाय स्वचित्तमेवोपर्युपरि यं रं वं लं परिणतधनुस्त्रिकोणवर्तुलचतुरस्राकारनीलरक्तश्वेतपीतवर्णचलत्पताकाङ्क-कोटिद्वयज्वालाकं ^८घण्टाकं कोणचतुष्टयं वायुवह्निवरुणक्षितिमण्डलस्वभावं विचिन्त्य तदुपरि ^९सुंकारसमुद्भवं चतुरस्रमष्टशृङ्गो(ङ्गं) पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तर-पार्श्वेषु रूप्यवैडूर्यस्फटिकसुवर्णमयं सुमेरुं ध्यात्वा ततः ॐ सुम्भ निसुम्भ ^{१०}हुं हुं फट् । ॐ गृल्ल गृल्ल हुं हुं^{११} फट् । ॐ गृल्लापय २ हुं हुं^{१२} फट् । ॐ आनय हो भगवन् विद्याराज हुं हुं^{१३} फट् । इति चतुरो मन्त्रान् वामतर्जन्यङ्गुष्ठे छोटिका-दानपूर्वकमुत्सार्य कृष्णहरितरक्तपीतवर्णान् ब्रह्माण्डरसातलव्यापिज्वलन्महाकायान् पूर्वोत्तरपश्चिमदक्षिणासु दिक्षु क्रमेण सुम्भादिमन्त्ररश्मिभिर्यावदिच्छाविस्तरान् चतुरो वज्रप्राकारान् ॐ वज्रप्राकार ^{१४}हुं वं हुं इत्युच्चार्य निवेशयेत् । तत्समकाल-मेव ^{१५}हुंकारज^{१६}तदधिष्ठितविश्ववज्रेण ॐ मेदिनी वज्रीभव वज्रबन्ध हुं^{१७} इति पठित्वा विश्ववज्रमयीं भूमिमा रसातलपर्यन्तामधितिष्ठेत् ।

ततः वज्ररश्मि ॐ वज्रशर^{१८}ज्वल त्रं सं त्रं इत्यभिधाय पञ्चशूकवज्रा-कारमतिनिबिडमुपरि शरजालम्, तस्याधो वज्रपञ्जर ^{१९}हुं वं हुं इत्युच्चार्य वज्र-पञ्जरम्, ॐ वज्रवितान ^{२०}हुं खं हुं ^{२१}इत्युच्चार्य यथास्थानं वज्रवितानम्, ॐ

1. मातीत-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. मात्रेण-क. ख. । 3. वम-भो. । 4. त् गमनो-क., नुगमनो-ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. तदात्मस्वभावको-भो. । 6. धानां-ख. । 7. बल-भो. । 8. घटाकं त्रिशूक-वज्रं-भो. । 9. सुं-क. ख. ग. घ. । 10-13. हुं हुं-सर्वत्र दीर्घः-क., हुं हुं-सर्वत्र ह्रस्वः-ख. ग. घ. । 14. हुं वं हुं-ग. घ., हुं वं हुं-ख. । 15. हुं-क. ख. ग. घ. । 16. जगद-क. । 17. हुं-भो. । 18. जाल त्रं शं त्रं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. हुं वं हुं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 20. हुं खं हुं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 21. इति पाठान्तरं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

वज्रज्वालानलार्क ^१हूं हूं हूं इत्युक्त्वा वज्रज्वालां च चिन्तयेत् । तदनु ^२सुम्भादिमन्त्रचतुष्टये निष्पन्नाः काकास्यादिचतस्रो देवीस्तदेवोभयमन्त्र ^३रश्मिसंभूता यमदाढ्यादिचतस्रो देवीश्चिन्तयेत् ^४ । एता द्विभुजा एकवक्त्रा नाभेरधः शूलाकारा दक्षिणे ^५वज्रमुद्गरधारिण्यो वामे आत्मरूपकीलकहस्तो(स्ताः) स्फरणयोगेन गत्वा दशदिग(ग्)तविघ्नवृन्दमानीय दीर्घनादोच्चारितहुंकारनिष्पन्नेषु ^६वज्रप्राकार-बाह्येषु समीपे दिग्विदिगस्तु(दिक्षु) कूपेषु प्रवेश्य ॐ घ घ घाटय घाटय सर्वदुष्टान् फट् फट् ^७कीलय कीलय सर्वपापान् ^८फट् फट् ^९हूं हूं हूं वज्रं कीलय वज्रधर आज्ञापयति सर्वविघ्नान् कायवाक्चित्तवज्रं कीलय कीलय ^{१०}हुं फट्, इति कीलनमन्त्रोच्चारणपूर्वकं कीलयन्ति । ॐ वज्रमुद्गरवज्रकीलमा ^{११}कोटय ^{१२}हुं फट् इत्याकोटनमन्त्रोच्चारण-पूर्वकमाकोटयन्ति । आकोटनकीलनाभ्यां विघ्नवृन्दमहासुखेन तथैकरूपं कुर्वन्तीं भावयेत् ।

पुनः शेषविघ्नानुत्सार्य प्राकारेषु लीयमानासु तासु तोये तोयास्फरण-बिन्दुनिर्गमन्यायेन सोमाबन्धार्थं वर्तुलान् वज्रपद्मचक्रप्राकारान् चिन्तयेत् । तदेवं वज्रप्राकारादिविघ्नोत्सारणविशुद्ध्या ^{१३}निःसन्ध्यैकखण्डीभूतं निर्विघ्नं च जगद् ^{१४}गधिमुञ्च्य ^{१५}वज्र ^{१६}पञ्जरमध्ये धर्मधातुस्वभावां धर्मोदयामे ^{१७}कारामुपरिविशालामधः सूक्ष्मां विचिन्त्य तन्मध्ये विश्वाब्ज ^{१८}विश्ववज्रस्थ ^{१९}हुं ज स विद्या ^{२०}वैरोचनात्मकं कूटागारं तथागतपृथग्जनयोस्तथैकरूपत्वेन वैधर्म्यो(र्म्या)ऽभावाच्चतुरस्रं स्मृत्युप-स्थानं सम्यक्प्रहाणं ऋद्धिपाद[म्] इन्द्रियविशुद्ध्या चतुर्द्वारम्, अष्टाङ्गमार्गविशुद्ध्या अष्टस्तम्भोपशोभितां(तं) शूरङ्गमगगनगञ्जविमलमुद्रसिंहविक्रीडितसमाधिचतुष्टय-

-
1. हूं हूं हूं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. सुम्भनी आदि-भो. । 3. भयोभयरश्मि-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. 'चिन्तयेत्' नास्ति-भो. । 5. 'वज्र' नास्ति-क. ख. । 6. 'वज्र' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7-8. फट्-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. हूं हूं हूं-क. ख. ग. घ. गृ. भो. । 10. हूं-भो. । 11. कीलाकोटय-ख. ग. घ., या कोटय-भो. । 12. हूं-भो. । 13. विशुद्धानि मध्यैक-क. । 14. सर्वगः-भो. । 15. मुच्य ग. घ. । 16. वज्रप्राकार-भो. । 17. दयाकारा-भो. । 18. 'विश्व' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. भ्रू-भो. । 20. सविद्य-क. ग. घ., सविश्व-ख. ।

विशुद्ध्या ¹चतुर्देवीपरिक्षिप्तम्, ध्यानचतुष्टयविशुद्ध्या चतुस्तोरणमण्डितम्, सप्तसंबो-
ध्यङ्गविशुद्ध्या हारार्धहारचन्द्रार्कपताकादर्शचामर²विभूषितम्, संक्षेपेण तत्तु(तद्)-
बुद्धगुणविशुद्ध्या तल्लक्षणोपेतम्³ । तस्य नाभौ अष्टलोकधर्म⁴तामुपलक्षयेद् विशुद्ध्या
⁵रक्तपङ्कजकारजाष्टदलकमलकर्णिकायाम् अविद्यान्धकारविधमनविशुद्ध्या⁶ सूर्यमण्डले
द्विगुणालिपरिणता⁷दर्शज्ञानस्वभावचन्द्र⁸मण्डलं ड ढ द ध य लोपेतद्विगुणकालि-
परिणतसमताज्ञानस्वभावसूर्य⁹मण्डलयोर्मेलापकमहासुखं संपुटमध्यरक्त¹⁰पङ्कारज-
वज्र¹¹मुष्ट्यन्तर्गतभानुस्थ¹²वंबीजं प्रत्यवेक्षणा¹³ज्ञानस्वभावं तन्निमित्तरश्मिना
स्फुरित्वा दशदिक्षु भगवत्याकारेण सत्त्वार्थं कृत्वा पुनस्तत्रैव संहरणं कृत्या-
नुष्ठानज्ञानम्¹⁴ । एतत् सर्वपरिणामेनात्मानं भगवतीं वज्रवाराहीं सुविशुद्ध-
धर्मधातु¹⁵ज्ञानस्वभावं महारागविशुद्ध्या दाडिभीकुसुमसंकाशं सत्यद्वयविशुद्ध्या
भुजद्वयोः, दक्षिणेन प्रसृतोर्ध्वतर्जनिकया दुष्टतर्जनिकया(?) दुष्टतर्जनपरेण समरसी-
भूत¹⁶पञ्चज्ञानविशुद्ध्यारुणवज्रधरां¹⁷वामेनाध एकशूकोर्ध्वं कृष्णपञ्चशूका-
न्वित¹⁸दण्डानुगतशुष्कं सार्द्धं शिरो विश्ववज्रकनककलशमूलविनिर्गतरणत्सूक्ष्मघण्टि-
कान्वितविश्वपताकाविराजितोपायस्वभावबाहुदण्डा¹⁹सक्त²⁰शुक्लखट्वाङ्गमहासुख-
महाकरुणारसमयासृक्पूर्णकपालं च विभ्रतीं मिथ्या दृष्टिप्रहाणा²¹विकृतैकाननां
चतुर्मारविनाशनाद् दंष्ट्रोत्कटभीषणां कायवाक्चित्तविशुद्धकृपारक्तनेत्रत्रयाम् ।
अद्वैततत्त्वस्य चतुरशीतिसाहस्रधर्मस्कन्धै²²विकिरणविशुद्धये²³(द्ध्या) मुक्तकेशीं
चक्रिकुण्डलकण्ठिकारुचकखट्वाङ्गमेखलाख्याः(ख्य)पञ्चमुद्राधराम् ।

1. कामगुणचतुष्पटचतुर्देवी-भो., चतुर्वेदी-ख. ग. घ. । 2. 'विभूषितं' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. पेत-क. ख. घ. । 4. धर्मलसि-भो. । 5. रक्ष-क. ख. । 6. विशुद्धा-ख. । 7. तादर्शनज्ञा-क. ख. । 8-9. 'मण्डलं' नास्ति क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. पङ्कार-भो. । 11. वज्रनाभेरन्त-भो. । 12. 'वं' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. 'ज्ञान' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 14. 'ज्ञानम्' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 15. 'धर्मधातु' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. 'पञ्च' नास्ति-भो. । 17. 'वामेन' नास्ति-भो. । 18. सित-क. ख. ग., वितं-घ. । 19. शक्र-क. । 20. 'शुक्ल' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 21. हाणवि-क. । 22. विनिर्देशेन-भो. । 23. द्वयो-ख. ग. घ. ।

कण्ठिकारुचककुण्डलानि शिरोमणिविभूषिताम् ।

यज्ञोपवीतं^१ भस्मेति मुद्राषट्कं प्रकीर्तितम् ॥

इति केचित्^२ । मण्डलनायिकात्वेन षण्मुद्रितामित्येके । दिगम्बरां नवयौवनशालिनी[म्] आलिकालिपञ्चाशदक्षरस्वभावां ग्रन्थित^३ सार्द्रनरशिरो-मालिनीं शून्यतालीढजगच्छू(त्सू)चकत्वेन वामपादेनाकुञ्च्य दक्षिणं पञ्चवितस्ति-प्रसारणादालीढेना^४क्रान्तरक्ता^५ष्टपत्रपद्मस्थसूर्यमण्डलोपरि पतितशाश्वतोच्छेद-विकल्पस्वभावभैरवकालरात्री(त्रि)म्,^६ सुविशुद्धज्ञाना^७लोकयोगात् सूर्यप्रभा-मण्डलिनीम्, शून्यतारूपतया जगदनुपलम्भसाम्यान्महातेजसम्, रजोयोगात् स्रवन्तीं करकलितकपालगलदसृक्पानप्रसङ्गाद्रुधिरप्रियां वज्रावलीद्वयमध्याकृत-पञ्चतथागतात्मककपालमालाबद्धत्रिशिखां विश्वानुग्राहकत्वेन विश्ववज्राक्रान्तमौलीं सर्वलोकधातुसंग्राहकते(त्वे)न चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायमनआलयविलष्टमनोविज्ञान-मित्यष्टविज्ञानं(नां) नैरात्म्यास्वरूपत्वेन श्मशानाष्टकमध्यवर्तिनीं भावयेत् ।

यत्तु लूयीपादाभिसमये रक्षावज्र^८पञ्जरादेरनन्तरं शून्यताभावनोक्ता, तदधिमात्रप्रज्ञाधिकारात् । तस्य शून्यतैव परं रक्षेति । सर्वजनसंग्रहणैः पुनरत्र शून्यताभावनानन्तरं रक्षापञ्जरादिकमुक्तम्, बहुषु चाभिसमयेष्वियमेवानुपूर्वी दृश्यत इति । पूर्वादिदलेषु चतुर्षु वामावर्तेन यथाक्रमं डाकिनी-लामा-खण्डरोहा-रूपिण्यः । कृष्णश्यामरक्तगौरा^९ एकवक्त्राश्चतुर्भुजा वामे खट्वाङ्ग-कपालधराः । दक्षिणे डमरुर्कतिधारिण्यस्त्रिनेत्रा दंष्ट्राकरालवदना मुक्तकेश्यो नगना आलीढपदाः पञ्चमुद्राधरा गलन्मुण्डमालिन्यो वज्रमालाङ्कललाट^{१०}-मेखलाः सराव^{११}घुंगुरादिविभूषिता भावनीयाः । आग्नेयादि^{१२}विदिग्दलेषु दक्षिणावर्तेन बोधिचित्तेन रजसा पञ्चामृतैः पञ्चप्रदीपैः सिद्धरसवद-

1. पवीतिन-ग. घ. । 2. 'केचित्' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. शतार्द्र-क. ख. ।

4. लीढाभिनयेन-भो., ढेता-क. । 5. रक्षा-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. रात्रीकां-क., रात्रिकां-ग. घ. ।

7. जाता-क. । 8. 'वज्र' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. पीत-भो. । 10. कंकलाट-क., ललाटा-

ग. घ. । 11. घुंगुरा-ख. ग. घ. । 12. दिग्दलेषु-क., विदिग्चतुर्दलेषु-भो. ।

मृतीभूतैः ^१परिपूर्णानि चत्वारि पद्म^२भाजनानि भाव्यानि ।

तद्वहिर्नोलवज्जावलीवा(व)लयितनीलाष्टारप्रथमचित्तचक्रस्य पूर्वोत्तरपश्चिम-
दक्षिणारेषु^३ पुल्लोरमलय-जालन्धर-ओडियानाबुदपीठस्वभावेषु प्रचण्डाचण्डाक्षीप्रभा-
^४वतीमहानासाः । आग्नेयनैऋतिवायव्यैशानेषु गोदावरी-रामेश्वर-देवीकोट्ट-मालव-^५
पीठात्मकेषूपपीठेषु वीरमती-खर्वरी-लङ्केश्वरी-द्रुमछा(च्छा)याः । रक्तपद्मावलीपरि-
वृत^६ रक्ताष्टारद्वितीयवाक्चक्रस्य पूर्वोत्तरारयोः कामरूपौड्रक्षेत्रयोरैरावती महाभैरवा^७,
पश्चिमदक्षिणयोस्त्रिशकुनि-कोशलोपक्षेत्रात्मना(नो)र्वायुवेगा सुराभक्षौः(क्षी) ।
आग्नेयनैऋत्ययोः कलिङ्ग-लम्पाकछन्दोहयोः श्यामादेवी सुभद्रा । वायव्यैशा-
नयोः काञ्चीहिमालयोपछन्दोहयोर्हयकर्णा खगानना । शुक्लचक्रा^८वलीपरिवेष्टित-
शुक्लाष्टारतृतीयकायचक्रस्य पूर्वोत्तरारयोः प्रेतपुरीगृहदेवतामेलापकयोश्चक्रवेगा
खण्डरोहा । पश्चिमदक्षिणयोः सौराष्ट्रसुवर्णद्वीपोपमेलापकयोः शौण्डिनीचक्रवर्मिण्यौ ।
आग्नेयनैऋत्ययोर्नगरसिन्धु^९श्मशानयो^{१०}मंसकुलूतयो^{११}रूपश्मशानयोश्चक्रवर्तिनी महा-
वीर्या । एताश्च प्रचण्डादिदेव्य ^{१२}एकवक्त्रा द्विभुजाः, वामेन रक्तपूर्णकपालं
दक्षिणे दुष्टतर्जनकर्तिकां^{१३} विभर्त्यः । अपरं वेशाभरणादिकं डाकिन्यादिवदासाम् ।
द्वारे काकास्या-उलूकास्या-श्वानास्या-शूकरास्या डाकिन्यादिवत् । मुखानि^{१४}
परमासां नामानुगतानि । कोणेषु यमदाढी-यमदूती-यमदंष्ट्रिणी-यममथन्यो मानुषी-
मुखाः सव्येतरदिग्देव्यः सव्येतरकायार्धसदृशशरीरार्धाः^{१५} । शवासनास्व(स्त्व)^{१६}ष्टाव-
पीमाः । परिशिष्टवेशादिकं डाकिन्या[दि]वदेव । सर्वाश्च ता देव्यो भगवतीनिष्पत्ति-
समकालमेव झटिति निष्पन्ना द्रष्टव्याः ।

-
1. 'परि' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. भांजन-क. घ. । 3. दक्षिणेषु-क., णासु-ख.
ग. घ., गृ. भो. । 4. मती-क. ख. । 5. लवोपपीठात्मकेषु-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. वृत्ता-क. ।
7. भैरवो-क. ख. घ. । 8. वज्जा-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. सिंदुर-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
10. मेरुकुलत-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. 'उप' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. 'एकवक्त्रा'
नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. काभर्त्यः-क. ख. । 14. मुखादि-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
15. रार्धः-क. ख. । 16. स्ताव-ग. घ. ।

ततः कवचद्वयं कृत्वा ज्ञानचक्र^१विभावनमिति लूयीपादोत्तरक्षाकवचं
 कुर्यात् । भ्रूँ हँ खँ अः^२ हाँ ह^३कारैरायतनानि संशोध्य वाराही-यामिनी-
 मोहनी-सञ्चारिनी(णी)-संत्राशि(सि)नी-चण्डिकानां षष्ठ(ङ्)देवीनां मन्त्रैः स्वस्व-
 देवता^४वन्नैरात्म्येन^५ कवचयेत् । ॐ वं नाभौ । ^६हां यां हृदि । ^७ह्रीं मों
 वक्त्रे । ^८हें ह्रीं मूर्ध्नि । हूँ हूँ शिखायाम् । फट् फट् सर्वाङ्गेष्वस्त्रे । अथवा
 मन्त्रदेवतयोर^९भेदात् तत्तन्मनसि निष्पन्नास्तेषु तेषु^{१०} स्थानेषु त[त्त]देवता एव
 भाव्याः । तत्र वाराही रक्तनीलहरितमुखी वामे कपालखट्वाङ्गपाश(शान्),
 दक्षिणेऽङ्कुशब्रह्ममुण्डकर्ति(र्तीः) बिभ्राणा । यामिनी-मोहनी-सञ्चारिणी-संत्राशि-
 (सि)नी-चण्डिका नीलसितपीतहरितधूम्र^{११}वर्णश्चतुर्भुजाः सकपालखट्वाङ्गघण्टाश्च
 वामे, दक्षिणे डमरुकर्तिका दधानाः । सर्वाश्च मुक्तकेश्यो नग्नास्त्रिनेत्रा आली-
 ढासनस्था द्रष्टव्याः । तदनु ललाटकण्ठहृदयेषु ॐ आः ^{१२}हूँ इत्यक्षराणि शुक्लरक्त-
 नीला[नि] निवेशयेत् । ततो हृन्मध्यवर्तिरक्ताष्ट^{१३}दलपद्मस्थितभानुमण्डलोपरि
 रक्तवज्रवरटकान्तर्गतरविस्थं वंबीजरश्मिर्दशदिग्वर्ति सर्व^{१४}वीरवीरेश्वरी^{१५}परिणत-
 रूपं ज्ञानचक्रं जःकारेणाकृष्य ^{१६}तन्निर्गतवीणादिषोडशदेवीभिरर्धादिपुरःसरं पूज-
 यित्वा फेंकार^{१७}पाठपूर्वकं ^{१८}जालामुद्रां बद्ध्वा ललाटे वामावर्तेन भ्रामयेत् ।
^{१९}हूँकारेण ^{२०}स्वसमयचक्रे जले जलमिव प्रवेश्य वंकारेण बन्धयित्वा होःकारेण
 संतोष्य ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति पठेत् । ज्ञानचक्रा^{२१}कर्षण-
^{२२}समकालमेवाकृष्टाभिर्वज्रविलासिनीभिर्ज्ञानामृतपूर्णकपालडमरुधारिणीभिर्हृद्बीजनि-
 र्गतवीणादिदेवोपूजिताभिः—

1. भावनं-भो. । 2-3. आँ-हां-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. वर्णवन्नै-भो. । 5. भाव-
 येत्-क. । 6. हँ यों-भो. । 7. ह्रीं-भो. । 8. हें हिं-भो. । 9. 'अभेदात्'... 'मनसि' नास्ति-भो. ।
 10. 'तेषु' नास्ति-घ. । 11. धूम्रधूसरवर्णा-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. हूँ-भो. । 13. मण्डल-क. ख. ।
 14. 'वीर' नास्ति-भो. । 15. संहर्त्-भो. । 16. 'तन्निर्गत' नास्ति-भो. । 17. फेंकारनादत्-क. ख. ग. घ.,
 गृ. भो. । 18. ज्वाला-क. । 19. हूँ-भो. । 20. 'स्व' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 21. 'आकर्षण'
 नास्ति-भो. । 22. समय-घ. ।

यथा हि जातमात्रेण स्नापिताः सर्वतथागताः ।

तथाहं स्नापयिष्यामि शुद्धं दिव्येन वारिणा ॥

इति पठन्तीभिरीषदावर्जितवामकरकपालोद्भूत^१ज्ञानामृतधाराभिरभिषिच्य-
मानमहासुखात्मानं विचिन्त्य^२ शेषाम्बुनिष्पन्नान् तथागतान् शिरसि
विभाव्य ॐ सर्वतथागताभिषेकतः^३ समयश्रिये हूँ इत्यधितिष्ठेत् । तत्र भगवत्याः
कुलेशः शिरसि वैरोचनः, डाकिन्यादीनां रत्नसंभवः, चित्तवाक्काय^४चक्रगतानां
यथासंख्यमक्षोभ्यामिताभशाश्वताः, समयचक्रस्थानाममोघसिद्धिः । पश्चादमृता-
स्वादनं कुर्यात् । यंकारेण वायुमण्डलं तदुपरि रंकारजाग्निमण्डलं^५ तत्र शुक्ल-
आःकारजं शुक्लपद्मभाजनं मुण्डत्रयकृतचू^६लिकावस्थितस्तत्र ॐ त्रं अं खं हूँ
लां मां पां तां^७कारजं^८तदधिष्ठितपञ्चामृतपञ्चप्रदीपां(पान्) निष्पाद्य वायुप्रेरित-
ज्वलिताग्नितापविलीनबीजाक्षरादिकमभिनवभानुवर्णद्रवरूपमवलोक्य तदुपरि
वितस्तिमात्रमतिक्रम्य शुक्लहूँभवाधोमुखामृतमये शुक्लखट्वाङ्गं दृष्ट्वा तस्मिन्नपि
तद्वाष्पस्पर्शात् तत्राविलीय पतितेन तद् द्रव पारदवर्णं शीतलं विचिन्त्य पुनस्तदुपरि
^{१०}त्र्यक्षरमुपर्युपरि दृष्ट्वा तद्रश्मिभिस्त्रैलोक्योदरवर्तिसर्वामृतेन सार्धमशेषतथागत-
हृदयवर्तिज्ञानामृतमाकृष्य तत्रैवान्तर्भाव्य क्रमशः^{११}स्त्र्यक्षरेणापि विलीनैः पुनस्त्र्यक्ष-
रेणाधिष्ठायात्मानं माण्डलेयं देवीनां च जिह्वायां शुक्लहूँकारजयवफलप्रमाणं
शुक्लवज्रं ध्यात्वा तद्रश्मिनलिकाभिः प्राशनां कुर्यात् । ततो वक्ष्यमाणाष्टपदा-
र्चनमन्त्रैः स्तूयात् । यद्येतावति महति मण्डलचक्रचित्तं^{१२} विरतरं स्थिरीकर्तुमस-
मर्थः, तदा नाभिकमलस्थरविसोमसम्पुटान्तर्गत^{१३}वंबीजमृणा^{१४}लोद्भूतरश्मिरेखायां

1. नियत-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. विचिन्त्ये-ख. ग. घ. । 3. कसमश्रिये-क.ख. ग. घ.,
गृ. भो. । 4. 'चक्र' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. तदुपरि-भो. । 6. ल्लिकाया-
मवस्थित-क. ख. । 7. त्रं आं-क.ख. ग. घ., आ-घ, गृ. भो. । 8. 'वाँ' इत्यधिकः पाठः-भो. ।
9 जात-क. ख. । 10-11. अक्षर-क. । 12. 'चित्तं' नास्ति-भो. । 13. खं.-भो. । 14. लतत्त्वाकार-
क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

चित्तस्थिरीकरणद्वारेण प्राणापानयोर्नाडीद्वयवाहपरि^१हारान्मध्यमाप्रवेशे ज्वलितयो-
श्चाण्डाल्या द्रावितस्य शिरः शशि^२चक्रव्याप्तिक्रमेणानन्दादिभेदात् सहजोदये
सकलविकल्पसंहारात् सकृद्वा मण्डलचक्रस्यानुपलम्भः, क्रमेण वा शून्यतान्तर्भावः ।

तत्रायं क्रमः—जगत् श्मशानेषु, श्मशानानि^३बाह्यचक्रे, बाह्यचक्रं कायचक्रे,
कायचक्रं वाक्चक्रे, वाक्चक्रं चित्तचक्रे, चित्तचक्रस्य दिग्गता डाकिन्यादिषु,
^४विदिग्गता रूपिण्यादिषु, डाकिन्यादयश्च महासुखचक्रगता भगवतीमुखे,^५
भगवत्यासनाम्भोजं भानौ, भानुं भैरवे, भैरवं कालरात्र्याम्, कालरात्रि
खट्वाङ्गे, खट्वाङ्गं भगवत्याम्, भगवतीं नाभिकमले, नाभिकमलं रविसोम-
संपुटे, रविसोमसंपुटं^६ वंकारे, वंकारम् अर्द्धचन्द्रे, अर्द्धचन्द्रं बिन्दौ, बिन्दुं
नादेऽन्तर्भाव्य नादमपि वालाग्रशतसहस्रभागरूपं पश्येत् । अधिमात्रं^७ तु तमपि
नोपलभ्य(भ)ते ।^८ एवं ज्ञानचक्रस्वभावतयापि भगवत्याः प्रभास्वरे प्रवेशः । एवं
भूयो भूयः प्रविशेदुत्तिष्ठेत् । तदुक्तम्—

श्वासवातो यथाऽऽदर्शं लयं गच्छति सर्वतः ।

भूतकोटिं तथा योगी प्रविशेच्च मुहुर्मुहुः ॥

पुनः पुनः प्रवेशनैश्च सत्यद्वयाभिन्ननिष्पन्नं^९ युगनद्धसमाधि^{१०} योगी साक्षात्
करोतीति । खेदे सति नाभिसरोजस्थ^{११} वंबीजे चित्तं निवेश्य वक्ष्यमाणहृदयोप-
हृदय^{१२} योर्यथाभिलाषमन्यतरस्योच्चारणसमयमेव तद्वीजनादान्निर्गत^{१३} वायुना^{१४} सह
पञ्चचक्राणि संस्कार्य जगदर्थं कारयित्वा वायोः प्रवेशसमये मालासृता(सूत्रा)-
कर्षण^{१५} न्यायेन मन्त्रेण सह तस्मिन्नेव प्रवेशयेत् । वक्ष्यमाणप्रत्येक^{१६} देवीमन्त्रजापार्थिनां

1. हरान्-क. । 2. शशिशनि-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. 'बाह्यप्रासादे, प्रासादं समयचक्रे'
इत्यधिकः पाठः-भो. । 4. 'विदिग्गता रूपिण्यादिषु' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. आसने-भो. ।
6. वकारे वकारं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. मात्रस्तु-ग. घ. । 8. 'एवं' नास्ति-क. ख. ग. घ.,
गृ. भो. । 9. 'निष्पन्नं' नास्ति-भो., पन्न-क. । 10. समाधि-क. । 11. वम-ख. । 12. यमन्त्रयो-सार्व.,
गृ. भो. । 13. निर्गम-क. ख. ग. । 14. 'सह' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 15. मुत्पाद्येत-क. ।
16. देवता-सार्व. गृ. भो. ।

तु प्रत्येक^१देवीमन्त्रोच्चारणसमाप्तौ प्रत्येकस्फरणसंहरणं पूर्ववत् कर्तव्यम् । अथवा तत एव पूर्ववदुत्तिष्ठन्तीमवधूतीवर्त्मना मुखान्निःसृत्य पद्मे स्वस्थानं गत्वा तथैव भ्रमन्तीमक्षरमालां भावयेत्^२, हृदयोपहृदययोरन्यतरं वक्ष्यमाणमालामन्त्रं वा जपेत् । अथवा तदेव बीजं परिवेष्टितां दीपमालामिव मन्त्रमालामालोकयन् अद्रुतमविलम्बितमसत्संकल्पवर्जितमिति ^३जापयेत् ।

ॐ वज्रवैरोचनीये हुँ हूँ फट् स्वाहा । भगवत्या हृदयमन्त्रः । ॐ वज्र-
वैरोचनीये स्वाहा । इत्ययमपि हृदयमन्त्रः । ॐ ^४ सर्वबुद्धडाकिनीये वज्रवर्णनीये
^५हुँ हूँ फट् स्वाहा । उपहृदयमन्त्रः । महाप्रभावा एते मन्त्राः । ॐ नमो भगवति^६
वज्रवाराहि वँ हुँ हूँ फट् । ॐ नमः आर्यापराजिते त्रैलोक्यमाते महाविद्येश्वरि हुँ
हूँ फट् । ॐ नमः सर्वभूतभयावहे महावज्रे^७ हुँ हूँ फट् । ॐ नमो वज्रासने
अजितेऽपराजिते वश्यंकरि नेत्र^८भ्रामणी हुँ^९ हूँ फट् । ॐ नमः शोषणि रोषणि^{१०}
क्रोधकराले^{११} हुँ हूँ फट् । ॐ नमः सन्त्रासनि^{१२} मारणि प्रभेदनि ^{१३}अपराजये हुँ हूँ
फट् । ॐ नमो जये विजये जम्भनि स्तम्भनि मोहनि ^{१४}हुँ हूँ फट् । ॐ नमो वज्र-
वाराहि महायोगेश्वरि खगे ^{१५}हुँ हूँ फट् । अयं भगवत्या अष्टपद^{१६}पूजामन्त्रः ।

अथ च मालामन्त्रो भवति—ॐ वज्रवाराहि प्रोतङ्गे प्रोतङ्गे हन ^{१७}हन
प्राणान् किकिनि खिखिनि धुन धुन वज्रहस्ते शोषय शोषय ^{१८}वज्रखट्वाङ्गकपाल-
धारिणि महापिशितमांसाशिनि मानु^{१९}षान्त्रप्रावृते सान्निध्ये नरशिरोमालाग्रन्थित-

-
1. नास्ति-भो. । 2. यन्-ग. भो. । 3. 'जापयेत्' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
4. ॐ ॐ ॐ-क. ख. । 5. 'हुँ हूँ फट्' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. वते-ख. । 7. वज्र-क. ख.
ग. घ., गृ. भो. । 8. भ्रमणि-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. 'हूँ' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
10. 'विषणि' इत्यधिकः पाठः-भो. । 11. लिनि हुँ-भो. । 12. त्रासनी-भो. । 13. पराजये-क. ख.
ग. घ., गृ. भो. । 14-15. हूँ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. 'पूजा' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
17. 'हन' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 18. 'वज्र' नास्ति क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. षानु-
ख. ग. घ., षानु-क. ।

धारिणि सुम्भनिसुम्भे हन हन प्राणान् सर्वपापं सत्त्वानां सर्वपशूनां ^१महामांस-
च्छेदनि क्रोधमूर्ते ^२दंष्ट्राकरालिनि महामुद्रे श्रीहेरुकदेवस्याग्रमहिषि सहस्रशिरे सहस्र-
बाहवे शतसहस्रानने ज्वलिततेजसे ज्वालामुखि पिङ्गललोचने वज्रशरीरे वज्रासने
मिलि मिलि तिमिलि तिमिलि हे हे ह ह हुँ हूँ ख ख धु धु रु रु ^३धुरु धुरु ^४मुरु
मुरु ^५अद्वैतमहायोगिनि पठितसिद्धे ^६द्रै धं द्रै धं ^७ग्रं हे हे ह ह भीमे हस ^८हस
वीरे हा हा हो हो हुँ हूँ त्रैलोक्यविनाशनि ^९शतसहस्रकोटितथागतपरिवारे हुँ हूँ
फट् सिंहरूपे खः गजरूपे गः त्रैलोक्योदरे ^{१०}महासमुद्रमेखले ग्रस ग्रस हुँ हूँ फट्
वीराद्वैते ^{११}हुँ हूँ हा हा महापशुमोहनि ^{१२}योगेश्वरि त्वं डाकिनी लोकानां वन्दनी
सद्यः प्रत्ययकारिणी हुँ हूँ ^{१३}फट् भूतत्रासनि महावीरे परमसिद्धे योगेश्वरि ^{१४}फट्
हुँ हूँ फट् स्वाहा ।

महाप्रभावोऽयं मन्त्रः पठितसिद्धिः । सोमग्रहे ^{१५}चन्द्रमसं पश्यन् तावज्जपेद्
यावच्चन्द्रो मुक्तो भवति । पश्चाद्यावदावर्तयति तावत् ^{१६}स्त्रीसहस्रैरनुगम्यते ।
भावनापुरस्सरं सकृदुच्चारणादाकर्षयति मारयति क्रूरचेतसामुच्चाटन-विद्वेष-
स्तम्भनं च कुरुते । ^{१७}श्मशानाङ्गारं सकृज्जप्तं गृहे ग्रामे नगरे वा क्षिपेत्, दाहं
दर्शयति । मयूरपिच्छकमाकाशे भ्रामयेत्, पुनरुपशमयति । ^{१८}इत्यादि बहुप्रकार-
मस्य सामर्थ्यमन्यत्रोक्तम् ।

-
1. 'महा' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. मूर्ति-भो. । 3. 'धुरु धुरु' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. सुरु सुरु-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. अद्वैते-क. भो. । 6. द्रँ द्रँ द्रँ द्रँ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. ग्रं-क. । 8. 'हस' नास्ति-घ. । 9. 'शनि' नास्ति-भो. । 10. उदरि-भो. । 11. हुँ हुँ-ख. । 12. यामेश्वरी-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. 'फट्' नास्ति-ग. घ. । 14. योगीश्वरि-भो. । 15. 'सूर्यग्रहे वा' इत्यधिकम्-भो. । 16. तावतस्तु-ग. । 17. 'पुष्पं सकृज्जप्त-माकाशे क्षिपेत्, ब्रह्मादि अन्यान् दर्शयितुं समर्थम्' इत्यधिकः पाठः-भो. । 18. 'कर्परं सकृज्जप्तं चतुरङ्गसेनावर्गं दर्शयति । मयूरपिच्छं परावृत्तं भ्रामयेत्, (तदा) अन्तर्धानं भविष्यति' इत्यधिकः पाठः-भो. ।

ॐ डाकिनीये^१ हुँ हूँ^२ फट्, डाकिन्याः । ॐ लामे हुँ हूँ फट्, लामायाः ।
 ॐ खण्डरोहे हुँ हूँ फट्, खण्डरोहायाः । सार्वकर्मिकोऽयं मन्त्रः । ॐ
 रूपिणीये^३ हुँ हूँ फट्, रूपिण्याः । अथ प्रचण्डादीनां मन्त्रा भवन्ति । ॐ प्रचण्डे
 हुँ हूँ फट् । ^४ॐ चण्डाक्षीये^५ हुँ हूँ फट् । ॐ प्रभा^६वतीये हुँ हूँ फट् । ॐ महा-
 नासे हुँ हूँ फट् । ^७ॐ वीरमतीये हुँ हूँ फट् । ॐ खर्वरीये हुँ हूँ फट् । ॐ
 लङ्केश्वरीये हुँ हूँ फट् । ॐ द्रुमच्छाये हुँ हूँ फट् । ॐ ऐरावतीये
 हुँ हूँ फट् । ॐ महाभैरवीये हुँ हूँ फट् । ॐ वायुवेगे हुँ हूँ फट् । ॐ सुरा-
 भक्षीये हुँ हूँ फट् । ॐ श्यामादेवीये हुँ हूँ फट् । ॐ सुभद्रे हुँ हूँ फट् ।
 ॐ हयकर्णे हुँ हूँ फट् । ॐ खगानने हुँ हूँ फट् । ॐ चक्रवेगे हुँ हूँ फट् । ॐ
 खण्डरोहे हुँ हूँ फट् । ॐ शोण्डिनीये हुँ हूँ फट् । ॐ चक्रवर्मणीये हुँ हूँ फट् ।
 ॐ सुवीरे हुँ हूँ फट् । ॐ महाबले हुँ हूँ फट् । ॐ चक्रवर्तिनीये हुँ हूँ फट् ।
 ॐ महावीर्ये हुँ हूँ फट् । ॐ काकास्ये हुँ हूँ फट् । ॐ उलूकास्ये हुँ हूँ फट् ।
 ॐ श्वानास्ये हुँ हूँ फट् । ॐ शूकरास्ये हुँ हूँ फट् । ॐ यमडादी(ढी)ये
 हुँ हूँ फट् । ॐ यमदूतीये हुँ हूँ फट् । ॐ यमदंष्ट्रिणीये^८ हुँ हूँ फट् । ॐ यममथनीये
 हुँ हूँ फट् । एवं तावल्लूयीपादाभिसमयक्रमेण ।

विस्तरतः सप्तत्रिंशदात्मकं ^९देवीभगवत्या ^{१०}मण्डलचक्रं तत्रैव मण्डलभेदा-
 नन्तरं वज्रावल्यामस्मद्गुरुभिरुपदर्शितं लिख्यते । नायिकादयः सर्वा द्विभुजाः,
^{११}डाकिन्य^{१२}श्चतुर्भुजाश्चतस्रः । काकास्यादयश्च वामेन कपालं बाह्यासक्तखट्वाङ्गं च
 बिभ्राणाः, सव्येन डमरुकम् । अपरं सर्वं पूर्ववत् । अथवा भगवती पीतवर्णा नीला
 वा, डाकिन्यादयश्चतस्रस्तु पीताः । सव्येन डमरुभृत्(तः) । चित्तचक्रस्य योगिन्यः
 सिताः सवज्रतर्जनीकसव्येतरकराः^{१३} । वाक्चक्रस्य कृष्णाः ^{१४}सपद्मतर्जनीकसव्य-

१. न्ये-क. । २. 'हूँ' नास्ति-क. । ३. इतः परं 'हूँ हूँ' इति सर्वत्र दीर्घः पाठः, गृ. भो. ।
 ४. 'ॐ चण्ड'...वतीये हुँ हूँ फट्' नास्ति-भो. । ५. लीये-क. । ६. मतीये-ख. । ७. 'ॐ' नास्ति-ख. ग. घ. ।
 ८. ष्ठीये-ख. । ९. 'देवी' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । १०. मण्डलं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
 ११. 'डाकि'...तस्रः' नास्ति-भो. । १२. न्यादयश्च-ख. ग. घ. । १३. येन करा-ग. घ. ।
 १४. सवज्र-भो. ।

हस्तोः(स्ताः) । कायचक्रस्य रक्ताः सव्येन तर्जनीकचक्रभृतः^१ । काकास्यादयः सव्येन सतर्जनीककर्तिधराः । सर्वा देव्यो वामहस्तेन कपालधारिणः(ण्यः) । यमदाढ्यादयः सव्येन डमरुं वामेन तर्जनीक^२नरमुण्डं बिभ्रत्यः । डाकिन्यादीनां^३काकास्यादीनां च वामबाहौ खट्वाङ्गम् । एताश्च द्वादशार्धपर्यङ्केन नृत्यन्त्यः । अपरं सर्वं पूर्ववत् । देवताऽहङ्कार^४त्यागाय सर्वज्ञतालाभाय दर्शनाय च डाकिन्यादयः सप्तत्रिंशद्वोधिपाक्षिकधर्मस्वभावा वेदितव्याः ।

तत्र रूपस्कन्धपरिज्ञानप्रारम्भलक्षणकायानुस्मृत्युपस्थानं डाकिनी । वेदना-स्कन्धपरिज्ञानप्रारम्भलक्षणवेदनानुस्मृत्युपस्थानं लामा ।^५संज्ञासंस्कारस्कन्धमायारूपत्वाच्च धारणलक्षणधर्मानुस्मृत्युपस्थानं खण्डरोहा । विज्ञानस्कन्ध^६स्वरूप-^७प्रविभेदलक्षण^८विशुद्ध्या चित्तानुस्मृत्युपस्थानं रूपिणी । धर्मश्रवणाभिलाषात्यन्ता-दरलक्षण-छन्दऋद्धिपादः प्रचण्डा ।^९वीर्यानिवरताभ्यासा वीर्यं^{१०}ऋद्धिपाद-श्चण्डाक्षी । अत्यन्तविचारणा मीमांसा-ऋद्धिपादः प्रभावती । बोधिसाक्षा-^{११}त्करणाशयातिशयश्चित्त-ऋद्धिपादो महानासा । सत्यरत्नत्रयकर्मफलाभि^{१२}संप्रत्यय-^{१३}स्तत्त्वावधारणैश्वर्यादि श्रद्धेन्द्रियं वीरमती । अवश्यकतंव्यतावधारणं वीर्येन्द्रियं खर्वरी । अविद्याप्रतिप^{१४}क्षामुषितस्मरणाधिपत्यस्मृतीन्द्रियं लङ्केश्वरी । चित्ता-ग्रतैश्वर्यात् समाधीन्द्रियं द्रुमच्छाया । हेयोपादेयो(या)वधारणैश्वर्यात्^{१५}प्रज्ञेन्द्रिय-मैरावती ।

श्रद्धादीन्द्रियाण्येव प्रकर्षपर्यन्त^{१६}गमनाद्वलानि । श्रद्धाबलं महाभैरवा^{१७} । वीर्यबलं वायुवेगा । स्मृतिबलं सुराभक्षी । समाधिबलं श्यामादेवी । प्रज्ञाबलं सुभद्रा ।

१. भृत्-ख. । २. 'नर' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ३. 'काकास्यादीनां' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ४. रयोगा-घ. । ५. 'संज्ञा' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ६. 'स्वरूप' नास्ति-भो. । ७. प्रीतिवेद-क. ख. घ. घ., गृ. भो. । ८. 'विशुद्ध्या' नास्ति-भो. । ९. वीर्यो-क., वीर्यानिवरता-ख. ग. घ. । १०. 'ऋद्धि' 'मीमांसा' नास्ति-क. । ११. कारणा-क. । १२. भिससंप्रत्ययः-ख. ग. घ. । १३. श्रद्धादित्यव-क., श्रद्धातदित्यव-ख. ग. घ., गृ. भो. । १४. त्यवेक्षा-क. ख. ग. । १५. यत्-क. । १६. शमनोज्ज्वलानि-ख. ग. घ., शनोज्ज्वलानि-क., गृ. भो. । १७. भैरव-ग. घ. ।

समाधिरेव संबोधेः कारणम् । समाधिसंबोध्यङ्गं हयकर्णा । कौशीद्या-
नवकाशो^१ वीर्यसंबोध्यङ्गं खगानना । कुशले^२ष्वोत्सहः(षूत्साहः) प्रीतिसंबोध्यङ्गं
चक्रवेगा । कुशलकर्मणि कर्मण्यता^३ प्रसन्नसंबोध्यङ्गं खण्डरोहा । नैरात्म्य-
स्वरूपेणावधारणा धर्मप्रविचयसंबोध्यङ्गं शौण्डिनी । अविस्मरणशीलता स्मृति-
संबोध्यङ्गं चक्रवर्मिणी । ^४समाधावमनसिकारोपेक्षासंबोध्यङ्गं सुवीरा । अवि-
परीतार्थप्रतिपत्तिः सम्यग्दृष्टिमहाबला । ^५आरब्धसत्कृत्यापरित्यागः सम्यक्-
संकल्पश्चक्रवर्तिनी । सत्त्वा^६विसंवादनवचनं^७ सम्यग्वाग् महावीर्या । दशकुशला-
नतिक्रमात् कृत्यं सम्यक्कर्मन्तःकाकास्या । सत्त्व[ा]विहेठनायाजीवनं^८ सम्यगाजीव
उलूकास्या । कुशला^९थंघटनं सम्यग्व्यायामः श्वानास्या । बुद्धवचनानुस्मरणं^{१०}
सम्यक्स्मृतिः शूकरास्या । सम्यक्समाधिर्भगवती वज्रवाराही । अनुत्पन्नानां
कुशलानां धर्माणामुत्पादनं यमडा(दा)ढी । ^{११}उत्पन्नानां ^{१२}कुशलानां धर्माणां
संरक्षणं यमदूती । उत्पन्नानामकुशलानां धर्माणां प्रहाणं यमद्रंष्टिणी । अनुत्पन्नाना-
मकुशलानां धर्माणां^{१३}मनुत्पादनात् ^{१४}सम्यक्प्रहाणं यममथनी चेति ।

प्रमुदिता-विमला-प्रभाकरी-अचिष्मती-अभिमुखी-सुदुर्जया-दूरङ्गमा-अचला-
साधुमती-धर्ममेघाख्यदशभूमिविशुद्ध्या क्रमेण पीठोपपीठादिरूपं कायमण्डल-
मध्यात्मयोगिना भावयितव्यम् । तदुक्तम्—

चतुर्विंशतिभेदेन पीठाद्यत्र व्यवस्थितम् ।

अतस्तद्भ्रमणे नैव खेदः कार्यो न(नु) तात्त्विकैः ॥

क्षीयन्ते धातवस्तेषां भ्रमणाद् बाह्ययोगिनाम् ।

अतो बाह्यं निराकृत्य स्थातव्यं योगिनीनये ॥ इति ।

१. काश-क. । २. लेष्वासहः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ३. ण्यतो-क. ख. । ४. समावधावता-
भोगतो-क. ख., नाभोगतो-ग. घ., गृ. भो. । ५. आप्रस-क. । ६. सत्त्वादि- घ. । ७. 'वचनं'
नास्ति-भो. । ८. जीवत-क. । ९. लादशार्थ-ग. घ. । १०. स्मरण-ख. ग. घ. । ११. अनुत्प-क.
ख. ग. घ., गृ. भो. । १२. 'कुशलानां' नास्ति-भो. । १३. णामुत्पा-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।
१४. 'सम्यक् प्रहाणं' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

तत्र ^१पुं जां ओं अं गों रां दें मां कां ओं त्रिं कौं कं लं कां हिं प्रें गूं सौं सुं
नं सिं मं कुं । पुल्लोरमलयशिरसि प्रचण्डा । जालन्धरशिखायां^२ चण्डाक्षी ।
ओडियानदक्षिणकर्णे^३ प्रभावती । अर्बुदमस्तकपृष्ठे महानासा । पीठम् । गोदावरी-
वामकर्णे वीरमती । रामेश्वरभ्रूमध्य(ध्ये) खर्वरी । देवीकोटचक्षुषोर्लङ्केश्वरी ।
मालवस्कन्धद्वये द्रुमच्छाया । उपपीठम् । चित्तचक्रस्य खेचरी । अनया स्वर्गगतानां
संग्रहः ।

कामरूपकक्षयोरैरावती । ^४ओड्रस्तनयुगले महाभैरवा । क्षेत्रम् । त्रिशकुनि-
नाभौ वायुवेगा । कौशलनासाग्रे सुराभक्षी । उपक्षेत्रम् । कलिङ्गमुखे
श्यामादेवी । लम्पाक(क)कण्ठे सुभद्रा । छन्दोहः । काञ्चीहृदये हयकर्णा ।
हिमालयमेढ्रे खगानना । उपच्छन्दोहः । वाक्^५चक्रे ^६भूचरी । अनया मर्त्यानां
संग्रहः ।

प्रेतपुरीलङ्गे चक्रवेगा । गृहदेवतागुडे(दे) खण्डरोहा । मेलापकम् ।
सौराष्ट्र-ऊरुद्वये शौण्डिनी । सुवर्णद्वीपजङ्घायां चक्रवर्मिणी । उपमेलापकम् । नगर-
अङ्गुलीषु सुवीरा । सिन्धु-पादपृष्ठयोर्महाबला । श्मशानम् । मरु-अङ्गुष्ठयोश्चक्र-
वर्तिनी । कुलतायां जानुद्वये महावीर्या । उपश्मशानम् । कायचक्रे पातालवासिनी ।
^७अनया पातालगतानां संग्रहः ।

अत्रायमुपदेशः—पुं जां इत्यादि सर्वं ^८सानुस्वारं निरूप्यताम् । पुंकाराद्य-
क्षरपरिगता^९न्यरशून्यताचक्राकाराणि पीठादिस्थानानि शिरःप्रभृतिषु झटिति
द्रष्टव्यानि । तेषु पीठादिषु तत्तत्स्थानगता ^{१०}नाड्यस्त^{११}तद्देवतारूपेण परिणमय्य
व्यवस्थिता भाव्याः । यथा बाह्य^{१२}वृक्षादि समीपस्था नद्य^{१३}स्तोयेन पोषणं

1. अत्रानुस्वाररहितः पाठः—भो. । 2. खाया—घ. । 3. कर्ण—घ. । 4. उड्र—क. । 5. चक्र—क. ।
6. खेचरी—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. 'अनया'...तानां' नास्ति—भो. । 8. सानुसारं—क. ख. ग. घ.,
गृ. भो. । 9. अपि शून्य—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. नाड्यस्तु—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. 'तद्'
नास्ति—क. । 12. पीठादि—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. स्रोतोयोनि—क. ।

कुर्वन्ति, तद्वद्देहेऽपि नाड्यो नखादीनां पोषणं कुर्वन्तीति समानता । बाह्ये वज्रपीठं महाबोधिसंज्ञकं^१ स्थानं नैरञ्जना च नदी । देहे महासुखचक्रं वज्रपीठमवधूती निरञ्जना । वक्त्रवामदक्षिणनासापुटं गुदद्वारेषु क्रमेण काकास्यादयो द्वारपालयः । सव्यापसव्यश्रोत(त्र)^२सव्यापसव्यनेत्रेषु यमदाढ्यादयः । हल्ललाटकण्ठनाभिकर्णिकासु^३ डाकिन्यादयश्चतस्रः । इति सम्पूर्णं कायमण्डलं मुहुर्मुहुर्दृढमधिमोक्तव्यम् ।^४

ततो वलिं दद्यात् । भोज्यादिकं पुरतः संस्थाप्य प्रागुक्तक्रमेण विशोध्य जालामुद्रातन्मात्राभ्यामानीतं सर्वाकारनिष्पन्नं मण्डलं^५ चक्रं पुरतोऽवस्थाप्यार्धादिक-पुरःसरं संपूज्यालिकालिपरिणतचन्द्रसूर्यं^६ मण्डलस्वभावकरद्वयान्तरगतं^७ हूँकारं दृष्ट्वा ॐ अन्योन्यानुगताः सर्वधर्माः^८ स्फुर स्फुर अनुप्रविष्ट(ष्टाः) सर्वधर्मा अत्यन्तानुप्रविष्टाः सर्वधर्मा हूं इत्युच्चारणपूर्वकं चन्द्रसूर्यारूढहूँकारपरिणामेन वज्राञ्जलिकृतकरतले तदमृतभाण्डमवस्थाप्य ध्यात्वा वा अभिमतसिद्धचर्यमिति पठेत्—

देव्यः प्रमाणं समयं प्रमाणं^९ तदुक्तवाचश्च परं प्रमाणम् ।

एतेन सत्येन भवेयुरेता देव्यो ममानुग्रहहेतुभूताः ॥

ततः पूज्यपूजकपूजादीनामभेदं पश्यन् तदमृतभाण्डं दिक्षु वामावर्तेन पूर्वा दिशमारभ्य, विदिक्षु अग्निकोणमारभ्य दक्षिणावर्तेन भ्रामयन्^{१०} हूँभवशुक्ल-वज्रजिह्वायातां नायिकां प्रतित्रिचक्रदेवतानां^{११} स्वस्वमन्त्रैरेकवारोच्चारिते^{१२} भ्रामयन् ॐ अरल्लि होः^{१३} जः हूं वं होः^{१४} वज्रडाकिन्यः समयस्त्वं

-
1. 'संज्ञक' नास्ति-भो. । 2. 'सव्यापसव्य' नास्ति-भो. । 3. कायाषु-क. ख. । 4. वक्तव्यं-क. ख. । 5. 'चक्रं' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. 'मण्डल' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. गतं-ग. घ. । 8. 'स्फुर' 'सर्वधर्माः' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. तदुक्त' 'णम्' नास्ति-घ. । 10. भ्रामयेत्-क. ख. । 11. स्वभाव-क. । 12. भ्रामयेत्-क. ख. । 13. ज-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 14. हो-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

^१दृश्य हो^२—इत्यनेन एकद्वित्रिचतुःपञ्चवारोच्चारितेन ढौकयेत् । तत आचमन-हस्तप्रोक्षणताम्बूलादिकं दत्त्वा वीणादिभिः संपूज्य संस्तुत्य प्रार्थयेत्—

भवशमसमसङ्गा

भग्नसंकल्पभङ्गी

खमिव सकलभावं भावतो वीक्षमाणाः ।

गुरुतरकरुणाम्भःस्फीतचित्ताम्बुनाथाः

कुरुत कुरुत देव्यो मय्यतीवानुकम्पाम् ॥

ततोऽष्टश्मशानस्थितदिक्पालानां पूर्ववद् भ्रामयन् ॐ ख ख खाहि खाहि सर्वयक्षराक्षसभूतप्रेतपिशाचोन्मादापस्मारडाकडाकिन्यादय इमं वलिं गृह्णन्तु समयं^३ रक्षन्तु मम सर्वसिद्धिं प्रयच्छन्तु^४ यथैवं यथेष्टं भुञ्जथ पिबथ जिघ्रथ अतिक्रमथ मम सर्वाकार^५तया सत्सुखविवृद्धये सहायिका भवन्तु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा—इत्यनेन वारद्वयोच्चारितेन ढौकयेत् । तदमृतभक्षणाद् दिक्पालादयो महासुखसमर्पितविग्रहा भाव्याः । तदनु समुदायेन ताम्बूलादिकं दत्त्वा^६ स्वहृद्बीज-निर्गतवीणादिभिः संपूज्या^७ष्टपदमन्त्रेण संस्तुभ्या(त्या)भिमतसिद्धये प्रार्थ्य च्छोमोहस्तेन संछोभ्य न्यूनादिकविधिपूरणार्थं शताक्षरं^८ मन्त्रं घण्टावादनपूर्वकं पठेत् ।

ततः ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति पठन् कमलावर्तं^९मुद्रया परितोष्य मुद्रोपसंहारेणालिङ्गनाभिनयपूर्वकं वामानामिकाङ्गुष्ठछोटिकादानपूर्वकं ॐ वज्र^{१०}मुरिति पठन् विसर्जयेत् । चक्रमात्मनि^{११}सर्वाकारेण प्रवेशयेत् । ततः प्रणिधानं कृत्वा देवतारूपेण विहरेदिति ।

स्नानकालेऽभिषेकविधिं विदधीत, भोजनकाले तु मण्डलचक्रात्मकं^{१२}स्वदेहं झटिति विचिन्त्य यथाविधानं वलिं दत्त्वा^{१३}त्र्यक्षरेण वलिमधिष्ठाय ॐ ख

1. 'दृश्य' नास्ति-क. । 2. होः-क. ख. ग. घ, गू. भो. । 3. समय-क. ख. ग. घ, गू. भो. । 4. तथैव-क. । 5. कारजतया-क. ख. ग. घ., गू. भो. । 6. 'स्व' नास्ति-भो. । 7. 'अष्ट'.....भ्या' नास्ति-भो. । 8. 'मन्त्र' नास्ति-भो. । 9. वर्तन-क. ख. ग. घ., गू. भो. । 10. मुरिति-क. ख. ग. घ., गू. भो. । 11. सर्वात्मना-क. ख. ग. घ., गू. भो. । 12. 'स्व' नास्ति-क. ख. ग. घ., गू. भो. । 13. अक्षरेण-क. ग. घ. ।

ख खाहि खाहीत्यादि मन्त्रेण एकवारोच्चारितेन दिक्पालेभ्यो दत्त्वा ज्वालनादिविधिना शोधयित्वा विधिवद्भक्ष्यादिकं सर्वधर्मतासमताहङ्कारपूर्वकम् ॐ समयशुद्धाः सर्वधर्माः समयशुद्धोऽहम् इति सर्वधर्मसमताहङ्कारेण 'हूँ'कारनिष्पन्नां शुक्लवज्रमयीं जिह्वां विधाय ॐ अमृतोदक हूँ हूँ ठ^१ ठ त्रां आः 'खँ हूँ' इत्यनेनाधिष्ठाय ^४व्यक्षरेण नाभिस्थं वंकारं प्रीणयेदिति ।

मध्याह्नसन्ध्यायां तु ध्यानं(न) ^५गृहं प्रविश्य ॐ ^६आः हूँ, ॐ ^७सर्वयोगिनीनां^३ कायवाक्चित्तवज्रस्वभावात्मकोऽहम्, ॐ वज्रशुद्धाः सर्वधर्मा वज्रशुद्धोऽहमिति मन्त्रत्रयमुच्चारयन्^९ झटिति मण्डलचक्रमधिमुच्य पूर्ववत् सर्वं कृत्वा यथासुखं विहरेदिति ।

अर्धरात्रसन्ध्यायां मध्यान्त(ह्न)सन्ध्यावत् सर्वं कृत्वा सर्ववाग्व्यापारमालिकालिमयं बुद्ध्वा अकारादिक्षकारान्तं हुँ हूँ फट् ^{१०}फटित्युच्चार्य प्रभास्वरमामुखीकृत्य निद्रायां च प्रभास्वरतामधिमुञ्चन् शयीत । सर्वासु सन्ध्यासु पर्यन्ते शताक्षरं जपेत् । पुनः प्रभातसन्ध्यायां प्रभास्वरोत्थितमण्डलचक्रमधिमुच्य पूर्वोक्तसर्वमनुतिष्ठेदिति ।

बाह्ये पूजाविधिरुच्यते । इह भगवतीं पूजयितुकामः प्रातरुत्थाय यथावसरं वा वज्रवैरोचनीयोगवान् मन्त्री शुचिप्रदेशे हस्तं दत्त्वा ॐ सुम्भनिसुम्भेत्यादिमन्त्रमुच्चार्य पञ्चामृतसुगन्धादिवटिकया अन्यतमा(म)द्रव्यमिश्रितगोमय^{११} वटिकया चतुरस्रमण्डलमुपलिप्य तन्मध्ये हस्तं दत्त्वा पू(पु)जेत्यादिचतुर्विंशत्यक्षराणि पीठोपपीठादिदशनामानि च ^{१२}तत्तद्भूम्यधिमोक्षपूर्वकमुच्चारयेत् । ततस्तत्र मण्डलके झटिति चतुर्महाभूतस्थसुमेरूपरि रक्तपद्मस्थसूर्यवंकारं दृष्ट्वा तद्रश्मिभिर्ज्ञानमण्डलमानीय तत्र प्रवेश्य तत्परिणतां भगवतीं सपरिवारां सर्वाकारनिष्पन्नां पश्येत् ।

-
1. ॐकार-क., हुँ-ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. पठ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. खँ-क. । 4. अक्ष-घ. । 5. देहं-घ. । 6. आ-ग. । 7. 'ॐ' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 8. योगिनी-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. भावयेत्-क. । 10. 'फट्' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. वाटिकया-क. । 12. तद्भूम्ये-क. ।

ततः ^१स्वहृद्बीजनिर्गतवीणादिदेवीभिः संपूज्य सप्तरत्नादीनि च ^२तन्निर्ग-
तादि(नि) ढौकयित्वा यथाविधि शोधितवामकरेण मण्डलमध्ये भगवत्यै त्र्यक्षरेण
पुष्पं दद्यात् । पुनस्तत्रैव भगवतीहृदयोपहृदयमन्त्राभ्यां ^३ढौकयेत् । ततो डाकिन्या-
दीनां यममथनीपर्यन्तानां स्वस्वमन्त्रेण दिक्षु वामावर्तेन विदिक्षु दक्षिणावर्तेन
यथास्थानं मण्डलके पुष्पं देयम् । ततो वक्ष्यमाणहस्तपूजाक्रमेण करविन्यस्तानां
देवतानां च तत्तत्स्थानेषु ^४तत्तन्मन्त्रेण ॐ ^५ह इत्यादिना पुष्पं दद्यात् । ततस्तद्वाम-
करगतपुष्पमष्टपदमन्त्रोच्चारणपूर्वकं मण्डलके प्रक्षिप्य शिरसाञ्ज ^६लिकरणपूर्वकं
करतलगतं देवताचक्रमात्मनि प्रवेशयेत् । तदनु हृदयाद्यष्टपदमन्त्रस्तुतिपूर्वकं यथा-
वर्तितस्तुतिभिः संस्तुत्य यथाशक्ति पापदेशनादिकं ध्यानमन्त्रजापप्रणिधानादिकं
च विधाय शताक्षरमुच्चार्य ॐ योगशुद्धाः सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति मन्त्रसहित-
कमलावर्तमुद्रया संतोष्य मुद्रोपसंहारेणालिङ्गनाभिनय^७पुरःसरं छोटिकादान-
सहितम् ^८ॐ वज्र^९मुरिति पठन् विसर्ज्य तच्चक्रमात्मनि प्रवेशयेत् । ततो मण्डले
रेखां लुम्पेदिति ^{१०}ज्ञातव्यम् ।

हस्तपूजाविधिरुच्यते । तत्र गणमण्डलादौ श्रीवज्रवाराहीयोगवान् योगि(गी)
वामकरे वृद्धातर्जनीमध्यमानामिकाकनिष्ठा^१ तन्नखमुखेषु वज्रसत्त्ववैरोचनामिता-
भाक्षोभ्यरत्नसम्भवामोघसिद्धिस्वरूपान् यथाक्रमं शुक्लपीतरक्तकृष्ण^{१२}हरितवर्णान्
^{१३}ॐ ह नमः हि स्वाहा हु वौषट् हे हुँ हूँ होः^{१४} फट्^{१५} हंकारं विन्यसेत् । करतले
झटिति निष्पन्नारक्तपञ्चदलकमलं ध्यात्वा पूर्वादिदिग्दलेषु वामावर्तेन यथाक्रमं
यामिनी-मोहिनी-सञ्चारनी(णी)-संत्रासनी-चण्डिकास्वरूपाणि नीलश्वेतपीतहरित-

-
1. 'स्व' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. निगतादि-क. ख. । 3. 'ढौकयेत्' नास्ति-
क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 4. 'तत्तत्' नास्ति-भो. । 5. हे-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. शिरस्य-ख.
ग. घ. । 7. नये-क. ख. ग. । 8. सहित-क. ख., तां-ग. । 9. मुरिति-क. ख. । 10. 'ज्ञातव्यम्' नास्ति-
क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. तत्र नखमुखे-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 12. 'रक्त' इत्यधिकं-क. ।
13. ॐ ह नमो हि स्वाहा हुँ वौषट् होः-क. ख., ॐ हः नमो हि स्वाहा हुँ वौषट् होः-ग. घ., गृ. भो. ।
14. हो-क. ग. घ. । 15. हूँकारतावन्यसेत्-क., राना-ग. घ., राता-ख., गृ. भो. ।

धूम्रधूसरवर्णानि 'हं यों हिं मों हें हिं हुं हूं' फट्, फट्, इति बीजाक्षराणि पश्येत् । कर्णिकायां वज्रवाराहीस्वभावां(वं) रक्तवर्णं ॐ वँ इति बीजम्, एतत्प्रतिबिम्बं^२ त्रिचक्रं वा अधः करपृष्ठेऽपि परिस्फुटं पश्येत् ।

ततः करगतान् पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशधातून् पातनी-मारणी-आकर्षणी-नर्तेश्वरी-पद्मजालिनीस्वभावानधिमुञ्चेत्^३ । ^४ततस्तत्करगतानि बीजाक्षराणि द्रवद्रव्येण अक्षयित्वा तत्करतलं सर्वयोगिन्य^५धिष्ठित^६त्रिचक्र^७रूपा(प)मधिमुञ्चेत् । द्रवादिद्रव्यं त्र्यक्षर^८मन्त्रेणाष्टपदमन्त्रेण वा दद्यात् । ततः संपूज्य न्यूनाधिकविधि-पूरणार्थं शताक्षरं पठित्वा चक्राद्यधिष्ठानार्थं^९मध्येष्य^{१०} तद्द्रवमपरद्रव्येऽन्यत्र वा स्थापयित्वा हस्तलग्नेन द्रव्येण वामानामिकागृहीतेन हज्जिह्वाशिरांसि^{११} हूं^{१२} आः ॐकारोच्चारणपूर्वकं अक्षयन्^{१३} तद्देवतावृन्दमात्मनि प्रविष्टमधिमुञ्चेत् । एतत्तु विधानं^{१४}संचारतन्त्रे प्रसिद्धम् । [इति] हस्तपूजाविधिः ।

यद्वा पूर्वोक्तविधिशोधितवामकरानामिकया पीठोपपीठादिदशनामान्युच्चारयन् यथाविधिशोधितमदनेन त्रिकोणचक्रद्वय^{१५}पुटमभिलेख्य तन्मध्ये वर्तुलमण्डलं तत्र ^{१६}स्वहृद्बीजनिर्गतां तत्किरणाकृष्टां ^{१७}साधाराधेयचक्रां भगवतीं विचिन्त्य तस्यै पञ्चामृतादिरूपेण निष्पादितं खाद्यपेया^{१८}दिकं त्र्यक्षरेणाष्टपद^{१९}मन्त्रेण वा दत्त्वा पद्मभाजनगतममृतायितं मदनं वृद्धानामिकाभ्यां गृहीत्वा भगवतीं स्वहृदयो-पहृदयाभ्यां डाकिन्यादियममथनीपर्यन्ताश्च यथास्वमेतासामेव मन्त्रैः संतर्पयेत् । ततः संपूज्य न्यूनातिरेकविधिपूरणार्थं शताक्षरं^{२०}पठित्वा गणचक्राधिष्ठानार्थं

-
1. हाँ याँ ह्रीं मों (माँ-ग. घ.), हूँ ह्रीं हुँ हूं (हूँ-क. ख.), गृ. भो. । 2. बिम्बां-ख. ग. घ. । 3. मुञ्चयेत्-क. ख. । 4. 'ततः' नास्ति-भो. । 5. तिष्ठित-ख. । 6. तत्रैक-क. । 7. स्थितरूपा-क. ख. । 8. क्षरं-क. घ. । 9. ष्ठानाद्यर्थ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. 'ष्य' नास्ति-क. । 11. शिरसि-क. भो. । 12. हुं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. येत्-क. ख. । 14. संचारणतन्त्रप्रतिसिद्धं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 15. 'पुट' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. 'स्व' नास्ति-क. ख. । 17. वासोधाराध्येयमण्डलां-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 18. भोज्या-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 19. पदं-क. । 20. क्षरं पाथित्वा-क. ख. ।

चाध्येष्य^१ ॐ योगशुद्धाः^२ सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहमिति पठन् कमलावर्तेन(वर्त)-
मुद्रया संतोष्य तन्मुद्रोपसंहार आलिङ्गनाभिनयपूर्वकमनामिकया भूमि स्पृशन् ॐ
वज्र^३ मुरिति पठित्वा विसर्ज्य तच्चक्रमात्मनि प्रवेशयेत् । ततस्तत्र भूमिगतमदनं
वामानामिकया^४ गृहीत्वा तेन^५ हृज्जिह्वाशिरांसि हूं आः ॐकारोच्चारणपूर्वकं
अक्षयन्^६ तत्करगतमपि देवताचक्रमात्मनि प्रविष्टमालोकयेदिति हस्तेन पूजोक्ता ।
ततः ॐ^७ शुक्ल ॐकारपरिणतवज्रजिह्वादक्षिणश्रु(सु)वेणेतराहुतिं स्वनाभिकमल-
कर्णिकायामवस्थितज्वाला^८ मालाकुलमण्डलेषु जुहुयात् । इत्यध्यात्महोमशेषः ।

ॐ आः^९ उच्छिष्टवज्र अधितिष्ठेमं वलिं हूं स्वाहा । शून्यताकरुणाद्वये
त्रैधातुकचक्राकारज्ञानवह्नौ तु यथोपदेशं स्कन्धादीन्धनदहनान्निरुत्तरहोमः ।
शान्तिकपौष्टिकादिबाह्यहोमस्तु होमविधौ कर्मानुरूपविहितकुण्डकुसुमसमिध-
शोषणादिकमनुसृत्य [कार्यः] । विधयो विस्तरभयान्न लिखिताः । एवं तावत्
पूजावलिविधानादिसमेतं विस्तरेण भगवत्या भावनामण्डलं निर्दिष्टम् ।

^{१०} मध्यरुचिस्तु दिग्दलेषु डाकिन्यादयश्चतस्रः, विदिग्दलेषु पद्मभाण्डस्थ-
समयद्रव्याणि,^{११} मध्ये यथानिर्दिष्टा भगवतीति पञ्चात्मकं मण्डलं भावयेदिति ।
^{१२} वलिपूजादिकं तु यथायोगं स्वस्वमन्त्रैः पञ्चानां कर्तव्यम् । रक्षाचक्रादिकं पूर्ववदेव ।
ओडियानविनिर्गतक्रमेण पुनरियमूर्ध्वपादा भवति । ^{१३} निष्पत्तिबीजं हृदयादि-
मन्त्रास्त एव । डाकिन्यादयोऽपि तथैव ।

संक्षिप्तार्थी तु यथोक्तरूपां भगवतीमेव केवलां भावयति । पूजादिकं
यथोक्तं^{१४} भगवत्या विधेयम् । क्वचिदियं ^{१५} स्वहृच्चन्द्रस्थसितॐकाररश्मिभि-

1. प्ये-क. ख. ग. । 2. शुद्धः-भो. । 3. मुरिति-क. ख. । 4. काया-क. ख. । 5. हृद्वी-
क., हृद्व-ख., नास्ति-ग. घ., गृ. भो. । 6. येत्-क. ख. । 7. 'ॐ' नास्ति-भो. । 8. ज्वालां कुल-
चक्रेषु-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. आ-घ. । 10. मध्ये-क. ग. घ. । 11. द्रव्यादि-क. । 12. पूतिपूजा-
क. । 13. उत्पत्ति-भो. । 14. यथायोग्यं-भो. । 15. 'स्व' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

रानीतबुद्धादीन् पूजयित्वा यावच्छून्यतां विभाव्य चन्द्र^१वज्रश्च(स्य)वंबीजनिष्पन्ना पञ्चचन्द्रासना ^२भाव्यते ।

किञ्चेयमेव भगवती वज्रवैरोचनी वज्रयोगिनीत्युच्यते । अस्याश्च यथा-
गमं यथोपदेशं बहुप्रकारा आम्नायभेदाः । ^३तद्यथा—स्वनाभिस्थ-रंभवत्रिकोणाग्नि-
मण्डलोपरि रक्तवर्तुलारविन्दरक्तह्रींकारं दृष्ट्वा तत्सर्वपरिणामेन रक्तवर्णा^४मालीढ-
पदाक्रान्तशवां^५ मूर्ध्नि पिङ्गलकेशां चतुर्भुजां दक्षिणाभ्यां वज्राङ्कुशौ वामाभ्यां
खट्वाङ्गकपालौ तर्जनीपाशौ च धारयन्तीं बृहदुदरां कोलास्यां भगवती^६मात्मानं
भावयेत् । परिशिष्टरूपां पूर्ववदिति श्रीवज्रघोणा^७क्रमः ।

विशेषस्तु^८—ॐ ^९हूँ ह्रीं त्रै इति हृदयम् । ॐ वज्रवाराही आवेशय सर्व-
दुष्टान् ह्रीं स्वाहा [इति] ^{१०}उपहृदयम् । देवीयोग^{११}पुरःसरमेतल्लक्षणं जापात्
सिद्ध्यति न संशयः । ॐ आः ह्रीं हूं ^{१२}हः हः अनेन मन्त्रेण महामांसचूर्णेन धूपं
दद्यात् । पटाग्रत एक^{१३}विंशतिदिनैरभिमतं सिद्ध्यति । ॐ ह्रीं हूं हां हः हः हिः^{१४}
ह्रीः ह्रीः ह्रीः ^{१५}फैं फैंकारं दद्यात् । सर्वमारप्रशमनार्थं निशावलिः पञ्चोपचारेण
दातव्या । अभव्येषु न प्रकाशनीयोऽयं^{१६} विधिः । तेन वज्रयोगिन्योऽधितिष्ठन्ति ।
ॐ ह्रीं घातय सर्वदुष्टान् ^{१७}हूं फट् स्वाहा । अनेन प्रथमतो वलिं दत्त्वा वज्रघोणा-
साधनमिदमनुष्ठेयम् । प्रागुक्तमपि वलिविधानादिकमत्र^{१८} क्रियते । अधिकं हि
प्रशस्येत^{१९} इति ।

क्वचिदियं हृद्रक्तपद्मे आंकारजसूर्यस्थशि(सि)तह्रीं^{२०}काराधिष्ठितारुण-
पञ्चशूकवज्रपरिणता, सिता(त)लोहित^{२१}पद्मस्थसूर्यसुप्ताज्ञानपुरुषोपरि आलीढ-

१. 'वज्रश्च' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । २. भावयते-क. । ३. तथाहि-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ४. मालीढ-क. ख. । ५. वां ऊर्ध्व-भो. । ६. 'आत्मानं' नास्ति-भो. । ७. घोष-क. । ८. षन्तु-क. ख. । ९. ॐ ह्रीं हूं ह्रीं हां इति हृदयं-क., वैं ह्रीं हूं ह्रीं हां इति हृदयं-ग., ॐ ह्रीं हूं ह्रीं हां इति हृदयं-ख. घ., गृ. भो. । १०. 'उप' नास्ति-भो. । ११. यो पुरो मेतल्ल-क. ख. । १२. 'कै' इत्यधिक पाठः-क. ख. । १३. विंशत्या-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । १४. हः ह्रीः ह्रीः-क. । १५. हूं हूं हुंकारं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । १६. 'अयं' नास्ति-घ. । १७. हूं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । १८. मन्त्रः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । १९. येन-क. ख. । २०. ह्रीः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । २१. हितान्तस्थ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

पदस्थिता, सूर्यस्थ^१ रक्तह्रींकाराधिष्ठितः(त)सूर्यस्थवज्रहृदयो(या), विश्वपद्म-
सूर्यस्थो(स्था)क्षोभ्यो(भ्या)ऽभिषेकजा । अपरं सर्वं पूर्ववत् ।

तदनु नाभौ विश्वपद्मस्थारुणशुभ्रसूर्यमण्डले ह्रीः^२कारं^३ दृष्ट्वा तन्मन्त्रः(न्त्र)-
मालामक्षसूत्राकारां सितां चक्रभ्रमणयोगेन वदनविवरेण निश्चार्य बुद्धगुणगणमणि-
मन्त्रौषधिचन्द्रतारालिपिशास्त्रकलादिप्रभावमादाय नाभिविवरे प्रविशन्तीं स्वपरेषां
सर्वा^४ज्ञानदहनात्मिकां ध्यायात् । द्रुतादिदोषरहितं मन्त्रं जपेत् । मन्त्रः-ह्रीं^५ ह्रीं ।
यदोत्थातुकामो भवति, तदा^६ मन्त्रमालां नाभिस्थ^७ह्रींकारेऽन्तर्भाव्य पूजादिकं
कृत्वा यथासुखं विहरेत् । किञ्च, आःकारजसरोजदलाभ^८स्वजिह्वायां^९ रक्तह्रींकारं
ज्वलद्भास्वररूपं विभाव्य तत्र चित्तं स्थिरीकृत्य शतार्धगुलिकामालामक्षसूत्रेण
चतुःसन्ध्यं त्रिसन्ध्यं वा जपेत् ।

एवं जपभावनान्वितो योगी सप्तलक्षजापेन सर्वशास्त्रकलाभिज्ञो मेधावी^{१०}
सुग्राही गणानभिभवनीयो^{११}वादी महाकविश्च भवति । ज्वर^{१२}लूताडाकिन्यादिभिः
शोषद्रो(यि)तुमशक्यः । सिद्धे सत्यस्मिन् मन्त्रे एतन्मन्त्राभिमन्त्रिता कठिनी यस्य
हस्ते दीयते, स मूर्खोऽपि कविर्भवति । वश्ये^{१३} त्वेनां रक्तवर्णां विभाव्य विधिवदमृत-
स्वादं कृत्वा स्वनामाक्षरनिष्पन्नं साध्यं मन्त्रमालां(ला)निर्गतरश्मिभिराकृष्यानीतं
पुरोवर्तितं(नं) दृष्ट्वा चित्तमोः^{१४}कारपरिणत^{१५}रक्तचन्द्रमण्डलाकारमवलोक्य तन्म-
न्त्रमालानिर्गतां देवीं रक्तवर्णां^{१६} वामकरेण^{१७}ह्रीःकारजपाशधरां दक्षिणे रक्तोत्पल-
कलिकानिभवज्राङ्कुशधरां साध्यपुरोवर्तिनीं पश्येत् । ततः ॐ आः^{१८}ह्रीः अमुकस्य

-
1. सूर्यस्थ ह्रीः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. ह्रीं-क. ख. । 3. हृष्टो-क. ख., हृत्स्थो-ग. घ., गृ. भो. । 4. वीज्ञानान्धकार-भो. । 5. ह्रीं-क. ख., ह्रीः-ग. घ., गृ. भो. । 6. ता मन्त्रा-क. ख. । 7. ह्रींः काराऽन्तर्भा-क. ख., ह्रीः-ग. घ., गृ. भो. । 8. 'स्व' नास्ति-भो. । 9. 'रक्त' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. वीन्यद्-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. 'वादी' नास्ति-भो. । 12. ज्वरत-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 13. वश्यत्वेतां-ग. । 14. 'मोः' नास्ति-भो. । 15. 'मो' इत्यधिकं क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 16. वर्णा-क. ख. । 17. ह्रीं-क. ख., ह्री-ग. घ., गृ. भो. । 18. ह्रीं-क. ।

चित्तमाकर्षय^१ हूँ जः इत्याज्ञादानानन्तरं सा देवी विधिवत् साध्य^२ देहस्यान्तः प्रविश्य चित्तचन्द्रमण्डलं पाशेन संवेष्ट्य अङ्कुशेन चोदयन्ती स्वचित्ते प्रवेश्य मन्त्र-मालायामन्तर्भवेत् । ततस्तं साध्यं कृतकरपुटमेकान्तं परवशं साधकाभिमुखं किं करोमीति वदन्तं ध्यायादिति । एवं चतुःसन्ध्यं त्रिसन्ध्यं वा ध्यायेदचिरात् साध्यमवश्यं वशयतीति ।

क्वचित् पुनरियं विश्वपद्म^३चन्द्रस्थरक्तहूँकारपरिणता^४लीढप्रत्यालीढ-पदाक्रान्तशवा ऊर्ध्वज्वलितरक्तकेशं(शा) द्विभुजा दक्षिणेन कर्तितर्जनीका वामेन रक्तपूर्णकपालधरा^५शेषालङ्कारादिकं पूर्ववत् ।^६ ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये^७ ॐ^८ वज्र-वर्णनीये ॐ^९ वज्रवैरोचनीये हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् स्वाहा । मूलमन्त्रः । ॐ वज्रडाकिनीये ह्रीं हूँ फट् स्वाहा । हृदयमन्त्रः । ॐ वज्र^{१०}योगिनीये हूँ फट् स्वाहा । उपहृदयमन्त्रः । ॐ वज्रडाकिनीये इमं वलिं गृह्ण गृह्ण ह ह ह ह ख ख ख ख अ अ अ अ मम सिद्धि^{११} प्रयच्छ हूँ फट् स्वाहा । अनेन मन्त्रेण पूर्ववदमृतीकृत्य वलिर्देयः । विशेषत्वेनाष्टम्यादौ निशि श्मशाने दातव्यः । क्वचिदियं रक्तहूँकार^{१२}-जाता मुक्तकुन्तलकलापा दृश्यते, क्वचिच्छवरहिता । अधिमन्त्रास्तु त एव ।

क्वचित् स्वनाभिस्थशुक्लकमलसूर्ये(र्यं)स्थितसिन्दूरारुणधर्मोदयामध्ये पीतह्रीःकारजा^{१३} स्वयमेव कर्तितस्वमस्तकं वामहस्तस्थितां(तं) धारयन्ती, दक्षिणेन कर्ति, ऊर्ध्वविस्तृतवामबाहुः, अधोनमितदक्षिणबाहुः, प्रसारितदक्षिणपादा, संकुचितवामचरणा । कबन्धादवधूतीवर्त्मना निःसृत्यासृग्धारा तस्या मुखे पतति, अपरे ललनारसनाभ्यां निःसृत्य पार्श्वयोगिन्योर्मुखे प्रविशत इति भाव्य तत्र वाम-पार्श्वे श्यामवर्णा वज्रवर्णनी^{१४} वामेन कर्ति^{१५} दक्षिणेन कपालं बिभ्राणा^{१६} प्रसारित-

-
1. हूँ-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. शान्तः-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 3. सूर्यस्थ- भो. । 4. रक्तप्रत्या-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 5. परिशिवशादिकं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 6. ॐ ॐ ॐ-क. । 7. न्ये-क. । 8-9. 'ॐ' नास्ति-क. ख. । 10. वैरोचनीये-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. 'मे' इत्यधिकं-भो. । 12. कारं-ग. घ. । 13. ह्रींकारजात-क. ख., ह्रींकारजा-ग. घ., गृ. भो. । 14. दक्षिणेन-क. ख. । 15. वामेन-क. ख. । 16. बिभ्रती-क. ख. ।

वामपादा संकुचित^१दक्षिणपादा । दक्षिणपार्श्वे पीतवर्णा वज्रवैरोचनी दक्षिणेन कर्ति वामेन कपालं बिभ्रती प्रसारितदक्षिणचरणा संकुचितवामचरणा । अपरं पूर्ववत् । ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये ^२ॐ वज्रवर्णनीये ॐ वज्रवैरोचनीये हूँ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा । जापमन्त्रः ।

^३पूजोच्यते—चतुरस्रमण्डलस्थसूर्यस्योपरि धर्मोदयां लिखित्वा तन्मध्ये ह्रींकारं ^४च विचिन्त्य पूजयेत् । ^५तज्जाम् उक्तरूपां भगवतीं पूजयेत् । तत्र धर्मोदयामध्ये ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये इत्यादिमन्त्रेण प्रथममर्चयेत् । ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये ^६हूँ स्वाहा, इत्यनेनार्घादिकं दद्यात् । वामे ॐ वज्रवर्णनीये ^७हूँ स्वाहा । दक्षिणे ॐ वज्रवैरोचनीये हूँ स्वाहा [इति] पूजयेत् । तत ओडियाण-पूर्णगिरि-कामरूप^८-श्रीहट्ट-धर्म-संभोग-निर्माण-महासुख^९कायानां प्रत्येकं चतुर्थ्यन्तं नाम विदभ्यं ॐ कारादिस्वाहान्तेन पूजयित्वा पूर्ववत् विसर्जयेदिति । कर्मान्तरे त्वयं स्वदेह-त्रैधातुकविशुद्धं कूटागारमधिमुच्येत् । झटिति नाभिमण्डले द्विजा ^{१०}कर्तिकपाल-हस्ता अर्धपर्यङ्का ^{११}कृतताण्डवा जवाकुसुमसन्निभा भावनीया ।

कोलास्यं दक्षिणं^{१२} तस्याः क्रोधास्यं वाममेव च ।

सत्यद्वयविशुद्ध्या तु ^{१३}वक्त्रद्वयमुदाहृतम् ॥ इति ।

तदेवमादाय सिद्धोपदेशपरम्परायाता विनेयाशये(य)भेदादनन्ता भगवत्या आम्नाया बोद्धव्याः । ^{१४}दिङ्मात्रमिदं दर्शितम् । एषु च क्रमेषु क्रममेकमादाय श्रद्धादया^{१५}वान् निःसङ्ग[ः] समयसेवी निर्विचिकित्सां(त्सं) भावयन्नियमेन साधयति ।

उपदेशागता पूर्वपूजा लिख्यते । दशम्यां कुङ्कुमादिमार्जिते निर्मल-भाजने^{१६} सिन्दूरं पातयित्वा तन्मध्ये सुवर्णलेखन्या धर्मोदयामभिलिख्य तन्मध्ये

-
1. 'दक्षिणपादा' नास्ति—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 2. 'ॐ' नास्ति—भो. । 3. पूजाक्रमः—भो. । 4. 'च विचि'...पूजयेत्' नास्ति—भो. । 5. तज्जां'...दद्यात्' नास्ति—घ । 6. न्ये स्वाहा—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 7. 'हूँ' नास्ति—क. ख. । 8. कामाख्य—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 9. खाख्यानां—क. । 10. 'कर्ति' नास्ति—क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. कृता—क. ख. । 12. दक्षिणे—क. । 13. चक्र—क. । 14. द्वित्रि तत्र—क. । 15. श्रद्धादयो—क. । 16. भाजन—क. ख. ।

ह्रींकारं लिखेत् । ततः पार्श्वतो^१ नन्द्यावर्तमुद्रां लिखित्वा जलकुसुमैरर्चयेत् । ओडियानप्रभृतिपीठे(ठ)चतुष्टयं कायचतुष्टयं च पूर्ववत् पूजयेत् । भक्ष्यपेयादिकं समयद्रव्यं च यथालाभं निवेदयेत् । कुमारीं च पूजयेत् । अयं च विधि^२नर्गनेन^३मुक्तकुन्तलेन दक्षिणाभिमुखमुपविश्य सुगुप्तमनुष्ठेयः । अन्यथा सिद्धिहानिर्नाना-विधाश्च रोगा जायन्ते । ततो वलिं दत्त्वा अभिमतसिद्धि^४प्रार्थनां कृत्वा विसर्ज्य सिन्दूरनैवेद्यादिकं कुमारिकाणामविधवास्त्रीणां वा दद्यात् । किञ्च, दशम्यामष्टम्यां चतुर्दश्यां वा यत्किञ्चित् पुष्पफलतैलताम्बूलतण्डुलशाकपर्णदधिकाष्ठलवणसिन्दूर-^५मत्स्य^६मांस(सं) मामकीप्रभृती(ति)योषिज्जनेन विक्रीयते, ततः किञ्चिद्यत्किञ्च-द्यथाशक्ति क्रीत्वा यथायोगं प्रसाध्य पूर्ववत् सिन्दूरनिर्मितधर्मोदयां बीजाक्षरादिकं लिखित्वा सम्पूज्य समीहितसिद्धिं प्रार्थ्य विसर्जयेत् ।

अतः परं पूर्ववत् स्वप्ने वज्रयोषितामाश्वासो^७ भवतीत्युपदेशतः^८ । अपि चात्यन्तनिर्मि(मृ)ष्टदर्पण^९तलेऽष्टम्यां सिन्दूरं पातयित्वा तत्र धर्मोदयमुद्रां लिखित्वा कोणेषु बाह्येषु^{१०}वंबीजं विलिख्य मध्ये मन्त्रं च, धर्मोदयाबाह्येषु चतुःपार्श्वेषु वामावर्तेन नन्द्यावर्तं लिखित्वा पुष्पादिभिः संपूज्य यथाशक्ति मन्त्रं^{११}परिजप्य जपसिन्दूरं तदेकत्र भाण्डे स्थापयेत् । एवं षण्मासं यावत् कुर्यात् । ततो लाङ्गलियो-
(लीये) विष^{१२}नलिकामध्येतत् सिन्दूरं प्रक्षिप्य श्मशाने निखनेत्^{१३} । वलिं पूजां च विधाय मन्त्रं जपेद् यथाकामम् । एवं प्रत्यहं मासमेकं कुर्यात् । तत्सिन्दूरेण नन्द्या-वर्तकृतितिलकं विधाय भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशेत् ।^{१४}यत्र तत् तिलकं संक्रान्तं दृश्यते, तां^{१५}स्त्रीं यत्नेनाराधयेदिति । एवं नन्द्यावर्तेन सिद्धिः(द्ध)शबरपादीयवज्रयोगि-न्याराधनविधिः ।

1. पार्श्वयोनौ-क. ख. । 2. धिनानेन-क. । 3. विमुक्त-क, ख. । 4. सिद्धौ-ग. घ. । 5. मद्यादि-भो. । 6. 'मांस'.....'किञ्चित्' नास्ति-भो. । 7. माश्चासौ-क. । 8. देशताः-ग.घ. । 9. दर्प-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 10. देवीबीजं-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । 11. 'परिजप्य' नास्ति-क. ख. । 12. विषे-क. ख. । 13. निखये-क. ख. । 14. यत्र तु-क. ख, यदा-भो. । 15. 'स्त्री' नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. ।

अत्र च योगिनीनये स्थितेन पूजामन्त्रजप^१भोजनादिकं गुप्त्या वामेन^२ करणीयम् । पीठादियात्रां कुर्वतां वज्रडाकिनीरुद्दिश्य ग्रामनगरादौ प्रदक्षिणं वामावर्तेन कर्तव्यम् । गच्छतां प्रथमं वामपादं पुरः प्रसार्य गन्तव्यम् । यथामिलिताः पञ्चक्रामा वैरोचनादिविशुद्ध्या निर्विचिकित्स^३मुपभोक्तव्याः^४ । सुशीलानपराधयो- रभिचारकर्म न कर्तव्यम् । योषितो न ताडि(डयि)तव्याः, न क्रोद्धव्याः, न चावमन्त- व्याः, विशेषेण ^५षण्मुद्राधारिण्य इति बहुप्रकाराः समयास्तन्त्रानुसारेण बुद्ध्वा परि- पालनीयाः । ^६मन्त्रादयोऽपि तत एवावगम्य प्रयोक्तव्याः । विस्तरभयान्न लिखिताः । किं बहुना—

गुरुर्बुद्धो गुरुर्धर्मो गुरुः संघस्तथैव च ।

^७गुरुर्वज्रधरः श्रोमान् गुरुरेवात्र कारणम् ॥

गुरुमाराधयेत्तस्माद्बुद्धत्वफलवाञ्छति(या) ॥ ^८इति ।

दिधायेदं विश्वं गुणकुसुमसम्मोदसुभगं

समीह[न्ते]^९भोक्तुं यदि झटिति सन्तः शमफलम् ।

तदोपेयुर्यत्नादभिसमयकल्पद्रुमभवां

नवामुन्मीलन्तीमतिरसवतीं मञ्जरिमिमाम् ॥

तन्त्राभिसमयोपायसाधनेभ्यो गुरोरपि ।

वचनात् किञ्चिदाकृष्य निर्मितेयमनाकुला ॥

यन्मयासादितं पुण्यमेतन्निर्माणसम्भवम् ।

अनेन भजतामुच्चैर्जगद् वज्राङ्गनापदम् ॥

^{१०}श्रीवज्रयोगिनीसाधनमभिसमयमञ्जरीनाम महाचार्य-

शुभाकरगुप्तरचितं समाप्तम् ॥

१. भाजना-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । २. करेण-क., तरेण करेण-ख. ग. घ., गृ. भो. । ३. त्सामु-क. ख. । ४. इतः परम्-‘देवतां मन्त्रं च पृथक्त्वेन न गृह्णीयात् । बुद्धं बोधिसत्त्वांश्च भगवत्याऽधि- मुक्तिकारणादष्टपदमन्त्रेण पूजा वन्दनं च कर्तव्यम् । मन्त्रं मुद्रां च स्वयं न कल्पयेत्, न च नाशयेत्’ इत्यधिकः पाठः-भो. । ५. ‘षण्’ नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ६. यन्त्रा-भो. । ७. ‘गुरुर्व’..... विश्वं’ नास्ति-ख. । ८. ‘इति’ नास्ति-क. ख. ग. घ., गृ. भो. । ९. भाक्तु-क. ख. । १०. इति श्रीगुह्यसमये तन्त्रे व्याख्यातृमहापण्डितशाक्यरक्षितपादविरचिताभिसमयमञ्जरी समाप्ता-क. ख., व्याख्यातृ...माप्ता-ग., व्याख्यातृ...शान्तरक्षित...समाप्ताः-घ. ।

उद्धृतग्रन्थ-ग्रन्थकारानुक्रमणी

अन्यत्रोक्तम्	१४
इति केचित्	८
इति प्रवचनात्	५
तदुक्तम्	१२, १७
लूयीपादाभिसमयक्रमेण	१५
लूयीपादाभिसमये	८
वज्रावल्यामस्मद्गुरुभिः	१५
संचारतन्त्रे	२३
सिद्धशबरपादीयवज्रयोगिन्याराधनविधिः	२९



श्लोकार्ध-सूची

	पृ०		पृ०
अतस्तद्भ्रमणे नैव	१७	देव्यः प्रमाणं समयं प्रमाणं	१९
अतो बाह्यं निराकृत्य	१७	नमोऽस्तु वज्रयोगिन्यै	१
अनेन भजतामुच्चै	३०	ना(न) किञ्चिद्विद्यते तत्र	४
एतेन सत्येन भवेयुरेता	१९	बिभर्ति मूर्तिवैचित्र्यं	१
कण्ठिकारुचक	८	बिभ्राणा कुलिशं	१
कोलास्यं दक्षिणं तस्या	२८	भवशमसमसङ्गा	२०
क्षीयन्ते घातवस्तेषां	१७	भूतकोटिं तथा योगी	१२
गुरुतरकरुणाम्भः	२०	मायां विधाय मायावी	४
गुरुमाराधयेत् तस्माद्	३०	यज्ञोपवीतं भस्मेति	८
गुरुर्बुद्धो गुरुर्धर्मो	३०	यथा हि जातमात्रेण	११
गुरुर्वज्रधरः श्रीमान्	३०	या संबोधिसुधा	१
चतुर्विंशतिभेदेन	१७	विधायेदं विश्वं	३०
तथाहं स्नापयिष्यामि	११	श्वासवातो यथाऽऽदर्श	१२
तदोपेयुर्यत्नादभि	३०	सत्यद्वयविशुद्ध्या तु	२८
तन्त्राभिसमयोपाय	३०		

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

अक्षर	१८, २६	अर्धचन्द्र	५, १२
अक्षरमाला	१३	अर्धपर्यङ्क	१६, २८
अक्षसूत्र	२७	अर्बुद	९, १८
अक्षोभ्य	१, २, ११, २२, २७	अवधूती	१३, १९, २७
अक्षोभ्यवज्र	२	अविद्या	७, १६
अग्निमण्डल	११, २५	अविसंवादन	१७
अङ्कुश	३, १०, २७	अविस्मरणशीलता	१७
अचला	१७	अष्टदल	७, १०
अद्वैततत्त्व	७	अष्टपत्र	८
अद्वैतमहायोग	१४	अष्टपदमन्त्र	४, २०, २२, २३
अधिमन्त्र	२७	अष्टपदार्चनमन्त्र	११
अधिमोक्ष	१, २१	अष्टपूजामन्त्र	१३
अध्यात्मयोगी	१७	अष्टलोकधर्म	७
अध्यात्महोम	२४	अष्टविज्ञान	८
अपस्मार	२, २०	अष्टशृङ्ग	५
अभिचारकर्म	३०	अष्टश्मशान	२०
अभिमुखी	१७	अष्टस्तम्भ	६
अभिषेक	१, ११, २०, २६	अष्टाङ्गमार्गविशुद्धि	६
अभिसमय	८, ३०	अहङ्कार	२१
अभिसमयमञ्जरी	३०	आकर्षणी	३, २३
अभेद्य	५	आकाशधातु	३
अमनसिकार	१७	आकोटन	६
अमिताभ	२, ११, २२	आकोटनमन्त्र	६
अमृत	९, ११, २०, २३, २६, २७	आत्मभावनिर्यातन	४
अमृतभाण्ड	१९	आदर्श	४, ७, १२
अमृतोदक	२१	आदर्शज्ञान	७
अमोघसिद्धि	२, ११, २२	आधाराधेयचक्र	२३
अरुण	३, २५-२७	आनन्द	१२
अर्घ	१०, १९, २८	आम्नाय	२५, २८
अर्चिष्मती	१७	आलय	८
अर्थाध्येषणा	४	आलि	१, ७, ८, १९, २१

आलिङ्गनाभिनय	२०, २२, २४	कबन्ध	२७
आलीढ	८, २७	कमल	७, ११, २४, २७
आलीढपद	३, ८, २५	कमलाभिनय	४
आलीढपदाक्रान्त	२५	कमलावर्तमुद्रा	२०, २२, २४
आलीढासन	१०	करुणा	१, ४, २०, २४
आसन	१२	कर्णिका	७, १८, २३, २४
आहुति	२४	कर्ति	३, ८, १०, १६, २७, २८
इन्द्रियविशुद्धि	७	कर्तिका	९
ईर्ष्या	३	कलश	७
ईर्ष्यावज्र	२, ३	कला	२६
उच्चाटन	१४	कलाप	१, २७
उच्छेद	८	कलिङ्ग	९, १८
उपक्षेत्र	९, १८	कल्पद्रुम	३०
उपछन्दोह	९, १८	कवचद्वय	१०
उपपीठ	९, १७, १८, २१, २३	कंसीका	३
उपमेलापक	९, १८	काकास्या	६, ९, १५-१७, १९
उपश्मशान	९, १८	काञ्ची	१८
उपहृदय	२२, २३, २५	कामरूप	९, १८, २८
उपहृदयमन्त्र	१३, २७	काय	७, ८, ११, २८
उपेक्षा	४	कायचक्र	९, १२, १६, १८
उपेक्षासंबोध्यङ्ग	१७	कायचतुष्टय	२९
उलूकास्या	९, १५, १७	कायमण्डल	१७, १९
ऊर्ध्वविकचमुद्रा	२	कायवाक्चित्तवज्र	६, २१
ऋद्धिपाद	६	कायानुस्मृत्युपस्थान	१६
एकशूक	७	कालरात्रि	८, १२
ऐरावती	९, १५, १६, १८	कालि	१, ७, ८, १९, २१
ऐश्वर्यवज्र	२, ३	कीलक	६
ओडियान	९, १८, २४, २८, २९	कीलनमन्त्र	६
ओड्र	९, १८	कुङ्कुम	२८
कक्ष	१८	कुण्ड	२४
कटच्छु	४	कुन्तल	१, २७, २९
कण्ठिका	७, ८	कुलता	१८
कपाल	१, ३, ४, ७, -११,	कुलिश	१
	१३, १५, १६, २५, २७, २८		

कुलूत	९	चक्रद्वय	२३
कुलेश	११	चक्रवर्तिनी	९, १५, १७, १८
कुसुम	७, २४	चक्रवर्णिणी	९, १५, १७, १८
कृत्यानुष्ठानज्ञान	७	चक्रवेगा	९, १५, १७, १८
कोशल	९, १८	चक्रावली	९
कौशीद्य	१७	चक्री	७
क्रोधकराल	१३	चण्डाक्षी	९, १५, १६, १८
क्रोधमूर्ति	१४	चण्डिका	१०, २२
क्लिष्टमनोविज्ञान	८	चतुरशीतिसाहस्रधर्मस्कन्ध	७
क्षितिगर्भ	२	चतुर्देवी	७
क्षेत्र	९, १८	चतुर्द्वार	६
खग	१३	चतुर्महाभूत	२१
खगर्भ	२	चतुर्भार	७
खगानना	९, १५, १७, १८	चतुस्तोरण	७
खट्वाङ्ग	१, ३, ४, ७, ८, १०-१३,	चतुःसन्ध्य	२६, २७
१५, १६, २५		चन्द्र	१९, २४-२७
खङ्गकर्ति	३	चन्द्रमण्डल	७, २६, २७
खण्डरोहा	८, ९, १५-१८	चन्द्रार्क	७
खर्वरी	९, १५, १६, १८	चन्द्रासन	२५
खेचरी	१८	चाण्डाल	१२
गगनगञ्ज	६	चित्त	७, ११, १२, २६, २७
गणचक्र	२३	चित्तऋद्धिपाद	१६
गणमण्डल	२२	चित्तचक्र	९, १२, १५, १८
गुदद्वार	१९	चित्तानुस्मृत्युपस्थान	१६
गुरु	१, ३, १५, ३०	चित्ताम्बु	२०
गृहदेवता	९, १८	छन्दऋद्धिपाद	१६
गोदावरी	९, १८	छन्दोह	९, १८
गौरा	८	छोटिकादान	५
ग्राहकविशुद्धि	४	जप	२९, ३०
ग्राह्यविशुद्धि	४	जपभावना	२६
घण्टा	२, ३, ५, १०, २०	जम्भन	१३
चक्र	२, ६, ११, १६, २२, २४, २६	जवाकुसुम	२८
चक्रकर्ति	३	जानुद्वय	१८

जाप	२२	व्यक्षरमन्त्र	२३
जापमन्त्र	२८	दक्षिणकर्ण	१८
जालन्धर	९, १८	दधि	२९
जालामुद्रा	१०	दर्पण	४
जिनचिरस्थिति	४	दशकुशल	१७
जिनमार्गाश्रयण	४	दशभूमि	१७
ज्ञानचक्र	१०, १२	दाडिमी	७
ज्ञानमण्डल	२१	दिक्पाल	२०, २१
ज्ञानवह्नि	२४	दीपमाला	१३
ज्ञानसंभार	४	दीपयष्टि	४
ज्ञानामृत	१०, ११	दुष्टतर्जन	७, ९
डाक	२, २०	द्वरङ्गमा	१७
डाकिनी	२, ८, ९, ११- १५, १९, २०, २२-२४, २६-२८	देवताचक्र	२२, २४
		देवताऽङ्गकार	१६
तत्त्व	१६	देवीकोट	९, १८
तथता	१, २, ६	देवीयोग	२५
तथागत	६, ११, १४	द्रुमच्छाया	९, १५, १६, १८
तथागतहृदय	११	द्वारपाल	१९
तर्जनी	५, ७, १५, २२, २५	द्वेषवज्र	२, ३
तर्जनीक	१५, १६, २७	घनु	५
ताण्डव	२८	घर्म	४, २८, ३०
तारा	३, २६	घर्मचक्रप्रवृत्त्यर्थबुद्धयाचना	४
तिलक	२९	घर्मता	४, २१
त्रिकोण	५	घर्मधातु	३, ६
त्रिचक्र	१, १९, २३	घर्मप्रविचयसंबोध्यङ्ग	१७
त्रिनेत्र	८, १०	घर्ममेघा	१७
त्रिशकुनि	९, १८	घर्मानुस्मृत्युपस्थान	१६
त्रिशिखा	८	घर्मोदय	४, ६, २७-२९
त्रिसन्ध्य	२६, २७	घर्मोदयमुद्रा	२९
त्रैधातुक	५, २४, २८	घातु	१७, २३
त्रैलोक्य	११, १३, १४	ध्यानचतुष्टय	७, २०
त्रैलोक्योदर	१४	नन्धावर्तमुद्रा	२९
व्यक्षर	११, २०-२२	नरमुण्ड	१६
		नरशिरोमाला	१३

नर्तेश्वरी	३, २३	पद्मकृति	३
नाडी	१८, १९	पद्मजालिनी	३, २३
नाडीद्वय	१२	पद्मभाण्ड	२४
नाथ	२०	पद्मावली	९
नाद	५, ६, १२	परमसिद्ध	१४
नाभि	६, ७, १०-१२, १८, १९,	पर्ण	२९
२१, २४-२६		पाण्डरा	३
नाभिकमल	१२	पातनी	३, २३
नाभिमण्डल	२८	पातालवासिनी	१८
नायिका	१५, १९	पादपृष्ठ	१८
नासाग्र	१८	पापदेशना	४, २२
नासापुट	१९	पाश	३, १०, २५, २७
निर्वाणिकामना	४	पीठ	९, १७, १८, २१, २३, ३०
निर्विचिकित्सा	२८, ३०	पीठचतुष्टय	२९
निष्पत्तिबीज	२४	पीत	२, ३, ५, १०, १५, २२, २७, २८
नील	३, ५, १०, १५, २२	पुण्यसंभार	४
नीलाष्टार	९	पुण्यानुमोदन	४
नैरञ्जना	१९	पुल्लीर	९, १८
नैरात्म्य	८, १७	पूजावलि विधान	२४
पञ्चकाम	३०	पूर्णगिरि	२८
पञ्चचक्र	१२	पृथग्जन	६
पञ्चज्ञान	७	प्रचण्डा	९, १५, १६, १८
पञ्चतथागत	८	प्रज्ञाबल	१६
पञ्चदलकमल	२२	प्रज्ञेन्द्रिय	१६
पञ्चप्रदीप	८, ११	प्रणिधान	५, २०, २२
पञ्चमुद्रा	३, ७, ८	प्रत्यवेक्षणाज्ञान	७
पञ्चरश्मि	१	प्रत्यालीढ	२७
पञ्चशूक	५, ७, २५	प्रभाकरी	१७
पञ्चामृत	११, २१, २३	प्रभावती	९, १५, १६, १८
पञ्चाशदक्षर	८	प्रभास्वर	५, १२, २१
पञ्चोपचार	२५	प्रमुदिता	१७
पताका	५, ७	प्रवचन	५
पद्म	२, ६, ८, १०, ११, १५,	प्रसङ्गिसंबोध्यङ्ग	१७
२१, २३, २५		प्राणापान	१२

प्रीतिसंबोध्यङ्ग	१७	मणि	८,२६
प्रेत	२,२०	मण्डल	५,१५,२२,२४,२८
प्रेतपुरी	९,१८	मण्डलचक्र	३,५,११,१२,१५,१९-२१
फेनबुद्बुद	१	मण्डलनायिका	८
बाहुदण्ड	७	मदन	२३,२४
बाह्यचक्र	१२	मन्त्र	१४,१५,१९,२१-
बाह्ययोग	१७		२६,२९,३०
बाह्यहोम	२४	मन्त्रचतुष्टय	६
बिन्दु	५,६,१२	मन्त्रत्रय	२१
बीज	३,७,१०-१३,२०,	मन्त्रदेवता	१०
	२२,२३,२५,२९	मन्त्रमाला	२६,२७
बीजाक्षर	११,२३,२९	मन्त्ररश्मि	५,६
बुद्ध	१,३,१३,२५,२७,२८	मरु	९,१८
बुद्धगुण	७,२६	मलय	९,१८
बुद्धत्व	३०	मस्तक	२७
बुद्धवचन	१७	मस्तकपृष्ठ	१८
बोधि	१,१६	महाकरुणा	७
बोधिचित्त	१,८	महाकवि	२६
बोधिचित्तोत्पाद	४	महाकाय	५
बोधिसत्त्व	३	महाचार्य	३०
ब्रह्ममुण्ड	३,१०	महातेजस्	८
ब्रह्माण्ड	५	महानासा	९,१५,१६,१८
भग	३०	महापशु	१४
भगवती	१,३,७,१२,१३,१५,१७,	महापिशित	१३
	२१-२५,२८	महाबला	१५,१७,१८
भानुमण्डल	१०	महाबोधि	१९
भावनामण्डल	२४	महाभैरवा	९,१६,१८
भूचरी	१८	महाभैरवी	१५
भूत	२,२०	महामांस	१४,२५
भूतकोटि	१२	महामुद्रा	१४
भूस्पर्शमुद्रा	२	महायोगेश्वर	१३
भैरव	८,१२	महाराग	७
भ्रूमध्य	१८	महावज्र	१३
मञ्जरि	३०	महाविद्येश्वर	१३

महावीर	१४	मौली	८
महावीर्या	९, १५, १७, १८	यक्ष	२, २०
महासमुद्र	१४	यमदंष्ट्रिणी	९, १५, १७
महासुख	४, ६, ७, ११, २०, २८	यमदाढी	६, ९, १५-१७, १९
महासुखचक्र	१२, १९	यमदूती	९, १५, १७
मात्सर्य	३	यममथनी	९, १५, १७, २२, २३
मात्सर्यवज्र	२	यामिनी	१०, २२
मामकी	३, २९	युगनद्धसमाधि	१२
माया	४, १६	योगिनी	१, १५, २१, २३, २७
मायावी	४	योगिनीनय	१७, ३०
मायोपम	१	योगी	१, १२, २२, २६
मारण	१३	योगेश्वर	१४
मारणी	३, २३	रक्त	२-५, ७-१०,
मालव	९, १८		१६, २१-२३, २५-२७
मालामन्त्र	१३	रक्ताष्टार	९
मालासूत्राकर्षणन्याय	१२	रक्षाकवच	१०
मिथ्यादृष्टि	७	रक्षाचक्र	२४
मीमांसाऋद्धिपाद	१६	रक्षापञ्जर	८
मुक्तकेश	३, ७, ८	रक्षावज्रपञ्जर	८
मुक्तकेशी	१०	रज	८
मुण्डत्रय	११	रत्नत्रय	१६
मुण्डमाला	८	रत्नत्रयशरणगमन	४
मुदिता	४	रत्नसम्भव	२, ११, २२
मुद्रा	१९, २०, २२, २४	रविमण्डल	३
मुद्राषट्क	८	रविसोमसम्पुट	११, १२
मुरजा	३	रश्मि	३, ७, १०, ११, २१, २४, २६
मूलमन्त्र	२७	रश्मिनलिका	११
मेखला	७, ८, १४	रश्मिरेखा	११
मेढ्र	१८	रसना	२७
मेलापक	७, ९, १८	रसपात्र	४
मैत्री	४	रसातल	५
मोहन	१३, १४	राग	१
मोहनी	१०, २२		
मोहवज्र	२, ३		

रागवज्र	२	वज्रपाणि	२
रामेश्वर	९, १८	वज्रपीठ	१९
रुचक	७, ८	वज्रप्राकार	५, ६
रुधिरप्रिय	८	वज्रबन्ध	५
रूप	२	वज्रमाला	८
रूपस्कन्ध	१६	वज्रमुद्गर	६
रूपिणी	८, १२, १५, १६	वज्रमुष्टि	७
लङ्केश्वरी	९, १५, १६, १८	वज्रयोगिनी	१, २५, २७, २९, ३०
लम्पाक	९, १८	वज्रयोषित्	२९
लय	१२	वज्ररश्मि	५
ललना	२७	वज्रवर्णनी	२७, २८
ललाट	८, १०, १९	वज्रवाराही	७, १३, १७, २३, २५
लामा	८, १५, १६	वज्रवितान	५
लास्य	३	वज्रविलासिनी	१, १०
लास्याभिनय	३	वज्रवैरोचन	१३
लिङ्ग	१८	वज्रवैरोचनी	२१, २५, २७, २८
लिपिशास्त्र	२६	वज्रशर	५
लूयीपादाभिसमय	८, १५	वज्रशरीर	१४
लूयीपादोक्त	१०	वज्रशुद्ध	२१
लोकधातु	१	वज्रसत्त्व	२, २२
लोकेश्वर	२	वज्रहस्त	१३
लोचना	३	वज्रहृदय	२६
लोहित	२५	वज्राङ्कुश	२५, २६
वक्त्र	२, १०, १९	वज्राङ्गनापद	३०
वक्त्रद्वय	२८	वज्राञ्जलि	२, १९
वज्र	३, ५, ६, १३, १५, १९, २५	वज्रावली	८, ९, १५
वज्रकृति	३	वज्रासन	१३, १४
वज्रकील	६	वरुण	५
वज्रघोणा	२५	वर्तुल	५, ६, २५
वज्रजिह्वा	२४	वलि	२, १९, २०, २५, २७, २९
वज्रज्वाला	६	वलिमन्त्र	२
वज्रडाकिनी	२, १९, २७, ३०	वह्नि	५
वज्रधर	६, ७, ३०	वंशा	३
वज्रपञ्जर	५, ६	वाक्	७, ११, २१

वाक्चक्र	९, १२, १५, १८	शताक्षर	२०-२३
वाग्विशुद्धि	१	शतार्धगुलिका	२६
वायुधातु	३	(सिद्ध) शबरपाद	२९
वायुमण्डल	११	शरजाल	५
वायुवेगा	९, १५, १६, १८	शरणगमन	४
वाराही	१०	शव	१, २५, २७
विज्ञान	१, २	शशिचक्र	१२
विज्ञानस्कन्ध	१६	शाक	२९
विद्या	६	शान्तिक	२४
विद्याराज	५	शाश्वत	८, ११
विद्वेष	१४	शिखा	१०, १८
विमलमुद्र	६	शिखाभ	४
विमला	१७	शिर	७, ८, ११, १२, १८, २२-२४
विश्वपताका	७	शुक्ल	२, ३, ७, ९-११, १९, २२, २७
विश्वपद्म	२६, २७	शुक्लवज्र	११, २१
विश्ववज्र	२, ४-८	शुक्लाष्टार	९
विश्वान्न	६	शुभाकरगुप्त	३०
विष	२९	शूकरास्या	९, १५, १७
वीणा	३, १०, २०, २२	शून्यता	१, ८, १२, २४, २५
वीर	१, १०	शून्यताचक्र	१८
वीरमती	९, १५, १६, १८	शून्यताज्ञान	५
वीराद्वैत	१४	शून्यताभावना	८
वीरेश्वरी	१०	शून्यतासमाधि	५
वीर्य	१६	शूरङ्गम	६
वीर्यऋद्धिपाद	१६	शूलाकार	६
वीर्यबल	१६	शौण्डिनी	९, १५, १७, १८
वीर्यसंबोध्यङ्ग	१७	श्मशान	१, ९, १२, १८, २७, २९
वीर्येन्द्रिय	१६	श्मशानाङ्गार	१४
वेदना	२	श्मशानाष्टक	८
वेदनानुस्मृत्युपस्थान	१६	श्यामादेवी	९, १५, १६, १८
वेदनास्कन्ध	१६	श्रद्धाबल	१६
वैडूर्य	५	श्रद्धेन्द्रिय	१६
वैरोचन	१-३, ६, ११, २२, ३०	श्रीहृद्	२८
शस्त्र	४		

श्रोत्र	२,८	सराव	८
श्वानास्या	९,१५,१७	सर्वज्ञता	१६
श्वासन	९	सर्वनीवरणविष्कम्भी	२
षड्देवी	१०	सर्वलोकधातु	८
षण्मुद्रा	८,३०	सर्वाकारज्ञता	२
षोडशदेवी	३,१०	सर्वायतन	२
सञ्चारिणी	१०,२२	सहज	१२
सत्यद्वय	७,१२,२८	संघ	३०
सप्तत्रिंशद्वोधिपाक्षिकधर्म	१६	संचारतन्त्र	२३
सप्तरत्न	२२	संज्ञा	२,१६
सप्तविधानुत्तरपूजा	४	संत्रासिनी	१०,२२
सप्तसंबोध्यङ्ग	७	संपुट	७
समता	२१	संबोधि	१,१७
समताज्ञान	७	संभोग	२८
समन्तभद्र	२	संस्कार	२
समय	२,१२,१९-२१,३०	संस्कारस्कन्ध	१६
समयचक्र	१०,११	संहरण	७,१३
समयद्रव्य	२४,२९	साधक	२७
समयसेवी	२८	साधन	२५,३०
समाधि	१७	साधुमती	१७
समाधिचतुष्टय	६	सित	२,१०,२५,२६
समाधिबल	१६	सिद्ध	२६,२८
समाधिसंबोध्यङ्ग	१७	सिद्धरस	८
समाधीन्द्रिय	१६	सिद्धि	२९
समिध	२४	सिन्धु	९,१८
सम्यक्कर्मान्त	१७	सिंहविक्रीडित	६
सम्यक्प्रहाण	६,१७	सुगुप्त	२९
सम्यक्सङ्कल्प	१७	सुदुर्जया	१७
सम्यक्समाधि	१७	सुभद्रा	९,१५,१६,१८
सम्यक्स्मृति	१७	सुमेरु	५,२१
सम्यगाजीव	१७	सुराभक्षी	९,१५,१६,१८
सम्यग्दृष्टि	१७	सुवर्णद्वीप	९,१८
सम्यग्वाग्	१७	सुविशुद्धज्ञानालोक	८
सम्यग्व्यायाम	१७		

सुविशुद्धधर्मधातुज्ञान	७	स्वपुण्यपरिणामना	४
सुवीरा	१५, १७, १८	हयकर्णा	९, १५, १८
सूर्यमण्डल	७, ८, १९, २६	हरित	२-५, १०, २२
सौराष्ट्र	९, १८	हस्तपूजा	२२
स्कन्ध	१, २४	हस्तपूजाविधि	२३
स्कन्धद्वय	१८	हारार्धहार	७
स्तनयुगल	१८	हास्य	३
स्तम्भन	१३, १४	हिमालय	९, १८
स्फटिक	५	हृत्	२, १०, १९, २०, २२-२५
स्फरण	१३	हृदय	१०, १८, २२, २४, २५
स्फरणयोग	६	हृदयमन्त्र	१३, २७
स्मृतिबल	१६	हृदयोपहृदय	१२, १३
स्मृतिसंबोध्यङ्ग	१७	हेयोपादेय	१६
स्मृतीन्द्रिय	१६	हेरुक	१४
स्मृत्युपस्थान	६	होम	२०, २४
स्वचित्त	५, २७		



༄༅། །དཔལ་རྫོང་རྒྱལ་འབྱོར་མའི་སྐྱབ་པ་བས་མངོན་པར་
རྟོགས་པའི་སྒྲིམ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ། །

མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྡེ་མ།

༡༩། ཁྱེད་ཀྱི་སྐད་དུ། དབྱིས་མལ་མ་རྒྱུ་རོ། བོད་སྐད་དུ། མངོན་པར་རྟོགས་པའི་
སླེ་མ། དཔལ་རྟོ་རྟེ་ཕག་མོ་ལ་བྲུག་འཆལ་ལོ། །

ཡོང་ཉིང་སྒྲིང་ཇེའི་བདག་ཉིང་ཅན།

གང་ཞིག་འགྲོ་བའི་བསམ་དབྱི་བས།

སྒྲ་ཚོགས་སྒྲ་ནི་རྣམ་པར་འཛིན།

རྟོ་རྒྱུ་ལྟེན་པ་འབྱོར་མ་ལ་འདུད།

ཡང་དག་བྱང་རྒྱལ་བདད་རྩིས་རབ་བཀྲུས་² དབང་གིས་ཀྱི་མེད་གསལ་མཛད་གང་། །

མྱེ་བོ་ག་དལ་བྱ་དག་ལ་ཆགས་སྤྱིར་ཉི་ཤང་སྤྱི་རོལ་དམར་པོར་ཕྱོན།

མི་ཟད་ལོད་ཅན་རྩི་རྩི་ཐོད་པ་དང་མི་དྲི་མེད་ཁྱེད་ཀྱི་བསྐྱེལ་སྤྱོད།

བཅོམ་ཐུན་རྟོ་རྩེ་རེལ་མ་དེས་ནི་བྱིད་ལ་སྤྱན་སྤུམ་ཚོགས་གྲུང་ཅིག

[illegible]

ལྷན་པས་དཀྱར་བརྟེན་པ། རིན་ཆེན་འབྲུང་ལྷན་དང་། ལྷང་བ་མཐའ་ཡས་དང་རོན་ཡོད་
 ལྷན་པ་ནམས་ཀྱི་ཕྱག་གཡམས་རིལ་བ་དང་བཅས་པས་རིན་པོ་ཆེ་དང་། བད་མ་དམར་
 པོ་དང་སྒྲ་ཚྭ་གས་རྩོམ་གདངས་པ་^༡། གཡོན་པའི་ཕྱག་ནམས་དྲིལ་བྱ་དང་བཅས་ཏེ་.....
 ཕྱགས་ཀར་སོན་པའོ། །རྩོམ་སེམས་དབའི་ཕྱག་གཡམས་རིལ་བ་དང་བཅས་པས་ཕྱགས་
 ཀར་རྩོམ་བསྐྱམས་པ། དྲིལ་བྱ་དང་བཅས་ཏེ་ཕྱག་གཡོན་པ་དཀྱར་བརྟེན་པ། མི་
 བསྐྱོད་རྩོམ་ཕྱག་གཡམས་རྩོམ་དང་བཅས་པས་ས་གནོན་པ། ཕྱག་གཡོན་པ་དྲིལ་
 བྱ་དང་བཅས་པས་དཀྱར་བརྟེན་པའོ། །མིག་དང་། རྩ་བ་དང་། ལྷ་དང་། ཁ་དང་།
 རེག་བྱ་ནམས་ལ་གཏོ་ཕྱག་རྩོམ་དང་། ཞེ་སྤང་རྩོམ་དང་། སྤྱུག་རེག་རྩོམ་དང་། འདོད་
 ཆགས་རྩོམ་དང་། སེར་སྒྲ་རྩོམ་ནམས་མིང་གཞན་ཡང་སའི་སྤྱིང་པོ་དང་། ཕྱག་ན་
 རྩོམ་དང་། རྩམ་མཁའི་སྤྱིང་པོ་དང་། འཛིག་རིན་དབང་ཕྱུག་དང་། སྤྱིབ་པ་ནམ་པར་
 སེལ་བ་ཞེས་པའོ། །ཁ་དོག་ནི་དཀྱར་པོ་དང་། རྩམ་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དམར་
 པོ་དང་། ལྷང་བྱའོ། །སྤྱི་མཆེད་ཐམས་ཅད་ལ་དབང་ཕྱུག་རྩོམ་དཀྱར་པོ་སྤྱེ། མིང་
 གཞན་ཀུན་དུ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །གཏོ་ཕྱག་རྩོམ་ཕྱག་གཡམས་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་
 གདངས་པ། ཕྱག་གཡོན་དྲིལ་བྱ་དང་བཅས་ཏེ་རིལ་པས་ཕྱགས་ཀར་སོན་པའོ། །ཞེ་
 ལྷང་རྩོམ་ཕྱག་གཡམས་རྩོམ་དང་བཅས་པས་ཕྱགས་ཀར་སོན་པ། གཡོན་པའི་ཕྱག་
 དྲིལ་བྱ་དང་བཅས་ཏེ་དཀྱར་བརྟེན་པའོ། །སྤྱུག་རེག་རྩོམ་དང་། འདོད་ཆགས་རྩོམ་དང་།
 སེར་སྒྲ་རྩོམ་ནམས་ནི་རིམ་པ་བཞིན་རིན་པོ་ཆེ་དང་། བསྐྱམ་དམར་པོ་དང་། ལྷ་ཚྭ་གས་
 རྩོམ་ནམས་ཕྱག་གཡམས་ཀྱིས་རིལ་བ་དང་བཅས་པས་གདངས་པས་སོ། །རིལ་བ་དང་
 བཅས་པའི་ཕྱག་གཡོན་པས་དྲིལ་བྱ་ཕྱགས་ཀར་སོན་པའོ། །དབང་ཕྱུག་རྩོམ་ཕྱག་
 གཡམས་རྩོམ་དང་བཅས་པ་ཕྱགས་ཀར་སོན་པ། དྲིལ་བྱ་དང་བཅས་པའི་གཡོན་པ་དཀྱར་ལ་

^༡ ལྷ་དཔེར་། རིན་པོ་ཆེ་མེད། ^༢ གཞན་། གདངས་པའོ། ^༣ གཞན་། རྩོམ་མེད། ^༤ ལྷ་དཔེར་། (སྤྱེ) གནས་པ། ^༥ གཞན་། བཅས་པ།

୧. ଶାନ୍ତିବନ୍ଧୁ. ଶାନ୍ତିବନ୍ଧୁ. ୨. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. (ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ.) ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. ୩. ଶାନ୍ତିବନ୍ଧୁ. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ. ୪. ଶାନ୍ତିବନ୍ଧୁ. ଶ୍ରୀ. ଶ୍ରୀ.

དེ་ནས་རང་གི་སྤྱིང་གའི་བྱ་གའི་དབྱས་སྒྲུ་རྩི་ཡིག་གི་ས་པོན་ལས་རྒྱང་དའི་ཉི་
 མའི་དཀྱུལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་བོ་ཡིག་དམར་པོ་བཟུས་ལ། དའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ནང་གི་
 ཉི་ག་བ་བསལ་ནས་བ་སྒྲུའི་བྱ་ག་རེ་རེ་ནས་སྤྱིར་རྒྱང་བས་འཆད་པར་འགྱུར་དའི་དཙུག་
 ལྷན་འདས་མའི་དཀྱུལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་དང་སྒྲ་མ་དང་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་
 དཔའ་ནམས་མདུན་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་སྒྲུན་རྒྱངས་པར་བསྒྲེམས་ལ། ཕྱག་བཙལ་ནས་ས་
 པོན་གྱི་འོད་ཟེར་ལས་རྒྱང་དའི་བོ་ཡིག་མ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲ་མོ་བཙུ་བྱ་ག་གིས་མཆོད་པར་
 བྱའོ། །དེ་ལ་བོ་ཡིག་མ་དང་། སྤྱིང་བྱ་མ་དང་། ར་ར་མ་དང་། ར་ར་ཁ་གཅིག་མ་ནམས་
 གི་ཞལ་གཅིག་མ་ཕྱག་བཞི་མའི་སྒྲ་མདོག་སྒྲོན་མོ་དང་སེར་མོ་དང་དམར་མོ་དང་ལྗང་གྲུ་
 རྩེ། ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་རྩི་རང་རང་གི་སྤྱིང་གའི་གནས་བརྒྱུད་པར་གཞིལ་བའོ། །གཞན་
 ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་རྩི་རྩི་དང་རྩི་ལ་བྱ་བསྒྲེམས་པའོ། །བཞད་མ་དང་སྒྲིག་མོ་དང་སྒྲུ་མ་དང་
 གར་མ་ནམས་གི་ཞལ་གཅིག་མ་ཕྱག་བཞི་མའི་སྒྲ་མདོག་དམར་མོ་དང་སྒྲོན་མོ་དང་སེར་མོ་
 དང་ལྗང་གྲུ་སྒྲེ་བཞད་མའི་ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་བཞད་པའི་སྒྲ་མ་སྒྲུ་མ་དང་། སྒྲིག་
 མོ་གི་ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་རྩི་རྩི་དང་རྩི་ལ་བྱ་དཀྱར་བརྟེན་པའོ། །སྒྲུ་མའི་ཕྱག་
 དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་རྩི་ལྷག་བསྒྲེམས་པ། གར་མའི་ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་བསྒྲེམས་
 པའི་ཆུལ་ཅན་ནོ། །འདི་ནམས་ཀྱི་ཅིག་ཤོས་ཀྱི་ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་ཐོད་པ་དང་ཁྲུ་ག་
 བསྒྲེམས་པའོ། །མེ་དོག་མ་དང་བདུག་སྒྲོས་མ་དང་མར་མེ་མ་དང་། རྩི་ཆབ་མ་ནམས་
 ཀྱི་ཁ་དོག་གི་དཀར་པོ་དང་དུད་ཀ་དང་མར་མའི་མེ་སྒྲེ་ལྷ་བྱ་དང་དམར་མོ་འོ། །ཕྱག་

༡ གཞན་ ཁ་ཅིག ༢ གཞན་ ཀྱི། ༣ རྩི་དཔེར་ (རྒྱ་ལྷ་ལྷ་) བཞད་མ་དང་སྒྲིག་མའི། ༤ གཞན་ རྒྱངས་དང་།
 ༥ གཞན་ བཀྱར། ༦ རྩི་དཔེར་ (ལྷ་ལྷ་སྒྲོན་ལྷ་སྒྲོན་ལྷ་སྒྲོན་ལྷ་སྒྲོན་) བརྟེན་པའོ། ཕྱག་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་སྒྲིག་
 མའི་རྒྱངས་སྒྲུ་མ་དང་། ༧ གཞན་ རྩི་དང་ཐག ༨ གཞན་ ཅིག་ཤོས་ཀྱིས། ༩ གཞན་ དུད་ཀ།

བཞི་དང་། ཞལ་གཅིག་མ་སྟེ། གཡས་ཀྱི་ཕྱག་གི་དང་པོ་ནམས་ཀྱིས་མེ་དོག་གི་སྟོད་
 དང་། བདུག་སྟོས་ཀྱི་སྟོད་དང་། མར་མའི་ཀོང་^१་བྱ་དང་། རི་ཆབ་ཀྱི་དུང་ཕོར་
 བསྐྱམས་པའོ། །ཅིག་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་གསུམ་ལ་ཤམ་དང་ཕོད་པ་དང་ཁཏྲ་ག་ཡོད་པའོ། །
 མེ་ཡོང་མ་དང་། རོ་མ་དང་། དེག་མ་དང་། ཚོས་མ་ནམས་ཀྱི་ཁ་དོག་ནི་དཀར་པོ་དང་།
 དམར་པོ་དང་། ལྷང་བྱ་དང་། དཀར་པོ་སྟེ། ཞལ་གཅིག་མ་ཕྱག་བཞིའི་དང་པོས་མེ་
 ཡོང་དང་། རོ་འི་སྟོད་དང་། སྒྲ་ཚོགས་པའི་གོས་དང་། ཚོས་འབྱུང་བསྐྱམས་པའོ། །ཕྱག་
 གཞན་གསུམ་གྱིས་ཤམ་དང་། ཕོད་པ་དང་། ཁཏྲ་ག་བརྒྱུང་^२་པའོ། །

དེའི་ཇེས་ལ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ཀང་བ་བརྒྱད་པའི་སྒྲགས་ཀྱིས་བསྟོད་ནས།
 སྒྲིག་བ་བཤགས་པ་དང་། བསོད་ནམས་ལ་ཇེས་སྲུ་ཡི་རང་བ་དང་། རྒྱལ་བ་བྱ་ངན་
 ལས་འདས་པར་བཞེད་པ་ལ་ཡུན་རིང་དུ་བཞུགས་པའི་གསོལ་བ་གདབ་པ་དང་། ^३་ཚོས་
 ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐྱོར་བར་བསྐྱལ་བ་དང་། རང་གི་བསོད་ནམས་ཡོངས་སྲུ་བསྟེས་དེ། ལྷ་ན་
 མེད་པའི་མཆོད་པ་བདུན་བྱས་ནས་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སྐྱབས་སྲུ་འབྲོ་བ་དང་། རྒྱལ་
 བའི་ལམ་བསྟེན་པ་དང་། བདག་ཉིད་ཀྱི་ལུས་^४་དབྱལ་བ་དང་། སེམས་བསྐྱེད་སྟོན་དུ་འབྲོ་
 བས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བྱ་གཅིག་པ་ལྟར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པའི་བདེ་བ་^५་
 ཆེན་པོ་ལ་སྟོར་བར་འདོད་པས་བྱམས་པའོ། །སྒྲུག་བསྐྱལ་ལས་གདོན་པར་འདོད་པའི་
 ནམ་པ་ནི་སྟོང་ཇེའོ། །དེ་ལས་སྦྱེས་པའི་དགེ་བའི་ཅ་བ་དང་། འོངས་སྟོད་དང་། དབང་
 ཕྱག་ནམས་མི་འབྲལ་བར་འདོད་པའི་ནམ་པ་ནི་དགའ་བའོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཆགས་སྤང་
 དང་བྲལ་བས་པ་རོལ་ལ་མན་པའི་ཚོས་ཉིད་ལ་ཤུགས་ཀྱིས་^६་རབ་དུ་བྱུགས་པའི་མཆན་^७་
 ཉིད་ཀྱིས་བདང་སྟོམས་བསྟོམས་དེ། བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་བསགས་ལ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་

१ གཞེན་ ཀྱིས། २ གཞེན་ གིས། ३ གཞེན་ སྟོང་། ४ གཞེན་ གཟུང་། ५ རྒྱ་དཔེར་ སྟེ། (བྱུ་ཆ)
 མངས་རྒྱས་ལ། ६ རྒྱ་དཔེར་ སྟེ། (ལྷ་མ་སྐྱབ) བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ། ७ རྒྱ་དཔེར་ བ་རོལ་ ཤུགས་
 ཀྱིས་བར་མེད། ८ གཞེན་ བཞུགས།

ལྷ་མ་མཁན་གྱིས་ལྷ་མ་བྱས། །
 བལྷས་བར་གྱུར་བ་དེ་ཡི་ཆེ། །
 ཅུང་ཟད་ལྷས་བ་ཡོད་མིན་ལྟར། །
 ཆོས་ནམས་ཀྱི་ན་ཆོས་ཉིད་དོ། །ཞེས་གསུང་རབ་ལས་སོ། །

[illegible]

སྒྲ་ཚོགས་ནི་ཆེ་ལ་གནས་པའི་བོ་རྒྱ་ཡིག་ལས་བྱང་པའི་ནམ་སྒྲུང་རིག་མ་དང་བཅས་པའི་
 བདག་ཉིད་ཀྱི་ཞལ་ཡས་ཁང་ངོ་། །སོ་སོའི་སྤྱོ་བོ་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དེ་བཞིན་
 ཉིད་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱི་མཉམ་པའི་སྤྱིར་བྱུ་བཞིར་མཉམ་པའོ། །དེ་པ་ཉི་པར་བཞག་
 པ་དང་ཡང་དག་པར་སྦྱོང་བ་དང་། རྒྱ་འབྲུལ་གྱི་ཀླང་པ་དང་དབང་བོ་ནམ་པར་དག་
 པས་སྒྲོ་བཞིའོ། །ལས་ཡན་ལག་བརྒྱད་ནམ་པར་དག་པས་ཀ་བ་བརྒྱད་ཀྱིས་མཛེས་པ།
 དབང་པར་འགྲོ་བ་དང་ནམ་མཁའ་མཛོད་དང་དྲི་མ་མེད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་དང་སིང་གི་ནམ་པར་
 རོལ་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་བཞིའི་ནམ་པར་དག་པས་འདྲོད་ཡོན་གྱི་སྒྲུལ་བྱ་བཞིས་བསྐྱར་
 བའོ། །བསམ་གཏན་བཞི་ནམ་པར་དག་པའི་དྲ་བབས་བཞིས་བརྒྱན་པའོ། །ཅུང་
 རྒྱབ་ཀྱི་ཡན་ལག་བརྒྱན་ནམ་པར་དག་པས་དྲ་བ་དང་དྲ་སྤྱོད་དང་ཉི་ཟླ་དང་བ་དན་དང་མེ་
 ལོང་དང་ང་ཡབ་ཀྱིས་མཛེས་པའོ། །འདྲིར་བསྐྱས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་དེ་དང་
 དེའི་ནམ་པར་དག་པས་མཚན་ཉིད་དེ་དག་དང་ལྷན་པའོ། །དེའི་ལྟེ་བར་འཛིག་དེན་གྱི་ཚོས་
 བརྒྱད་ཀྱིས་མ་གོས་པའི་ནམ་པར་དག་པས་པོ་ཡིག་དམར་བོ་ལས་སྦྱེས་པའི་བརྒྱ་འདབ་མ་
 བརྒྱད་པའི་ཟེའུ་འབྲུ་ལ་མ་རིག་པའི་སྤྱན་པ་འཛོམས་པ་ནམ་པར་དག་པས་ཉི་མའི་
 དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཉིས་འབྱུར་གྱི་ཡུལ་ཡོངས་སུ་བྱུར་བ་ལས་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་
 རང་བཞིན་གྱི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་། ཅ རྒྱ རྒྱ ཡ ལ་དང་བཅས་པའི་ཀླུ་ལྷ་ཉིས་
 འབྱུར་ཡོངས་སུ་བྱུར་བ་ལས་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་
 འཁོར་གཉིས་བཅེགས་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཁ་སྐྱར་གྱི་དབྱས་སུ་བོ་ཡིག་དམར་བོ་

༡ གསེར་ རྒྱ་བྱ་དཔེར་ རྒྱ། ༢ གསེར་ གཞུག། ༣ གསེར་ ཀྱི་མེད། ༤ རྩེ་ གཞུག། ༥ གསེར་ རྩེ་
 བར་དག་པ་ མེད། ༦ རྒྱ་དཔེར་ འདྲོད་ཡོན་ མེད། ༧ གསེར་ དག་པའི། ༨ གསེར་ འཛོམས་པར་དག་པས།
 ༩ གསེར་ ཅ རྒྱ རྒྱ ཡ ལ། ༡༠ གསེར་ ཟླ་བ། ༡༡ གསེར་ རོལ་བྱ་དཔེར་ པོ་ཞེས་འདུག་པ་ལྟར་བཞག་ རྩེ་མི།

१ ལྷ་དཔེ་ (བཟླ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་) རྟོ་ཐོ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་ २ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ ३ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་
 ४ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ ५ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ ६ ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ལྷ་ ७ ལྷ་དཔེ་ (ལྷ་ལྷ་) ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་
 ८ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ ९ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ १० ལྷ་དཔེ་ (ལྷ་ལྷ་) ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་
 ११ ལྷ་ལྷ་ ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་

১. শব্দ'। প্রা'ম'ব্য। ২. ক'দ'ম'ব'। ক'দ'ম'ব'। ৩. শব্দ'। প্রা'ম'ব্য।

གང་ལུ་ཡི་པའི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ལས་ནི་རྗེའི་གྲུང་ལ་སོགས་པ་སྤྱད་བའི་^༡
 ཕྱིར་རྗེས་ཐོགས་སྤྱི་སྤྱོད་པ་བསྒྲིམ་རར་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དབང་པོ་རབ་ཀྱི་……
 དབང་དུ་བྱས་པ་སྟེ། དེ་ལ་ནི་སྤྱོད་པ་ཁོ་ན་བསྤྱད་བའི་མངོན་ག་གོ། །འདིར་ནི་སྤྱི་ལོ་ཐམས་
 ཅད་ནམ་པར་སྤྱད་པའི་ཆེད་དུ་སྤྱོད་པ་བསྒྲིམས་པའི་རྗེས་སྤྱི་གྲུང་ལ་སོགས་པའི་སྤྱད་……
 བ་དང་ལྷན་པར་བསྟན་དེ། དེ་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་མང་པོ་ལས་གོ་རིམས་འདི་ལྟར་
 མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཤར་ལ་སོགས་པའི་འདབ་མ་བཞི་ལ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བས་གཡོན་
 རྒྱུ་གྱིས་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། ལྷ་དང་། ཁུ་རྟ་དྲུ་དང་། གཤམས་ཅན་མ་ནམས་
 སྤྱི་མདོག་ནག་པོ་དང་། ལྷ་དང་། དམར་པོ་དང་། སེར་པོ་ནམས་སོ། །ཐམས་
 ཅད་ཀྱང་ཞལ་གཅིག་པ་ཕྱག་བཞི་བའོ། །གཡོན་གྱིས་ཁྲི་ལྟ་དང་ཐོད་པ་བརྒྱམས་པ།
 རམཅུ་དང་། གྱི་གྲུག་གཡས་ཀྱིས་བརྒྱམས་པ། སྤྱན་གསུམ་པ་ཞལ་མཆེ་བ་གཅིགས་
 པ་སྤྱི་གྲོལ་བ་གཅིར་བྱ་གཡས་བརྒྱད་པ་གཡོན་བརྒྱམས་པའི་སྤྱད་སྤྱབས་ཅན། ཕྱག་ཀྱི་ལྷ་
 དང་ལྷན་པ་མགོ་བོ་རྣོན་པའི་སྤྱོད་པ་དང་ལྷན་པ་དེ་རྗེའི་སྤྱོད་པས་དབྱལ་བར་ནས་མཆན་
 པ། རྟེན་པ་གཡེར་ཁའི་སྤྱོད་པ་བཅས་པ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པར་བསམ་སོ། །མེ་
 ལ་སོགས་པའི་མཆོམས་ཀྱི་འདབ་མ་བཞི་ལ་གཡས་རྒྱུ་གྱིས་བྱས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རིམས་དང་
 ཁྲག་དང་བདུད་ཅི་ལྷ་དང་དམར་མེ་ལྷ་དབྱལ་ཆུ་ལྟར་བདུད་ཅིར་གྱུར་པས་ཡོངས་སྤྱི་གང་……
 བའི་བསྐྱེད་སྤྱོད་བཞི་དགོད་དོ། །

དེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་དེ་རྗེ་སྤྱོད་པོའི་སྤྱོད་པས་བསྒྲིམ་པ་དང་པོ་ཕྱགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་……
 སྤྱོད་པོ་ཅི་བས་བརྒྱན་པའི་ཤར་དང་། བྱང་དང་། ལུབ་དང་སྤྱོད་པོ་ཅི་བས་ནམས་ལ་རུ་ལྟེ་^༢
 རམ་ལལ་^༣ དང་། རྟེན་ལྟར་དང་། ཞོ་ཁྲི་ལན་དང་། ཡུ་རྟེན་རང་བཞིན་གྱི་གནས་

༡ གསེར་ ལྷོ། ༢ གསེར་ བསྤྱད་བའི། ༣ གསེར་ བསྐྱེད། ༤ གསེར་ བསྤྱད་། ༥ གསེར་ མང་བ་ལས།
 ༦ གསེར་ ཇི་ལྟ་བ། ༧ གསེར་ ཏ། ༨ ལྷ་དཔེར་ (གྲུ) དཔེར་བོ། ༩ གསེར་ ལྷ་དང་བརྒྱམས། ༡༠ གསེར་
 ནས་ མེད། ༡༡ གསེར་ རྟེན་པ། ༡༢ ལྷ་དཔེར་ བཞི་ མེད། ༡༣ ལྷ་ ལྷོ། ༡༤ ཅོ་ གསེར་ རིམ་ལལ།
 ༡༥ གསེར་ ཞོ་ཁྲི།

ལ་རབ་དུ་གདུམ་མོ་དང་། གདུམ་པའི་མིག་ཅན་མ་དང་། རོད་ལྷན་མ་དང་། ལྷ་
 ཆེན་མའོ། །མེདི་མཆམས་དང་། བདེན་བྲལ་དང་། རྒྱང་གི་མཆམས་དང་། དབང་
 ལྷན་ལ་གོདུབདྲི་དང་། རྒྱེ་ཤར་དང་། དེབློ་ཀོཏ་^༡ དང་། ལྷུ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་
 གནས་དང་། ཉི་བའི་གནས་ལ་དབའ་བོདི་སྒོ་གྲིས་མ་དང་། མིའུ་ཐུང་མ་དང་། འངུ་ཀའི་
 དབང་ཕུག་མ་དང་། ཤིང་གྲིབ་མའོ། །བསྐྱའི་སྤང་བ་དམར་པོས་བསྐྱོར་བའི་གཉིས་པ་
 གསུང་གི་འཁོར་ལོ་དམར་པོ་ཅི་བས་བརྒྱད་པའི་ཤར་དང་བྱང་གི་ཅི་བས་གཉིས་ལ་ཀུརུ་བ་
 དང་། ཨོྲེའི་^༢ ཞིང་གཉིས་ལ་ཨིརུབདྲི་^༣ དང་། འཇིགས་བྱེད་ཆེན་མོ་འོ། །ཀུབ་
 དང་སྒོ་འི་དྲི་ཤུག་^༤ དང་། ཀོས་ལའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཉི་བའི་ཞིང་གཉིས་ལ་རྒྱང་གི་ཤུགས་
 ཅན་མ་དང་ཆང་འཐུང་མའོ། །མེ་དང་བདེན་བྲལ་གཉིས་ལ་ཀའི་སྒྲིང་དང་། འཕྲིག་སྒྲིང་
 ཆན་དོན་གཉིས་ལ་ཤུ་མདའི་དང་ཤིན་དུ་བཟང་མོ་འོ། །རྒྱང་དང་དབང་ལྷན་དུ་ཀུའི་
 དང་ཉིས་ལ་སྒྲིང་ཉི་བའི་ཆན་དོན་གཉིས་ལ་དྲ་ན་^༥ དང་བྱ་གདོང་མའོ། །གསུམ་པ་རྒྱའི་
 འཁོར་ལོ་དཀར་པོ་འི་ཅི་བས་བརྒྱད་པ་འཁོར་ལོ་ཤིང་བ་དཀར་པོས་བསྐྱོར་བའི་ཤར་དང་
 བྱང་གི་ཅི་བས་ལ་བྱེདཔའི་དང་གྲིན་དེབད་སྒྲིང་འདུ་བ་ཅན་གཉིས་ལ། འཁོར་ལོ་འི་ཤུགས་
 ཅན་མ་དང་། དུམ་སྒྲིས་མའོ། །ཀུབ་དང་སྒོ་འི་སེརུཏྲ་དང་། སྒྲུའོ་དྲི་བ་སྒྲིང་
 བའི་འདུ་བ་ཅན་ལ། ཆང་འཆོང་མ་དང་། འཁོར་ལོ་འི་གོ་ཆ་མའོ། །མེ་དང་བདེན་
 བྲལ་ལ་^༦ ལྷག་དང་། སིན་རྒྱ་སྒྲིང་དུར་ཁྲིད་ལ་ཤིན་དུ་དབའ་མོ་དང་། ལྷོ་བས་ཆེན་
 མོ་དང་། རྒྱང་དང་དབང་ལྷན་དུ་མཆུ་དང་། ཀུའུ་སྒྲིང་ཉི་བའི་དུར་ཁྲིད་ལ་འཁོར་ལོས་^༧
 སྒྲུར་མ་དང་། བཙོན་འགྲུས་ཆེན་མོ་འོ། །རབ་དུ་གདུམ་མོ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲུ་མོ་དེ་
 དག་ཞལ་གཅིག་ཕུག་གཉིས་པའི་གཡོན་གྲིས་ཁྲག་བྲིས་བཀང་བའི་ཐོད་པ་དང་། གཡས་

༡ གཤེད་ རྒྱེ་དང་ཤར་དང་། ༢ གཤེད་ བཀོཏ། ༣ གཤེད་ ཨོྲེའི། ༤ གཤེད་ ཨོྲེའི་ཤུགས།
 ༥ གཤེད་ དྲི་ཤུག། ༦ གཤེད་ ཀའི་མག ༧ གཤེད་ རྒྱེ་ ལྷག་ ༨ གཤེད་ བདེན་བྲལ་དང་། ༩ གཤེད་ ལྷག་
 ༡༠ གཤེད་ འཁོར་ལོ།

ལ་རྒྱ་རྒྱ། ཡན་ལག་ཐམས་ཅད་ལ་མཚན་རྒྱ་པུ་པུ། ཡང་ན་ལྷ་དང་སྒྲགས་ཀྱི་དང་
 དེ་ལས་གྲུབ་པའི་གནས་དེ་དང་དེར་ལྷ་དེ་དག་ཁོ་ན་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཕག་མི་
 དམར་མོ་དང་། སྒྲོན་མོ་དང་། ལྷ་གྲུའི་ཞལ་ཅན། གཡོན་པ་ལ་ཁྲི་ལྷ་དང་།
 ཐོད་པ་དང་། ཞགས་པ་དང་། གཡས་ཀྱིས་སྒྲགས་ཀྱི་དང་། གྲི་གྲུག་དང་ཚངས་པའི་
 མགོ་པོ་བསྐྱེད་པ། གཡོན་མེ་མ་དང་། མོངས་བྱེད་མ་དང་། བསྐྱེད་བྱེད་མ་དང་།
 སྒྲགས་བྱེད་མ་དང་། གཡུམ་མོ་ནམས་ཀྱི་ཁ་དོག་ནི་སྒྲོན་མོ་དང་། དཀར་མོ་དང་། ལྷ་
 གྲུ་དང་། དུད་ཀ་སྒྲི། ཕྱག་བཞིའི་གཡོན་གྲུས་ཐོད་པ་དང་བཅས་པའི་ཁྲི་ལྷ་དང་།
 རྒྱ་ལ་བྱ་བཅུང་བ་དང་། གཡས་ཀྱིས་ཅང་དེའུ་དང་གྲི་གྲུག་བསྐྱེད་པ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་
 སྒྲ་གྲོལ་བ་གཅེར་བྱ་སྒྲན་གསུམ་པ་གཡོན་བསྐྱེད་པ་གཡས་བརྒྱུད་པའི་སྒྲ་སྒྲས་ཀྱིས་
 བཞུགས་པར་བཅུའོ། །དེའི་མེས་ལ་དབྱལ་བ་དང་། མགྲིན་པ་དང་། སྒྲིང་གར་ཨོ་
 ཨུ་རྒྱ་ལྷ་གྲི་ལོ་དཀར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། སྒྲོན་པོ་ནམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །
 དེ་ནས་སྒྲིང་གའི་དབྱུས་སུ་བསྐྱེད་པར་པོ་འདབ་མ་བརྒྱུད་པ་ལ་གནས་པའི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་
 འཁོར་གྱི་སྒྲིང་དུ་རྩོམ་པོ་འདྲི་ལྷ་བ་ལ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་ས་ངོན་པོ་
 གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་སྒྲོགས་བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་དབང་ཕྱག་གི་དབང་མོ་ནམས་སུ་བསྐྱེད་
 པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་འི་གཞུགས་ཇོ་ཞེས་པས་སྒྲན་དངས་ལ་པོ་ལྷང་མ་ལ་
 སོགས་པའི་ལྷ་མོ་བཅུ་དྲུག་གིས་མཚོད་ཡོན་ལ་སོགས་པ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བས་མཚོད་ལ། ཐོ་
 ཡིག་བཟོད་པ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བས་དུ་བའི་ཕྱག་རྒྱ་བཅིངས་ནས་དབྱལ་པའི་དབྱུས་སུ་གཡོན་
 སྒྲིང་གྱིས་བསྐྱེད་ཞིང་། སྒྲི་ཡིག་གིས་རང་དམ་ཚོག་གི་འཁོར་ལོ་ལ་ལྷ་ལ་ལྷ་ཐོས་པ་ལྷར་
 གཞུགས་པར་བྱ་སྒྲི། པོ་ཡིག་གིས་བཅིངས་ལ་ཉོ་ཡིག་གིས་དབྱེས་པར་བྱའོ། །ཨོལ་གྱི་

༡ ལྷ་དམར་ (དེའུའོ་སྒྲི་དུ་) ལྷ་དང་སྒྲགས་དབྱེད་མེད་པར། ༢ གཞེན་ མོ་དང་། ༣ གཞེན་ ཐུན་མེད།
 ༤ ལྷ་དམར་ ལྷ། ༥ གཞེན་ གི་ ༦ ལྷ་དམར་ (ཐོ་དམོ་དེའུའོ) དམའ་པོ་དང་དམའ་མོ་འི་དབང་ཕྱག་གི་
 ༧ ལྷ་དམར་ (པེ་ཆུ) འཕྱུར་བའི། གཞེན་ བསྐྱེད་པའི། ༨ ལྷ་དམར་ (ཏན་ནེ་ཆུ) དེ་ལས་བྱུང་བའི།
 ༩ གཞེན་ མ་མེད། ༡༠ ལྷ་དམར་ ལྷ། ༡༡ གཞེན་ ཚོ་ པོ།

རི་ལྟར་བལྟས་ས་པ་ཅས་གྱིས་ནི།
 དེ་བཞིན་གཤམས་ཀྱན་བྱས་གསོལ་ལྟར།
 ལྷ་ཡི་ཚུ་ནི་དག་པ་ཡིས།
 དེ་བཞིན་བདག་གིས་བྱས་བུའོ།
 །ཞེས་པས་དེ་ནས་ས་གྱི་

གཡོན་པའི་ཐོད་པ་ཅུང་ཟད་ཡོ་བ་ལས་བྱུང་བའི་ཡི་ཤེས་ཀྱི་བདུད་ཅིན་རྒྱན་གྱིས་བཀྲམ་་་་
 བས་རང་ཉིད་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་དུ་ངས་མ་མོ། །ཅུ་ལྷག་མ་ལས་བྱུང་བའི་དེ་
 བཞིན་གཤེགས་པ་མགོ་བོ་ལ་རྣམ་པར་ངས་མས་ལ། ཇོ་ས་རྒྱ་བདུག་ཀྱང་ཨ་ལྷོ་ཤིང་ཀྱང་སེམས་
 འི་ཡི་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བས་བྱིན་གྱིས་བཞུག་པོ། །དེ་ལ་བཅོམ་ལྷན་འདས་མའི་སྤྱི་བོ་ལ་རིགས་
 ཀྱི་བདག་པོ་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་རྫོང་མཛད་དོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་
 ཀྱི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྷན་ནོ། །ཐུགས་དང་གསུང་དང་རྒྱུད་འཁོར་ལོ་ལ་བརྒྱགས་པ་རྣམས་
 ལ་རིམ་བུ་ཇི་ལྟ་བར་མི་བསྐྱོད་པ་དང་། རྫོང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། དྲག་པའོ། །དམ་
 ཚོག་གི་འཁོར་ལོ་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནི་དོན་ཡོད་བྱུང་བའོ། །དེ་ནས་བདུད་ཅི་མུང་
 བར་བྱ་སྟེ། ཡོ་ཡིག་ལས་རྒྱུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར། དེའི་སྤྱིང་དུ་རོ་ཡིག་ལས་རྒྱུས་པའི་
 མེའི་དཀྱིལ་འཁོར། དེའི་སྤྱིང་དུ་ཨུཾ་ཡིག་དཀར་པོ་ལས་སྤྱེས་པའི་བདུད་རྒྱུད་སྤྱོད་དཀར་

१. གྱ་དཔེ་ (རྒྱ་ཆུ་ཀུན་) ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ལམ་ལོ་སྤྱོད་རངས་པའི། २. གཤེད་ ལྷམས། ३. གཤེད་ ཀྱིས།
 ४. གྱ་དཔེ་ ཀྱང་ གཤེད་ ५ མེད། ५. གཤེད་ ཅོ་ སྤྱི་པོ། ६. གྱ་དཔེ་ (५५) རི་ལ། ७. གཤེད་ ཇམ།

བོ། མགོ་བོ་གསུམ་ལས་བྱས་པའི་སྒྲིང་པུ་གསུམ་ལ་གནས་པ་ལ། ཡོ་ཏྲ་ཨོ་ཁྱོ་
 ལྟོ། མྱོ། བྱོ། ཏྲོ། བྱོ།^༡ ལས་སྒྲིས་པ་དེས་བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་པའི་བདུད་ཅི་ལྟ་
 དང་སྒྲོན་མ་ལྟ་ཐོགས་པར་བྱས་ལ། རྒྱང་བེས་བསྐྱལ་བའི་མེ་འབར་བའི་དྲོད་ཀྱིས་ས་མོན་
 གྱི་ཡི་གེ་ལ་སོགས་པ་ཞུ་རས་^༢ ཉི་མ་འཆར་བའི་ཁ་དོག་ལྟ་བུའི་ཁྲ་རར་རལ་ས་ལ། རྩེད་དུ་
 མཐོ་གང་བའི་ཚད་ལ་རྒྱུ་དཀར་པོ་ལས་སྒྲིས་པའི་ཁྲ་ལ་མགོ་བྱར་ལ་བསྐྱན་པ་དཀར་པོ་
 བདུད་ཅིའི་རང་བཞིན་ལ་རྒྱངས་པ་^༣ དེག་པས་ཞུ་བ་ནང་དུ་རབ་^༤ བས་ཁྲ་བ་དེ་དབྱལ་ཆུའི་ཁ་
 དོག་ལྟར་བསིལ་བར་ནམ་པར་བསམ་མོ། །ཡང་དེའི་རྩེད་དུ་ཡི་གེ་གསུམ་གོང་ནས་གོང་དུ་
 བལྟས་ནས་དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཁམས་གསུམ་ན་གནས་པའི་བདུད་ཅི་ཐམས་ཅད་དང་བཅས་
 དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མ་ལུས་པའི་བྱུགས་ཀ་ན་གནས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདུད་ཅི་བཀྲུག་
 ནས་དེ་ཉིད་ལ་བསྐྱེས་པ་དང་། ཡི་གེ་གསུམ་ཡང་རིམ་པས་ཞུ་བར་གྱུར་དེ་ཡང་ཡི་གེ་
 གསུམ་གྱིས་ཀྱང་^༥ བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་པ་དང་། རང་དང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྟ་མོ་ནམས་
 ཀྱི་ལྷགས་ལ་རྒྱུ་དཀར་པོ་ལས་སྒྲིས་པའི་དོ་ཐེ་དཀར་པོ་ནས་ཀྱི་ཚད་ཅམ་གྱི་^༦ འོད་ཟེར་.....
 སྒྲ་གྱ་ཅན་གྱིས་ཚིམ་པར་བསམ་མོ། །དེ་ནས་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་མཚོན་པའི་སྒྲགས་
 ཀྱང་བ་བརྒྱད་པས་བསྟོད་པར་བྱའོ། །གལ་དེ་དེ་ཅམ་གྱིས་^༧ དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་
 ཆེན་པོ་ལ་ཡུན་^༨ རིང་པོར་བདྱན་པར་བྱེད་མི་ཉུས་ན། དེའི་ཆེ་བསྐྱེད་ལྟེ་བར་གནས་པ་ཉི་མ་
 དང་། རྒྱ་བ་ཁ་སྒྲོར་གྱི་དབྱས་སྒྲ་བོ་གྱི་^༩ ས་མོན་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་རིང་པོ་བར་མའི་
 སྒྲ་བྱ་ལྟ་བུ་ལ་སེམས་བདྱན་པར་བྱས་པའི་སྒྲོ་ནས་ཙ་གཉིས་ལ། སྒྲག་རྒྱང་བོ་གྱུ་བ་ཡོངས་
 སྒྲ་བྱལ་བས་དབྱས་སྒྲ་ཞུགས་ནས་གདུམ་མོ་འབར་བས་སྒྲི་བོའི་རྒྱ་བ་ཞུ་བ་ལས། རིམ་
 གྱིས་འཁོར་ལོ་ལ་ཁྱབ་པས་དགའ་བ་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀྱི་དབྱེ་བས་ལྟན་ཅིག་སྒྲིས་པའི་...

༡ གཞེས་ ཨ། ༢ རྒྱ་དཔེས་ བྱོ་མེད། ༣ གཞེས་ ཞུ་བ། ༤ རྩེ་ རྒྱོངས་མ། ༥ གཞེས་ བམས།
 ༦ གཞེས་ ཡང་། ༧ གཞེས་ བྱིས། ༨ གཞེས་ བྱི ༩ རྒྱ་དཔེས་ (ཅོད་ཏྲོ) སེམས་ཡུན། ༡༠ རྩེ་ ཁྱོ་གི

དགའ་བ་ནས་བྱང་ནས་^༡ རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས་ཅིག་ཅར་དཀྱིལ་.....
འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་སྤོང་བར་བསྐྱས་ཏེ་མི་དམིགས་པར་བསམ་མོ། །

ཡང་ན་རིམ་གྱིས་ཏེ་དེའི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། འགྲོ་བ་རྣམས་དྲར་ཁྲིད་
ལའོ། །དྲར་ཁྲིད་ཕྱིའི་ཞལ་ཡས་ཁང་ལའོ། །གཞལ་ཡས་ཁང་དམ་ཚིག་གི་འཁོར་ལོ་
ལའོ།^༢ །ཕྱིའི་འཁོར་ལོ་རྒྱུའི་འཁོར་ལོ་ལའོ། །རྒྱུའི་འཁོར་ལོ་གསུང་གི་འཁོར་ལོ་
ལའོ། །གསུང་གི་འཁོར་ལོ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལའོ། །ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ནི་ཕྱོགས་
ལ་གནས་པ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ལའོ། །ཕྱོགས་དང་བྲལ་བ་ལ་གནས་པ་ནི་
གཞུགས་ཅན་མ་ལ་སོགས་པ་ལའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་
འཁོར་ལོ་ལ་བཞུགས་པའི་བཅོམ་ལྷན་འདས་མའི་གདན་ལའོ།^༣ །བཅོམ་ལྷན་འདས་མའི་
གདན་ཐུ་སྦྱེས་ནི་ཉི་མ་ལའོ། །ཉི་མ་འཛིགས་བྱེད་ལའོ། །འཛིགས་བྱེད་དུས་མཚན་
མ་ལའོ། །དུས་མཚན་མ་ཁྲུ་ག་ལའོ། །ཁྲུ་ག་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་ལའོ། །བཅོམ་
ལྷན་འདས་མ་ལྟེ་བའི་བསྐྱེད་ལའོ། །བསྐྱེད་ཉི་མ་དང་ཁྲུ་བའི་ཁྲ་སྦྱོར་ལའོ། །ཁྲ་སྦྱོར་ནི་
བོ་གི་ཡི་གེ་ལའོ། །བོ་ཡི་གེ་ཁྲ་བ་བྱེད་པ་ལའོ། །ཁྲ་བ་བྱེད་པ་ཐིག་འེལ་ལའོ། །ཐིག་
འེལ་ནད་ལ་ཐིམ་པར་བསམས་ཏེ། དེ་ཡང་སྒྲིའི་ཅེ་མོ་སྤོང་^༤ ཐུག་བརྒྱར་བ་ཤུགས་^༥ པའི་
གཞུགས་སུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །རབ་ཀྱིས་དེ་ཡང་མི་དམིགས་སོ། །དེ་ལྟར་ཡེ་ཤེས་འཁོར་
ལོའི་རང་བཞིན་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་ཡང་འོད་གསལ་བའི་རང་བཞིན་ལ་གཞུག་གོ། །དེ་
ལྟར་ཡང་དང་ཡང་དྲུ་གཞུག་པ་དང་ལྷང་བར་བྱའོ། །

༡ གཞེས་དགའ་བ་དབྱང་གནས། ༢ གཞེས་ཅིག་ཅར་དཀྱིལ་གྱི་འཁོར་གོ། ༣ ལྷན་འདས་ཀྱི་ཞལ་ཡས་ རྣམ་ འཁོར་
གོ་ལའོ། །བར་མེད། ༤ ལྷན་འདས་ (ལྷན་འདས་ལྷན་) བཅོམ་ལྷན་འདས་མའི་ཞལ་ལའོ། ། ༥ གཞེས་ཉི་མ་ནི།
༦ རྩོམ་ རྩོམ་ཐུག་བརྒྱར། ༧ ཅོ་ གཞེགས། ༨ གཞེས་ ལྷན་

ཇི་ལྟར་མེ་ལོང་དབྱུགས་ཀྱི་རྒྱུང་། །

ཐམས་ཅད་ཐིམ་པར་འགྱུར་བ་བཞིན། །

ཡང་དག་མཐའ་ཅུ་ནལ་འབྱོར་བས། །

ཡང་དང་ཡང་དུ་གཞུག་པར་བྱ། །

ཞེས་བྱ་བས་ཡང་དང་ཡང་དུ་གཞུག་པ་དང་ལྷན་པས་བདེན་པ་གཉིས་དབྱེར་མེད་ཅིང་། རྒྱུང་དུ་འཇུག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ནལ་འབྱོར་བས་མངོན་དུ་བྱེད་དོ། །སྒྲོ་བར་གྱུར་ན་ལྟེ་བའི་མཚོ་སྐྱེས་ལ་གནས་པའི་བོ་གྱི་ས་ངོན་ལ་སེམས་གཏད་ལ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་སྒྲིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྒྲིང་པོ་གང་ཡང་ཅུང་བ་ཇི་ལྟར་བརྗོད་པར་འདོད་པ་དང་དུས་མཚུངས་པ་ཉིད་དུ་ས་ངོན་གྱི་ནད་ལས་ཕྱིར་བྱུང་བའི་རྒྱུང་དང་ལྷན་ཅིག་འཁོར་ལོ་ནམ་པ་ལྲས་སྒྲོས་བས། འགྲོ་བའི་དོན་བྱས་ནས། རྒྱུང་གཉིས་འཇུག་པའི་ཆེ་སྤང་བ་བཀུག་པའི་ཚུལ་དུ་སྒྲུགས་དང་ལྷན་ཅིག་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་གཞུག་པར་བྱའོ། །འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ལྷ་མོ་སོ་སོ་འི་སྒྲུགས་བཞུས་པར་འདོད་ན་ལྷ་མོ་སོ་སོ་འི་སྒྲུགས་བཞུས་པ་རྫོགས་ནས་སྒྲོ་བ་དང་བསྐྱེ་བ་སྒྲར་བཞིན་བྱའོ། །ཡང་དེ་ཁོ་ན་ལས་སྒྲར་བཞིན་གླངས་དེ་ཀུན་འདར་མའི་ལས་ལས་རང་གི་ཁར་འཐོན་དེ་བརྒྱ་ནས་རང་གི་གནས་སུ་སོང་བས་དེ་བཞིན་དུ་འཁོར་བའི་ཡི་གའི་སྤང་བ་བསྐྱོམ་ཞིང་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་སྤང་བའི་སྒྲུགས་སམ། སྒྲིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྒྲིང་པོ་གང་ཡང་ཅུང་བ་བཞུས་པར་བྱའོ། །ཡང་ན་ས་ངོན་དེ་ཉིད་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བའི་སྒྲུགས་ཀྱི་སྤང་བ་མར་མའི་སྤང་བ་ལྟར་གནས་པ་ལ་བལྟས་དེ་ཉ་ཅང་མགྱོགས་པ་དང་བྱལ་བ་མ་ཡིན་པས་རྟོག་པ་ངན་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས་དེ་བཞུས་པ་བྱའོ། །

༡ རྒྱ་དབེར་ (ལྷ་སྐྱེན་ནམ་མཁུན་) དབྱེར་མེད་ཅིང་རྟོགས་པའི། ༢ གཞེར་ ལྷ། ༣ རྒྱ་དབེར་ (སྤྱི་གསལ་རྟེན་) སོ་སོར་སྒྲོ་བ། ༤ གཞེར་ ལྷ་པ། ༥ གཞེར་ ལངས་ཏེ། ༦ གཞེར་ ནལ། ༧ གཞེར་ འཁོར་གོ། ༨ གཞེར་ ནང་ཡང་། ༩ གཞེར་ བ་མེད། ༡༠ གཞེར་ ལས།

མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་དང་། ཁྲ་གཤོང་མ་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀྱིས་གཡོན་གྱི་
 དབྱང་པ་ལ་ཁྲ་གྲུ་གྲུ་བྱེད་པའོ། །བཅུ་གཉིས་པོ་ནམས་བརྒྱུད་བསྐྱེད་གྱི་ཚུལ་གྱིས་གར་
 མཛད་པའོ། །གཞན་ནམས་ནི་སྤར་བཞིན་པོ། །ཆུང་འཇུག་སྤངས་པ་དང་། ནམ་
 པ་ཐམས་ཅད་མཁའ་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་བརྟན་པའི་ཕྱིར་འཇུག་གྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་སྤྲུལ་ཅ་
 ཅ་བདུན་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་དུ་རིག་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་གཞུགས་ཀྱི་སྤང་བོ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ལ་ཚོམ་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ལུས་
 དན་པ་ཉི་ཤེར་གཞག་པ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །ཆོར་དའི་སྤང་བོ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཚོམ་
 པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཆོར་པ་དན་པ་ཉི་ཤེར་གཞག་པ་ནི་ལྟུང་པའོ། །འདུ་ཤེས་དང་འདུ་
 བྱེད་ཀྱི་སྤང་བོ་སྤྲུལ་པའི་རང་བཞིན་དུ་ངེས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འོས་དན་པ་ཉི་ཤེར་གཞག་
 པ་ནི་དུམ་སྤེས་པའོ། །ནམ་པར་ཤེས་པའི་སྤང་བོ་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་མཚན་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སེམས་དན་པ་ཉི་ཤེར་གཞག་པ་ནི་གཞུགས་ཅན་པའོ། །འོས་ཐོས་པར་
 འདོད་པ་ལ་ཤིན་དུ་འབད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདུན་པའི་རྒྱ་འབྱུང་གྱི་ཀླང་པ་ནི་རབ་
 དུ་གཏུམ་པའོ། །བཙོན་འགྲུས་རྒྱན་མི་འཆད་པར་གོམས་པ་བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་རྒྱ་འབྱུང་
 གྱི་ཀླང་པ་ནི་གཏུམ་པའི་མིག་ཅན་པའོ། །ཤིན་དུ་ནམ་པར་དཔྱིད་པ་རྒྱ་འབྱུང་གྱི་
 ཀླང་པ་ནི་འོད་ཟེན་པའོ། །བྱང་ཆུབ་མངོན་དུ་བྱེད་པ་ལ་ལྷག་པའི་བསམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་
 སེམས་ཀྱི་རྒྱ་འབྱུང་གྱི་ཀླང་པ་ནི་སྒྲ་ཆེན་པའོ། །བདེན་པ་དང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་དང་
 ལས་དང་འབྲས་བྱ་ལ་ཡིད་ཆེས་པ་དང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ངེས་པ་ལ་དབང་དུ་ཆུབ་པའི་ཕྱིར་
 དད་པའི་དབང་པོ་ནི་དབང་པོའི་སྒྲ་ཅན་པའོ། །ཅི་ནས་ཀྱང་བྱ་བ་ངེས་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་
 བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་དབང་པོ་ནི་མིའུ་ཐུང་པའོ། །མ་རིག་པའི་གཉེན་པོ་མ་བཟེད་པ་ལ་དབང་
 ཐོབ་པའི་ཕྱིར་དན་པའི་དབང་པོ་ནི་ལང་ཀའི་དབང་ཕྱག་པའོ། །སེམས་ཅི་གཅིག་པ་

༡ གཞེན་ ག་མེད། ༢ གཞེན་ སྤང་། ༣ གཞེན་ ཕྱིར་མེད། ༤ ལྷ་དཔེན་ (གྲུ་རྒྱལ) རང་བཞིན།
 ༥ ལྷ་དཔེན་ (མིའུ་ཐུང་) ཀྱི་ནམ་པར་དག་པའོ། ༦ གཞེན་ རྒྱ་འབྱུང་གྱི་མེད། ༧ གཞེན་ ཕྱིར་པ་ལྷག་པའོ།

དད་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་པོ་ནམས་ཁོ་ན་མཐར་ཐུག་པར་སྤྱོད་པས་སྟོབས་་་་
 ནམས་སོ། །དད་པའི་སྟོབས་ནི་འཇིགས་བྱེད་ཆེན་པོ་འོ། །བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་སྟོབས་ནི་
 རྒྱང་གི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །དྲན་པའི་སྟོབས་ནི་ཆང་འབྲང་མའོ། །དྱིང་ངེ་འཇིན་གྱི་
 སྟོབས་ནི་ཤུམ་དཔེ་འོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་སྟོབས་ནི་ཤིན་ཏུ་བརྩེང་པོ་འོ། །

ཉིང་ངེ་འཛིན་ཁོ་ན་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱ་ཡིན་པས་ཉིང་ངེ་འཛིན་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་
 ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་དྲ་ན་མཐོ། །ལེ་ལོ་ལི་སྐབས་མི་འབྱེད་པའི་ཕྱིར་བཙོན་འགྲུས་ཡང་དག་
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་བྱ་གཞིང་མཐོ། །དག་བ་ལ་ཀུན་ནས་ཞེན་པའི་ཕྱིར་དགའ་བ་
 ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་འཁོར་ལོ་ལི་ཤུགས་ཅན་མཐོ། །ལས་དག་བ་ལ་ལས་
 སྲ་བྱང་བ་ཉིད་ཀྱིས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་དུམ་སྦྱེས་མཐོ། །
 བདག་མེད་པའི་རང་བཞིན་དུ་ངེས་པས་ཆོས་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པ་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་
 ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་ཆང་འཛོང་མཐོ། །རྒྱལ་ཁྲིམས་བཟེད་པ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དུན་པ་ཡང་
 དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་འཁོར་ལོ་ལི་གོ་ཆ་མཐོ། །ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་
 ཀྱི་ཕྱིར་བདང་སྟོམས་ཡང་དག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་ནི་ཤིན་དུ་དཔའ་མོ་འོ། །ཕྱིན་ཅི་
 མ་ལོག་པའི་དོན་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ལྷ་བ་ནི་སྟོབས་ཆེན་མཐོ། །དམ་པའི་
 བྱ་བ་བརྩམས་པ་ཡོངས་སྲ་མི་གཏོང་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་དོག་པ་ནི་འཁོར་ལོས་སྦྱར་
 མཐོ། །སེམས་ཅན་མི་སྤྱོད་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་དག་ནི་བཙོན་འགྲུས་ཆེན་མོ་འོ། །

༡. གཞེན་ རྟོན་བྱས། ༢. གཞེན་ ཡན་ལག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱ། ༣. གཞེན་ འཕྲོད་མོ། ༤. གཞེན་ མི་བསྟ།

༡ ལྷ་དཔེད་ (བཅོན) རྒྱ་གཞི་ཕྱིར།

དག་པ་བཅུའི་བྱ་བ་ལས་མི་འདུའ་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ལས་ཀྱི་མཐའ་ནི་ཁྱ་
གདོང་མཐོ། །སེམས་ཅན་ལ་གཡོ་སྤྱོད་མེད་པས་འཚོ་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་འཚོ་བ་ནི་
འུག་གདོང་མཐོ། །དག་པའི་ཆེད་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ཚོལ་བ་ནི་ཁྱི་གདོང་མཐོ། །
སངས་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་གི་དོན་དུན་པའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་དུན་པ་ནི་ཕག་གདོང་མཐོ། །
ཡང་དག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ནི་བཙུམ་ལྷན་འདས་མ་རྩེ་ཐེ་ཕག་མོ་འོ། །དག་པའི་ཚོས་
མ་སྦྱེས་པ་སྦྱེད་པར་བྱེད་པ་ནི་གཤམ་ཐེ་བཟུན་མཐོ་༩ །སྦྱེས་པའི་ཚོས་ནམས་པ་ ཡང་
དག་པར་བསྐྱུང་བ་ལྟ་ནི་གཤམ་ཐེ་ཕོ་ཉ་མཐོ། །མི་དག་པའི་ཚོས་སྦྱེས་པ་ནམས་སྦྱོང་བ་
ནི་གཤམ་ཐེ་མཆེ་བ་ཅན་མཐོ། །མི་དག་པའི་ཚོས་མ་སྦྱེས་པ་ནམས་མི་བསྦྱེད་པའི་ཕྱིར་
ཡང་དག་པར་སྦྱོང་བ་ནི་གཤམ་ཐེ་འཛིམས་མཐོ། །

རབ་དུ་དགའ་བ་དང་དྲི་མ་མེད་པ་དང་། འོད་བྱེད་པ་དང་། འོད་འཕྲོ་བ་
ཅན་དང་། ཤིན་དུ་སྤྱངས་པ་དགའ་བ་དང་། མངོན་དུ་གྱུར་པ་དང་། རིང་དུ་སོང་བ་
དང་། མི་གཡོ་བ་དང་། ལེགས་པའི་སྒོ་གྲོས་དང་། ཚོས་ཀྱི་སྦྱིན་ཞེས་བྱ་བ་ས་བཅུ་
ནམ་པར་དག་པའི་རིམ་པས་གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་སོགས་པ་སྤྱི་དཀྱིལ་འཁོར་
ལྷག་པར་ནང་གིས་ལྟ་འཁྱོར་པས་བསྒྲེལ་པར་བྱའོ། །

ཉི་ཤུ་ཅ་བཞིའི་དབྱེ་བ་ཡིས། །
གནས་སོགས་འདྲིར་ནི་ནམ་པར་གནས། །
དེ་ཕྱིར་དེ་ཅ་འགྲོ་ཉིད་ཀྱིས། །
དེ་ཉིད་ཅན་གྱི་སྦྱོ་མི་བྱ། །
དེ་ཡི་ཁམས་ནི་འཆད་པར་འགྱུར། །

༡ གསེར་ ། ༢ གསེར་ ། ༣ གསེར་ ། ༤ གསེར་ ། ༥ གསེར་ ། (ལྷ་པ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་ལྷ་)
དག་པའི་ཚོས་སྦྱེས་པ་ནམས་ ། ༦ གསེར་ ། ༧ གསེར་ ། ༨ གསེར་ ། ༩ གསེར་ ། ༡༠ གསེར་ ། ༡༡ གསེར་ ། ༡༢ གསེར་ ། ༡༣ གསེར་ ། ༡༤ གསེར་ ། ༡༥ གསེར་ ། ༡༦ གསེར་ ། ༡༧ གསེར་ ། ༡༨ གསེར་ ། ༡༩ གསེར་ ། ༢༠ གསེར་ །

ནལ་འབྱོར་རིལ་བས་གནས་པར་བྱ། ། ཞེས་གསུངས་སོ།

ཡི་དྲལ་ས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་གསང་བའི་གནས་ལ་འཁོར་ལོ་འི་ཤུགས་ཅན་མའོ། །
གྲིན་དེ་བདུ་བ་ཤང་ལམ་དུ་དུས་སྐྱེས་མ་སྟེ་འདུ་བ་ཅན་ནོ། །སྟོར་ཤུར་བསྐྱེད་གཉིས་ལ་ཆང་

[illegible]

འཛོང་མཐོ། །གསེར་སྤྱིང་བྱིན་པ་གཉིས་ལ་འཁོར་ལོའི་གོ་ཆ་མ་སྟེ་ཉེ་བའི་འདུ་བ་ཅན་
 བོ། །ཤོང་བྱིང་སོར་མོ་ནམས་ལ་ཡིན་དུ་དཔའ་མོ་འོ། །སིན་རྒྱུ་འོ་གོང་གཉིས་ལ་
 སྟོབས་མོ་ཆེ་སྟེ་དུར་ཁྲོད་དོ། །མཐུ་མཐེ་བོང་གཉིས་ལ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་མ། ཀླུ་ལྷ་
 བྱས་མོ་གཉིས་ལ་བཙོན་འགྲུས་ཆེན་མོ་སྟེ་ཉེ་བའི་དུར་ཁྲོད་དོ། །རྒྱའི་འཁོར་ལོ་སྟེ་ས་
 འོག་ལ་སྒྱུད་པ་ནམས་བསྐྱས་སོ།^༩

འདྲིར་ནི་གདམས་ངག་འདི་ཡིན་དེ། བུ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་
 ཅད་ཐིག་ལེ་དང་བཅས་པར་ངེས་པར་བདག་ས་དེ། བུ་ཆེ་ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་ཡོངས་སྒྱུ་
 བྱུར་པ་ལས་ཅི་བས་ཀྱིས་སྟོང་པའི་འཁོར་ལོའི་ནམ་པས་གནས་ལ་སོགས་པ་ནམས་སྒྱི་
 བོ་ལ་སོགས་པར་ཅིག་ཅར་གྱིས་བལྟ་བར་བྱའོ། །གནས་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་དུ་དེ་དང་
 དེའི་གནས་ལ་གནས་པའི་ཅ་ནམས་ལྟ་དེ་དང་དེའི་གཞུགས་སྒྱུ་ཡོངས་སྒྱུ་བྱུར་བར་ནམ་
 བར་གནས་པར་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་བྱི་རོལ་གྱི་ཤིང་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཉེ་བར་
 གནས་པའི་རྒྱས་གསོ་བར་བྱེད་པ་ལྟར་ལྷས་ལ་ཡང་ཅ་ནམས་ཀྱིས་སེན་མོ་ལ་སོགས་པ་
 གསོ་བར་བྱེད་པས་མཉམ་པ་ཉིད་དོ། །བྱི་རོལ་དུ་རྟོ་རྩེའི་གནས་བྱང་རྒྱབ་ཆེན་པོ་ནི་
 གནས་དང་རྟོ་རྩེ་ཆེན་པོ་འོ། །ལྷས་ལ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་ནི་རྟོ་རྩེའི་གནས་
 མོ། །ཨ་མ་རྒྱུ་ནི་རྟོ་རྩེ་ཆེན་པོ་འོ། །ཁ་དང་སྒྲ་བྲག་གཡས་དང་གཡོན་དང་། བཤའ་ལམ་
 ལ་རིམ་གྱིས་བྱ་གདོང་མ་ལ་སོགས་པ་སྒྲི་སྒྲིང་མ་ནམས་སོ། །ན་བ་གཡས་གཡོན་གཉིས་

༡ གསེར་ འཁོར་གོ། ༢ གསེར་ ཀླུ། ༣ བྱ་དཔེར་ (ཀླུ་མཚན་གྱི་ལྷ་ལྟེན་གྱི་ ཨ་མ་རྒྱུ་ལྷ་ལྟེན་གྱི་ སྒྲི་གཏེན་)
 རྒྱའི་འཁོར་ལོ་སྟེ་ས་འོག་ལ་སྒྱུད་པའོ། །འདྲིར་ནི་ས་འོག་ལ་གནས་པ་ནམས་བསྐྱས་སོ། །༤ གསེར་ བུ་ཆེ།
 ༥ གསེར་ བུ། ༦ གསེར་ ཐམས་སྒྱི་བོ་ལ་སོགས་པ་ནམས་སྒྱི་བོ། ༧ གསེར་ དེ་དག་ མེད། ༨ གསེར་
 བྱ་ མེད། ༩ གསེར་ དུ། ༡༠ བྱ་དཔེར་ (མཐུ་མཐེ་ཆེན་པོ་) བྱང་རྒྱབ་ཆེན་པོའི་འདུ་ཞེས། ༡༡ གསེར་
 བྱང་རྒྱབ་ཆེན་པོ་ལ། ༡༢ གསེར་ དང་ མེད། ༡༣ གསེར་ ཨ་མ་རྒྱུ།

སྤྱིད་དང་། རྩི་ལ་ཆགས་མཉམ་ཀྱན་དུ་རྟོག་པའི་སྒྲུབས་བཅོམ་ཞིང་།
 བྱེད་ནི་དངོས་ཀྱན་རང་བཞིན་ཉིད་དུ་མཁའ་བཞིན་གཟིགས་གྱུར་པ།
 ལྷི་བའི་ཆུ་ཡིས་རབ་བྱས་སྤྱིང་ཟེའི་ཐུགས་ནི་བྱ་མཚོའི་མཚོག
 ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་བདག་ལ་ཤིན་དུ་བཙུང་བར་མཛད་དུ་གསོལ།

[illegible]

୧. ସାକ୍ଷେତ୍. ଶ୍ରୀମାତା । ୨. ସାକ୍ଷେତ୍. ଉପା । ୩. ସାକ୍ଷେତ୍. ନିଧା । ୪. ସାକ୍ଷେତ୍. ମୁ । ୫. ସାକ୍ଷେତ୍. ମୁନିପା ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) श्री गणेशाय नमः ।

१. གཤེད་ བཀྲུགས། २. གཤེད་ ཡུ་རུ། ३. གཤེད་ ཀོད། ४. གཤེད་ རྩོམ་རྩོ། ५. གཤེད་ མོས་པར།
 ६. གཤེད་ གནས་པར་བྱའོ། །ནམ་ཐྱེད་ཀྱི་ཐུན་ལ་ཉི་མ་ཐྱེད་ཀྱི་ཐུན་བཞེ་བྱས་ནས་ཅི་པའི་པར་གནས་པར་བྱའོ། །
 ७. གཤེད་ ངག་གི་བྱས་ནས་ངག་གི་ ८. གཤེད་ ཡུ་ལ་སོགས་པ་ཡི་གེ་ཀུན་རང་བཞེན་དུ་རྟོགས་ནས་སོ།
 ९. གཤེད་ པ། १०. གཤེད་ ཀུན། ११. གཤེད་ རྩོམ་རྩོ།

ལྷ་དང་དྲི་ཞིས་པོ་ལ་སོགས་པའི་རི་ལུང་མ་གཞན་གང་ཡང་རྒྱང་བའི་རྗེས་དང་བསྐྱེས་པའི་
 ལྷ་བའི་རིལ་བྱས་མཐུལ་རྒྱར་བཞི་བ་བྱུགས་དེ། དེའི་དབྱས་སྤྱུ་ལག་བ་བཞག་ལ་བ་རྩ་
 ཞིས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ་ཙུ་བཞི་རྣམས་དང་གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་
 སོགས་པ་མིང་བཅུ་པོ་ཡང་དེ་དང་དེའི་སའི་ལྷག་པར་མོས་བ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བས་བརྗོད་ཅིང་།
 དེ་ནས་མཐུལ་དེ་ལ་སྐད་ཅིག་མས་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ལ་གནས་པའི་རི་རབ་ཀྱ་སྤེང་དུ་
 བསྐྱ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའི་ཉི་མ་ལ་བོ་གི་ཡི་གེ་བལྟའོ། །དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཡེ་ཤེས་
 ཀྱི་འཁོར་ལོ་སྒྲུན་དངས་དེ། དེ་ལ་རབ་དུ་བྱུགས་ཤིང་ཡོངས་སྤྱུ་བྱར་བ་ལས། བཅོམ་
 ལྷན་འདས་མ་འཁོར་དང་བཅས་བ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྗོགས་པར་བལྟའོ། །

དེའི་རྗེས་སྤྱུ་རང་གི་སྤྱིང་གའི་ས་ཁོན་ལས་འཕྲོས་པའི་པི་ཤང་མ་ལ་སོགས་པ་
 བའི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ཅིང་། དེ་ལས་སྒྲོས་པའི་རིན་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་
 བ་རྣམ་པ་བདུན་བཤམས་ལ། ཇི་ལྟར་ཆོ་གས་དག་པར་བྱུར་བའི་ལག་པ་བཤམ་པས་
 མཐུལ་གྱི་དབྱས་སྤྱུ་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་ལ་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་མེ་ཏོག་དབྱལ་ལོ། །ཡང་
 དེ་ཉིད་ལ་བཅོམ་ལྷན་འདས་མའི་སྤྱིང་པོ་དང་ཉེ་བའི་སྤྱིང་པོའི་སྤྱུགས་གཉིས་ཀྱིས་དབྱལ་
 ལོ། །དེའི་རྗེས་སྤྱུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་གཤམ་ཇི་འཛེམས་མ་ལ་བྱུག་གི་བར་དུ་
 རང་རང་གིས་སྤྱུགས་སྤྱུགས་རྣམས་ལ་གཤམ་སྐྱོར་དང་སྤྱུགས་བྲལ་རྣམས་ལ་གཤམ་
 སྐྱོར་གྱིས་གནས་ཇི་ལྟ་བར་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་མེ་ཏོག་དབྱལ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་འཆད་
 བར་འགྱུར་བའི་ལག་པའི་མཆོད་པའི་རིམ་པས་ལག་བ་ལ་བསྐྱེད་པའི་ལྷ་རྣམས་ལ་གནས་
 དེ་དང་དེ་དག་གི་སྤྱུགས་ཨོྲཱ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་མེ་ཏོག་དབྱལ་ལོ། །དེ་ནས་
 ལག་བ་གཤམ་པར་སོན་པའི་མེ་ཏོག་ནི་ཀླང་བ་བསྐྱེད་པའི་སྤྱུགས་བརྗོད་བ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་
 བས་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གཏོར་དེ་སྤྱི་བོར་ཐལ་མོ་སྤྱར་བ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བ་ལག་བ་ལ་གནས་

༡ གཤམ་ གྲ། ༢ གཤམ་ ལག་པའི་ལག་བ། ༣ གཤམ་ ཐུགས་གི ༤ གཤམ་ གྲ།

བའི་ལྷའི་འཁོར་ལོ་བདག་ཉིད་ལ་བསྟེན་པར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་སྐྱེས་སྤྱིང་པོ་ལ་སོགས་
 བ་དང་ཀང་བ་བརྒྱད་པའི་སྐྱེས་ཀྱིས་བསྟོན་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བས་ཇི་ལྟར་བཞུགས་པའི་བསྟོན་
 བས་ཡང་དག་པར་བསྟོན་དོ། །ཇི་ལྟར་ཉུས་པས་སྤྱིག་པ་བཤུགས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་།
 བསམ་གཏན་དང་སྐྱེས་བཞུས་པ་དང་སྟོན་ལས་གདབ་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་ཡི་གེ་
 བརྒྱ་པ་བཞུགས་ཅིང་། ཡོ་ཡོག་ཤུ་རྩ་མཉམ་སྐྱེས་ཤུ་རྩ་ཉེ་ཞེས་བཞུགས་དེ། སྐྱེས་
 དང་བཅས་པའི་བརྒྱ་བསྟོན་དའི་ཕྱག་རྒྱས་དབྱེས་པར་བྱས་ལ། ཕྱག་རྒྱ་ཉི་དར་བརྒྱས་
 ནས་འབྱུང་བའི་ཕྱག་རྒྱ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བས་སེ་གོལ་གདབ་པ་དང་བཅས་པའི་ཡོ་ཡོག་ཤུ་རྩ་
 བཞུགས་པས་གཤེགས་སྐྱེས་གསོལ་དེ་འཁོར་ལོ་དེ་དག་བདག་ལ་རབ་དུ་གཞུག་གོ། །དེ་ནས་
 མཐུལ་གྱི་རེའུ་དབྱི་བར་བྱའོ་ཞེས་ཤེས་པར་བྱའོ། །

ལག་པ་ལ་མཚོན་པའི་ཆོག་བཞུགས་པར་བྱ་སྟེ། ཆོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་
 བ་ལ་དབལ་རྩི་ཇི་སྐྱེས་མོ་འི་ནལ་འབྱུང་དང་ལྷན་པའི་ནལ་འབྱུང་བས་ལག་པ་གཡོན་
 པའི་མཐོ་པོ་དང་མཚུབ་མོ་དང་གྲུང་མོ་དང་སྤྱིན་ལ་ག་དང་མཐོ་ལྷ་ཆུང་དང་དེ་དག་གི་སེན་
 མོ་འི་ཅེ་མོ་ནམས་ལ་རྩི་ཇི་སེམས་དབའ་དང་། ནམ་པར་རྣང་མཚན་དང་། རྣང་བ་
 མཐུལ་ཡས་དང་། མི་བསྟོན་པ་དང་། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྷན་དང་། རོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་
 རང་བཞིན་རིམ་པ་བཞིན་དུ་དཀར་པོ་དང་སེར་པོ་དང་དམར་པོ་དང་ནག་པོ་དང་། ལྷང་
 གྱའི་ཁ་དོག་ནམས་ནི། ཡོ་ཉེན་མེད་ལྷ་རྒྱུ། བཤུ་ཤེ། རྒྱུ་རྒྱུ་ཉི་ཤེས་པོ་ཡི་གེ་
 ནམས་ནམ་པར་བསྟོན་དོ། །ལག་པའི་མཐོ་ལ་དུ་སྐད་ཅིག་མས་ཇོགས་པར་གྲུང་པའི་བརྒྱ་
 དམར་པོ་འདབ་མ་ལྷ་པ་བསམས་ལ། དེའི་ཤར་ལ་སོགས་པའི་འདབ་མ་ནམས་ལ་གཡོན་
 སྟོན་གྱིས་རིམ་པ་ཇི་ལྟར་བྱ་གཤིན་ཇི་མ་དང་གདི་ཕྱག་མ་དང་། ཀྱན་བསྟོན་མ་དང་།
 དུག་མོ་དང་། གཏུམ་མོ་འི་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོན་མོ་དང་། དཀར་མོ་དང་། སེར་མོ་

༡ གཤེན་ བསྟོན་ ༢ གཤེན་ ལྷན་ ༣ གཤེན་ མཚན་ ༤ གཤེན་ ཉི་ ༥ གཤེན་ རོ་ ༦ གཤེན་ རོ་ ༧ གཤེན་ ཇི་ལྷན་

དང་། ལྷང་གུ་^༡དང་། ཏུ་བའི་མདོག་ཅན་ནམས་ནི་དེ་ཡི་^༢ཉི་མོ་ཉི་ཉི་^༣ལྷོ་ལྷོ་པཌཔཌ་
ཅེས་ས་པོན་གྱི་ཡི་གེ་ནམས་བཟུངོ། །ཟེའུ་འབྲུ་ལ་དེ་^༤ཟེ་པག་མོའི་རང་བཞིན་ཁ་དོག་
དམར་མོ་ཨོྲཱི་ཞེས་བྱ་བའི་ས་པོན་ནོ། །དེ་དག་^༥དེ་དག་གི་གཟུགས་བརྟན་ནམ་འཁོར་
ལོ་གསུམ་ལག་^༦བའི་རྒྱབ་དུ་གསལ་བར་བཟུངོ། །

དེ་ནས་ལག་བར་སོན་བའི་ས་རྒྱ་མེ་རྒྱང་དང་ནམ་མཁའི་ཁམས་ལ་ལྷང་བྱིད་མ་
དང་། གསོད་བྱིད་མ་དང་། འབྲུགས་བྱིད་མ་དང་། གར་གྱི་དབང་ཕྱག་མ་^༧དང་།
བསྐྱེད་དུ་བ་ཅན་གྱི་རང་བཞིན་དུ་ལྷག་བར་མོས་དེ། དེ་ནས་^༨ལག་བར་སོན་བའི་ཡི་གེ་
ནམས་ལ་ཁྲ་བའི་རྣམ་བྱུགས་ལ་ལག་བའི་མཐིལ་དེར་^༩ནལ་འབྱོར་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱིན་
གྱིས་བསྐྱབས་^{༡༠}བའི་འཁོར་ལོ་གསུམ་གྱི་རང་བཞིན་དུ་ལྷག་བར་མོས་དེ། ཁྲ་བ་ལ་སོགས་
བའི་རྣམ་དེ་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་སྒྲགས་དང་ཀླང་བ་བརྒྱད་བའི་སྒྲགས་ཀྱིས་དབྱལ་བར་བྱུངོ། །
ད་ནས་མཆོད་པས་ཡང་དག་བར་མཆོད་ལ་ལྷག་ཆད་ཡོངས་སུ་བསྐྱང་བར་བྱ་བའི་དོན་དུ་
ཡི་གེ་བརྒྱ་བ་བཞི་དེ་ཅིང་ཆོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བྱིན་གྱིས་བསྐྱབ་བའི་དོན་དུ་གསོལ་བ་བདེ་བ་
ལ། ཁྲ་བའི་རྣམ་དེ་རྣམ་གཞན་ལ་སྒྲགས་བཤམ་ཡང་ན་གཞན་ཅིག་དུ་སྒྲགས་ནས་ལག་
བར་གནས་བའི་རྣམ་དེ་གཡོན་བའི་སྤྱིན་ལག་གིས་བརྒྱང་ནས་སྤྱིང་ག་དང་སྤྱིང་དང་དབྱལ་བ་
ལ་ལྷོ་ལྷོ་ཞེས་བཞེད་པ་སྤྱིན་དུ་འགྲོ་བས་བྱུགས་དེ་ལྷོ་ལོ་གསུམ་དེ་ནམས་བདག་ལ་རབ་
དུ་ཐིམ་བར་ལྷག་བར་མོས་པ་^{༡༡}བྱུངོ། །ཆོག་འདི་ནི་ཀུན་དུ་སྤྱོད་བའི་རྒྱུད་ལས་རབ་དུ་
བྱུབ་པར། །ལག་བ་མཆོད་བའི་ཆོག་འོ། །

ཡང་ན་གོང་དུ་བཤད་བའི་ཆོགས་དག་བར་གྱུར་བའི་ལག་བ་གཡོན་བའི་སྤྱིན་
ལག་གིས་^༡གནས་དང་ཉེ་བའི་གནས་ལ་སོགས་བའི་མིང་བཅུ་བཞི་དེ་ཅིང་ལྷོ་ལོ་གསུམ་

༡ གསོད་ ལྷང་གུ
༢ གསོད་ ཉི་མོ་ ༣ གསོད་ ཉི་མོ་ ༤ གསོད་ དེ་དག་ ༥ གསོད་ ལགས།
༦ གསོད་ ཕྱགས་མ། ༧ རྒྱ་དབང་ (༥༥༥) དེ་ནས་དེ་གས། ༨ གསོད་ དེ་ ༩ གསོད་ བསྐྱབ་
༡༠ གསོད་ མོས་པར། ༡༡ གསོད་ གསོ་མེད།

[illegible]

ལྷེ་ཅན་གཡས་པའི་དགང་གཟར་དང་། ཅིག་ཤེས་ཀྱི་སྒྲགས་གཟར་གྱིས་རང་གི་ལྷེ་
བའི་བསྐྱེད་ཟུང་འབྲུལ་གནས་པའི་འབར་བའི་སྤང་བས་འཁྲུགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་
སྦྱོན་སྤྲེག་བྱ་ཞེས་སྒྲགས་པར་ནང་གི་སྦྱོན་སྤྲེག་གོ། །

སྒྲགས་ཨོལ་ལྷུ་ཅོ་ཁྲ་བརྟུ་ཨུ་ཁྲ་ཁྲ་ ཨོལ་ལྷུ་ལྷུ་ལྷུ་ལྷུ་ལྷུ་ལྷུ་ལྷུ་
བར་བྱའོ། །

དེ་ནས་ཁམས་གསུམ་གྱི་འཁོར་ལོ་འཁོར་བ་དང་སྤྱིང་ཆེད་གཉིས་སུ་མེད་པའི་
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་ལ་མན་ངག་བཞིན་དུ་སྤང་བོ་ལ་སོགས་པའི་ཞིང་བསྤྲེགས་པ་ནི་སྒྲན་མེད་
པའི་སྦྱོན་སྤྲེག་གོ། ཞི་བ་དང་རྒྱས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྤྱི་རོལ་གྱི་སྦྱོན་སྤྲེག་གི་ཚོ་གའི་ལས་
ཀྱི་ཆེས་སུ་འབྲང་བར་གྱུར་པའི་ཐབ་དང་། མེ་རྟོག་དང་ཤིང་དང་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ལ་
སོགས་པ་ཆེས་སུ་དྲན་པར་བྱའོ། ། འདྲིང་ཡི་གེ་མངས་པས་འཛིགས་པས་མ་གྲིས་སོ། །
དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་མཚོད་པ་དང་གཏོར་མའི་ཚོ་གའ་ལ་སོགས་པ་དང་བཅས་པ། བཅོམ་ལྷན་
འདས་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་སྒྲོམ་པ་རྒྱས་པར་བསྟན་པའོ། །

བར་མ་འདོད་པས་ནི་སྦྱོགས་ཀྱི་འདབ་མ་བཞི་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་
པ་བཞིའོ། །སྦྱོགས་བྲལ་གྱི་འདབ་མ་ནམས་བསྐྱེད་སྦྱོང་ལ་གནས་པའི་དམ་ཚིག་གི་
ཆས་ནམས་སོ། །དབྱས་སུ་ཇི་ལྟར་བསྟན་པའི་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་ཞེས་བྱ་བ་སྤེ་སྤེ་དཀྱི་
བདག་ཉིད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲོམ་པར་བྱའོ། །གཏོར་མ་དང་མཚོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་
ལྟར་འབྱོར་པས་ལྷ་པོ་ནམས་རང་རང་གི་སྒྲགས་ནམས་ཀྱིས་བྱའོ། །སྤང་བའི་འཁོར་ལོ་
ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀྱང་སྤང་བཞིན་དུ་བྱའོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་འདི་ནི་ཨོལ་ལྷུ་གྱི་གནས་

༡ གཞེས་ ཀྱིས། ༢ གཞེས་ རང་གི་ མེད། ༣ གཞེས་ ཅི། ༤ གཞེས་ ཉི་ཁྲ། ༥ གཞེས་ བསྤྲེག
༦ གཞེས་ འབྲུལ། ༧ གཞེས་ བྱའོ། ༨ གཞེས་ འདྲིང་ཡི་གེ་ མེད། ༩ གཞེས་ བསྒྲོམ། ༡༠ གཞེས་ ཀྱིས།
༡༡ གཞེས་ བསྤང་།

ལས་བྱང་བའི་རིམ་པས་ནི་ཞབས་གཡོན་སྡེ་དང་དུ་བརྒྱུང་རར་བྱུང་བའོ། །སྦྱིད་པར་བྱེད་
བའི་ས་ཐོན་དང་སྦྱིང་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲགས་ནམས་དང་འཁོར་གྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་
སོགས་པ་ཡང་སྒྲར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །

བསྐྱུས་པ་ལ་དགའ་བས་ནི་ཇི་ལྟར་བཤད་པའི་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་གཅིག་གྱུ་
ཉིད་བསྐྱོམ་པར་བྱའོ། །མཚོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་འབྱོར་བས་བཅོམ་ལྷན་འདས་
མ་ལ་བྱའོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་གང་ལ་ཡང་འདི་དག་ནི་རང་གི་སྦྱིང་གར་ཁྲ་བ་ལ་གནས་
པའི་ཨོྲ་དཀར་པོ་འོད་རིམ་ནམས་ཀྱིས་བཀྲུག་པའི་སངས་རྒྱས་ལ་སོགས་པ་ལ་མཚོད་
ནས་ཇི་སྦྱིད་སྦྱིང་པ་ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་ནམ་པར་བསྐྱོམས་ཏེ། ཁྲ་བ་དང་རྩི་རྩི་དང་བོ་གི་ས་
ཐོན་ཡོངས་སྒྲ་བྱུང་བ་ལས་བསྒྲ་དང་ཁྲ་བའི་གདན་ཅན་ཡང་བསྐྱོམ་པར་བྱའོ། །

འོན་ཏེ་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་འདི་ཁོ་ན་རྩི་རྩི་ནམ་པར་རྫོང་མཚོ་མ་རྩི་རྩི་ནམ་
འབྱོར་མ་ཞེས་ཀྱང་བྱེད་པོ། །ལྷག་མ་འདི་སྡེ་གཞུང་དང་གདམས་ངག་ཇི་ལྟར་མན་ངག་
གི་ནམ་པར་དབྱེ་བས་བཞི་སྡེ། འདི་ལྟ་སྡེ་རང་གི་སྡེ་བའི་དབྱས་སྒྲ་གནས་པའི་རོ་ལས་
བྱང་བའི་མའི་འཁོར་ལོ་རྒྱར་གསུམ་པའི་སྡེ་དང་དུ་བསྒྲ་དམར་པོ་འདབ་མ་བཞི་པ་ལ་ཡོ་གེ་
སྡེ་དམར་པོ་བཤད་པོ། །དེ་དག་ཡོངས་སྒྲ་བྱུང་བ་ལས་སྒྲ་མདོག་དམར་མོ་ཞབས་གཡོན་
བསྐྱུམ་ཞིང་གཡས་བརྒྱུང་བས་རོ་འོ་གདན་ལ་གནས་པ་དབྱ་སྒྲ་དམར་པོ་བྱེན་ལ་བཞེས་པ།
ཕྱག་བཞི་པའི་གཡས་པ་གཉིས་ན་རྩི་རྩི་དང་ལྷགས་ཀྱའོ། །གཡོན་གཉིས་ན་ཁྲ་ག་
དང་ཐོད་པ་དང་། སྦྱིགས་མཚུབ་དང་ཞགས་པར་བཅས་པ་འཛིན་པ། གསུམ་པ་འབྱང་
བ་ཕྱག་ཞལ་ཅན་གྱི་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་བསྐྱོམ་པར་བྱའོ། །

༡ ལྟ་དམར་ (ནེལ་ཏྲུཾ) རྟོགས་པར་བྱེད། ༢ གཞེན་ པའི་ མེད། ༣ ལྟ་དམར་ (ཡམྲོ་ཏྲུཾ) ཇི་ལྟར་བཞུད་པའི།
༤ གཞེན་ འདི་ལྟར། ༥ གཞེན་ རམ། ༦ གཞེན་ སྡེ་ ༧ ལྟ་དམར་ (སྦྱགས་ཏྲུཾ་མཏུ་མུན་) བཅོམ་སྐྱོན་
འདས་མའི་རང་བཞིན།

བྱུང་པར་གྱི་གཞུགས་ནི་གོང་བཞིན་དུ་སྡེ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཡག་ཞལ་མའི་རིམ་པའོ། །
 བྱུང་པར་ནི་ཨོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱིང་པོ་འོ། །ཨོྲཱི་བརྒྱུ་བར་ནི་ཨུའེ་ཤལ་ས་བདུའུ་ཏྲཱི་
 ཧྲོྲཱི་སྤྱུ་ཏྲཱི་ཞེས་བ་ནི་སྤྱིང་པོ་འོ། །སྤྱི་མའི་ནལ་འབྱེར་སྤོན་དུ་འགྲོ་བས་འབྱམ་སྤྲུག་གཅིག་
 བཞུས་པས་འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་ལ་ཐེ་ཚམ་མེད་དོ། །ཨོྲཱི་ཨུའེ་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་སྤྱུ་ཏྲཱི་སྤྱུ་ཏྲཱི་སྤྱུ་ཏྲཱི་སྤྱུ་ཏྲཱི་
 བྱིས་རས་རིས་ཀྱི་མདུན་དུ་ཤ་ཆེན་གྱི་ཕྱེ་མས་བདུག་སྤོས་དབྱལ་ཡོ། །ཞལ་ཉི་ཤུ་ཙ་
 བཅིག་བྱིས་འདོད་པའི་དོན་འགྲུབ་པའོ། །ཨོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་
 བའི་ཡི་གེ་བདགས་ནས་བདུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལས་རབ་དུ་ཞེ་བའི་དོན་དུ་ཉེ་བར་སྦྱང་པོ་
 བ་ལྷས་མཆན་མོ་གཏོར་མ་བདང་ངོ། །སྦྱོང་མ་ཡིན་པ་ལ་ཆོ་ག་འདི་བསྟན་པར་མི་བྱའོ། །
 དེས་རྡོ་རྗེ་ནལ་འབྱེར་མ་ནམས་ཀྱིས་བྱིན་བྱིས་སྤྱི་བ་བར་འགྱུར་ངོ། །ཨོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་
 ཏྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི་
 འབད་པར་བྱའོ། །སྤྱར་བ་ཤད་པའི་གཏོར་མའི་ཆོ་ག་ལ་སོགས་པ་ཡང་འདིར་བྱ་སྟེ། ཆོ་
 ག་ལྷག་མ་བྱུང་པར་འཕགས་པས་སོ། །

ཚལ་གཞན་ཡང་འདིར་སྤྱིང་གར་བརྒྱ་དམར་པོ་ལ་ཨོྲཱི་ལས་བྱུང་བའི་ཉི་མ་ལ་
 བཀས་པའི་ཧྲོྲཱི་དཀར་པོས་བྱིན་བྱིས་བཞུགས་པའི་རྡོ་རྗེ་དམར་པོ་ཙེ་ལྷ་ཡོངས་སྤྱུ་གྱུར་བ་
 ལས་སྤྱི་མའི་ག་དཀར་མོ་བརྒྱ་དམར་པོ་དང་ཉི་མ་ལ་བཀས་པ་མི་ཤེས་པའི་སྤྱིས་བྱའི་སྤྱིང་
 དུ་ཞབས་གཡོན་བསྐྱམ་གཡས་བརྒྱུང་བས་བཀས་པའོ། །དེའི་སྤྱིང་གར་ཉི་མ་ལ་བཀས་
 པའི་ཧྲོྲཱི་དམར་པོ་འི་ཡི་གེས་བྱིན་བྱིས་བཞུགས་པའི་ཉི་མ་ལ་བཀས་པའི་རྡོ་རྗེ་འོ། །སྤྱི་
 ཆོགས་བརྒྱ་དང་ཉི་མའི་གདན་ལ་བཀས་པའི་མི་བསྐྱོད་པས་དབང་བསྐྱར་དེ། བཞན་ཐམས་
 ཅད་ནི་སྤྱར་བཞིན་ནོ། །

༡ གཞེན་ ཧྲོྲཱི། ༢ གཞེན་ བྱ་བའི་ནི། ༣ གཞེན་ ཨུའེ། ༤ གཞེན་ ཏྲཱི་ཏྲཱི། ༥ བྱ་དཔེན་ (ཨུམ་ཧྲི་དཔེན)
 ཉེ་བའི་སྤྱིང་པོ་འོ། ༦ གཞེན་ ཐ་ཆན། ༧ གཞེན་ ཧྲོྲཱི། ༨ གཞེན་ ཧྲོྲཱི་ཧྲོྲཱི། ༩ གཞེན་ བདུགས།
 ༡༠ གཞེན་ ཧྲོྲཱི། ༡༡ གཞེན་ ཏྲཱི་ཏྲཱི།

དེའི་རྗེས་སུ་ལྷེ་བར་སྒྲ་ཚོགས་པ་དྲུ་ལ་གནས་པའི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་དམར་
 སྒྲ་ལ་སྒྲིང་ཀར་པོ་བཟུས་ལ། སྒྲགས་དེའི་སྤང་བ་དཀར་པོ་སྤང་བའི་ནམ་པ་བཞིན་དུ་
 འཁོར་ལོ་བསྐྱོར་བའི་ནལ་འབྱོར་གྱི་ཁ་ནས་འཕྱོན་དེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་དན་གྱི་ཚོགས་
 དང་ཉོར་བྱ་དང་སྒྲགས་དང་སྒྲན་དང་ཁྲ་བ་དང་སྐར་མ་དང་ཡི་བའི་རྩན་རཅོས་ཀྱི་སྒྲ་
 རྩལ་ལ་སོགས་པའི་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་པ་ཁྲེར་ནས་ལྷེ་དའི་བྱ་གར་རབ་དུ་ཁྲགས་པས་རང་
 དང་གཞན་གྱིས་མི་ཤེས་པའི་སྒྲན་པ་བསྐྱེག་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་སྒྲོམ་ཞིང་། རྒྱར་བ་
 ལ་སོགས་པའི་ཉེས་པ་དང་བྲལ་བས་སྒྲགས་བརྒྱས་སོ། །སྒྲགས་ནི་སྒྲི་སྒྲི་ཞེས་བའོ། །
 གང་གི་ཆོ་ལྷང་བར་འདོད་པར་གྱུར་ན་དེའི་ཆོ་སྒྲགས་ཀྱི་སྤང་བ་ལྷེ་བ་ལ་གནས་པའི་སྒྲི་
 གི་ཡི་གེ་ལ་རབ་དུ་ཐིམ་ནས་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ལ་ཇི་ལྟར་བདེ་བས་ལྷང་བར་བྱའོ། །
 ཡང་ན་ཡི་གེ་ཨུལ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་པདྨའི་འདབ་མ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་ལྷེ་ལ་སྒྲི་
 དམར་པོ་གསལ་ཞིང་འབར་བ་ནམ་པར་བསྒྲོམས་དེ། དེ་ལ་སེམས་ཅི་གཅིག་པས་བདྱན་
 བར་བྱས་ནས་བརྒྱ་སྤྱད་ཀྱི་སྤང་བ་ལ་ཐུན་གསུམ་མམ། བཞིར་བརྒྱས་པར་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་བརྒྱས་པ་དང་། བསྒྲོམ་པའི་ནལ་འབྱོར་པས་འབྱམ་སྒྲག་བདུན་བརྒྱས་
 པས་བསྒྲན་བཅོས་ཐམས་ཅད་ལ་མཁས་པར་འགྱུར་བ་དང་། སྒྲི་ནོ་བར་གྱུར་པས་འཛིན་
 བཟང་བ་དང་། ཚོགས་ཀྱི་རྒྱལ་གྱིས་མི་ཉོན་པ་དང་། སྒྲན་ངག་ལ་མཁས་པར་གྱུར་
 པ་དང་། དེམས་དང་དུག་དང་མཁའ་འགྲོ་མ་ནམས་ཀྱིས་གཞོད་མི་ཉུས་པར་འགྱུར་རོ། །
 སྒྲགས་འདི་གྲུབ་པར་གྱུར་ན་སྒྲགས་འདི་བརྒྱས་པའི་ཐོད་ལེ་ཀོར་གང་གིས་འཕག་དུ་གཏད་
 བ་དེར་སྒྲིངས་པ་ཡིན་ཡང་ཚོགས་སུ་བཅད་པ་ལ་མཁས་པར་འགྱུར་རོ། །དབང་དུ་བསྐྱེ་
 བ་ལ་འདི་ཉིད་དམར་པོ་འདི་ནམ་པར་བསྒྲོམས་དེ། ཚོ་ག་བཞིན་དུ་བདུད་ཅི་སྤངས་ནས་རང་

༡ གཞེན་ ནན་པ། ༢ ལྷ་དཔེན་ (ལྷུང་རྩན) མི་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད། ༣ གཞེན་ ཉྱ། ༤ གཞེན་ ལྷར།
 ༥ ལྷ་དཔེན་ (ལྷུང་རྩན) རང་གི་ལྷེ་ག། ༦ ལྷ་དཔེན་ ཉྱ། ༧ གཞེན་ སྒྲོམ། ༨ ལྷ་དཔེན་
 (ལྷུང་རྩན་ཀྱི་) སྒྲ་བ་དང་ལྷན་ངག་མཁན། ༩ གཞེན་ གཞོན། ༡༠ གཞེན་ གི་ ༡༡ གཞེན་ དེས།

ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།
 ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ། ཨོམ་བཟུང་ཏུ་གྱིན་ཡོ།

ཚུལ་གཞན་ཡང་འདི་ཉིད་རྒྱ་དམར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་དབྱ་སྐྱེད་ཚོགས་གྲོལ་ལ་.....
 བར་ཡང་མཐོང་ངོ། །གཞན་ཡང་རོའི་གདན་མེད་པ་ཡང་ཡོད་དེ་སྐྱགས་ནམས་ནི་སྒར་
 གྱི་དེ་ཉིད་ངོ། །ཚུལ་གཞན་ཡང་རང་གི་ལྷ་བ་ལ་གནས་པའི་བདུ་དཀར་པོ་དང་ཉི་མ་ལ་
 གནས་པའི་ཚོས་འབྱུང་སེམ་རྒྱར་ལྷར་དམར་ངའི་དབྱས་སྐྱེད་ལོ་གྱི་སྐྱེས་པོ་ལས་བྱུང་.....
 བའི་སྐྱེད་མཛོག་སེར་མོ་རང་ཉིད་ཀྱིས་གྱི་གྲུག་གིས་རང་གི་སྐྱེད་ཅན་མགོ་བོ་ལག་པ་...
 གཡོན་པ་སྐྱེད་དུ་བརྒྱུང་བས་འཛིན་པ། ལག་པ་གཡས་པ་གྱི་གྲུག་འོག་དུ་བརྒྱུང་བས་
 འཛིན་པ། ཞབས་གཡས་པ་བརྒྱུང་ཞིང་གཡོན་བརྒྱུས་པ། སྐྱེ་ལས་ཙུ་ཡབ་རྒྱུད་འཕྲིན་ལས་
 ལས་ཁྲག་གི་རྒྱན་འཕྲིན་ནས་དེའི་ཁར་ལྷུང་སྟེ། གཞན་པ་རོལ་གྱི་རྒྱན་གཉིས་ནི་ལ་ལན་
 དང་རས་ན་ལས་འཕྲིན་དེ་ངོས་གཉིས་ཀྱིས་ནལ་འབྱོར་མ་གཉིས་ཀྱི་ཁར་འཇུག་པ་བརྒྱུས་
 བར་བྱའོ། །དེ་ལ་གཡོན་པའི་ངོས་སྐྱེད་དེ་རབ་སྐྱགས་མ་ལྷུང་གྲུ་གཡོན་པས་གྱི་གྲུག་
 དང་གཡས་པས་ཐོད་པ་འཛིན་པ། ཞབས་གཡས་བརྒྱུས་ཞིང་གཡོན་བརྒྱུང་བའོ། །གཡས་
 ངོས་སྐྱེད་ནམ་པར་སྐྱེད་མཛོག་སེར་མོ་གཡས་པས་གྱི་གྲུག་དང་གཡོན་པས་ཐོད་པ་...

༡ གཞན་པ་ ཨོ། ༢ གཞན་པ་ སྐྱེ། ༣ གཞན་པ་ བར་ མེད། ༤ གཞན་པ་ བ་ མེད། ༥ གཞན་པ་ བྱེད་པ་ མེད།
 ༦ གྱི་དམེད་ མ་མེད། ༧ གཞན་པ་ སྐྱེས་པས། ༨ གཞན་པ་ ཀྱིས། ༩ གཞན་པ་ བར་ མེད། ༡༠ གཞན་པ་ རྒྱག

དེའི་ཕྱིར་འདི་དག་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་མན་ངག་ལས་རིམ་པ་དང་རིམ་...
 བས་འབྱུང་བའི་གདུལ་དུའི་བསམ་པའི་དབྱེ་བས་བཅོམ་ཐུན་འདས་པའི་མན་ངག་གི་བྱེ་...
 བྲག་མཐའ་ཡས་པའི་དབྱེ་བ་དོགས་པར་བྱ་སྟེ། ཕྱོགས་གཅིག་ཙམ་འདིར་བཟུན་དེ།
 རིམ་པ་འདི་ནམས་ལས་རིམ་པ་གཅིག་ལྷན་ནས་^༡དད་པ་ཅན་སྤྱིང་^༢ཟེ་དང་ཐུན་པ་དང་.....
 ཆགས་པ་དང་བྲལ་བ་དམ་ཚིག་ལ་གནས་པ་སོམ་ཉི་མི་^༣བས་བསྐྱོམ་བས་ངེས་པར་.....
 བརྒྱབ་པར་བྱའོ། །

གདམས་ངག་ལས་བྱུང་བའི་དུས་ཀྱི་མཚན་པ་གྲི་བར་བྱ་སྟེ། ཆོས་བཅུ་ལ་
 བྱར་ཀྱམ་ལ་སོགས་པས་ཕྱིས་པའི་དྲི་མ་མེད་པའི་སྣོད་ལ་སིན་རྒྱར་བཅགས་ནས་དེའི་...
 དབྱས་སྒྲུ་གསེར་གྱི་སྒྲུ་གས་^༤ཆོས་འབྱུང་^༥མངོན་པར་གྲིས་དེ། དེའི་དབྱས་སྒྲུ་ཡི་གེ་
 ལྷོ་གྲིའོ། །ཡང་ན་ས་ཚོན་གྱིས་^༦མཐུལ་རྒྱར་བཞི་པ་བྱས་དེ་དབྱས་སྒྲུ་སིན་རྒྱར་ས་
 ཆོས་འབྱུང་བཞེད་ནས་དེ་ལ་ཡི་གེ་བོ་གྲིས་པ་དེའི་ངོས་སྒྲུ་གཡུང་དུང་བོ་ཕྱག་གྱུ་གྲིས་པ་
 ལས། རྒྱ་ལས་སྒྲིས་པ་^༧དང་སྐམ་ལས་རྒྱེས་པའི་མེ་དོག་གིས་མཚན་དེ། ཚེ་རྒྱལ་
 སོགས་པའི་གནས་བཞི་དང་སྒྲུ་བཞི་གོང་^༨བཞིན་དུ་མཚན་དོ། །བཟའ་བ་དང་བདུང་བ་
 ལ་སོགས་པའི་དམ་ཚིག་གི་རྣམས་འབྱོར་བ་བཞིན་དུ་དབྱལ་བར་བྱ་ཞིང་། གཞིན་ཅུ་མ་
 ནམས་ཀྱང་མཚན་པར་བྱའོ། །ཆོ་ག་འདི་ནི་གཅེར་བྱ་དང་། སྒྲ་གྲོལ་^༩བ་དང་སྟོ་ཕྱོགས་
 སྒྲ་མངོན་པར་བཟུས་དེ་ཉི་བར་འདུག་ནས་ཤིན་དུ་གསང་ཞིང་སྐས་བས་བརྒྱབ་པ་ལ་.....
 འབད་པར་བྱའོ། །དེ་མ་ཡིན་ན་དངོས་གྲུབ་ཉམས་པར་འགྱུར་བ་དང་། གད་ནམས་
 ཀྱང་སོ་སོར་འབྱུང་བར་འགྱུར་ངོ། །དེ་ནས་གདོར་མ་ཕུལ་ནས་མངོན་པར་འདོད་པའི་
 དངོས་གྲུབ་གསོལ་བ་བདེ་བ་སྟེ་གཤེགས་སྒྲུ་གསོལ་ལོ། །སིན་རྒྱར་དང་སྒྲ་བཞེས་ལ་

༡ གཞེན་ ལས་པའི་.....ལྷན་ནས་པར་ཆད། ༢ གཞེན་ སྒྲུ་གས། ༣ གཞེན་ འབྱུང་ མེད། ༤ གཞེན་ གྱི།
 ༥ གཞེན་ པ་ མེད། ༦ གཞེན་ བཞེ་གོང་ མེད། ༧ གཞེན་ སྒྲ་གྲོལ།

སོགས་པ་ནི་གཞིན་ཀྱིས་ནམས་དང་། ཡང་ན་བྱད་མེད་ཡུགས་ས་མོ་མ་ཡིན་པ་ལ་དབྱལ་
 བར་བྱའོ། །ཡང་ན་ཆོས་བཅུའམ་ཆོས་བརྒྱད་དམ་ཆོས་བཅུ་བཞི་ལ་བྱད་མེད་ཀྱིས་འཛོང་
 བར་བྱེད་པ་གང་ཡང་རྒྱང་བའི་མེ་དོག་དང་། ཤིང་དོག་དང་མར་ནག་དང་གོ་ལ་དང་
 འབྲས་དང་སྒོ་དང་ཞི་དང་མེ་ཤིང་དང་ཚྭ་དང་སིན་རྒྱར་དང་མདན་ལ་སོགས་པ་རྒྱང་
 ཟད་ཇི་ལྟར་འབྱོར་བས་ཉོས་ནས་ཅི་ཀྱས་པའི་གཡོས་བྱས་ནས་། སྒར་བཞིན་དུ་
 སིན་རྒྱར་ལས་བྱས་པའི་ཆོས་འབྱུང་ལ་ས་ཁོན་གྱི་ཡི་གེ་ལ་སོགས་པ་བྲིས་ནས་ཡང་.....
 དག་པར་མཆོད་ལ་འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་ལ་གསོལ་བ་གདབ་ཅིང་གཤེགས་སྲུ་གསོལ་ཡོ།
 གཞན་ཐམས་ཅད་ནི་སྒར་བཞིན་དུ་བྱའོ། །

དེའི་མི་ལམ་དོ་ཇི་ནལ་འབྱོར་མ་ལུང་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མན་ངག་གོ།
 གཞན་ཡང་ཤིན་དུ་དག་པའི་མེ་ཡོང་ལ་ཆོས་བརྒྱད་ལ་སིན་རྒྱར་བཀྲམ་ནས་དེ་ལ་ཆོས་.....
 འབྱུང་གི་ཕྱག་རྒྱ་བྲིས་དེ། ཕྱི་རྒྱུ་ནམས་སྲུ་བོ་གི་ས་ཁོན་ནམ་པར་བྲིས་ལ་དབྱས་སྲུ་
 སྒྲགས་བྲི་བར་བྱའོ། །ཆོས་འབྱུང་གི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ངོས་བཞི་ལ་གཡུང་དྲུང་རིས་གཡོན་
 དུ་འཁོར་བར་བྲིས་ལ། མེ་དོག་ལ་སོགས་པས་ཡང་དག་པར་མཆོད་ཅིང་སྒྲགས་ཇི་ལྟར་
 ཀྱས་པ་ཡོངས་སྲུ་བཞུས་དེ་སིན་རྒྱར་སྟོད་ཅིག་དུ་གཞག་གོ། །ཇི་ལྟར་ཇི་སྟོད་ཆེ་བ་
 དུག་གི་བར་དུ་བྱའོ། །དེའི་རྒྱུ་ལ་བཅན་དུག་ལངག་ལི་ལ་སྲུ་གྲུ་ཅན་གྱི་དབྱས་སྲུ་
 སིན་རྒྱར་བཅུག་ནས་དྲར་ཁྲིད་དུ་སྦས་དེ་གདོར་མ་དང་མཆོད་པ་བྱས་ནས་ཇི་ལྟར་འདོད་
 པའི་ཆེད་དུ་སྒྲགས་བཞུས་སོ། །དེ་ལྟར་ཉི་མ་རེ་རེ་ཞིང་ཆེ་བ་གཅིག་བྱའོ། །དེ་ནས་
 སིན་རྒྱར་དེས་གཡུང་དྲུང་རིས་ཀྱི་མཛོད་སྲུ་ནས་བྱས་དེ་བསོད་སྟོམས་ལ་གྲོང་ཁྲིར་དུ་.....

༡ གསེར་ རྟོག ༢ གསེར་ མེ་ཤིང་དང་ མེད། ༣ རྒྱ་དབེར་ (མདྲ་མུ་མུ་ (མི) མུ་མུ་ སྒྲི་རྒྱུ་ (དེ)
 ཡོ་ཁེ་ཇེ་ནན་ བེ་མྱེ་ ཡེ་, རྟེན་ཀེ་ཉ་ཅོ་ཉ) ༤ མ་མུ་མུ་མུ་མུ་སོགས་པའི་བཅུན་མོ་ནམས་ཀྱིས་ཆོང་ནས།
 ༥ རྒྱ་དབེར་དང་གསེར་ནང་ཉོས་ཞེས་འདུག་པ་ཞེས། སྟེ་མུ་མུ་ ༦ གསེར་ རྟེ། ༧ གསེར་ ཅོ་ མི་ལམ་དུ།
 ༨ གསེར་ བཞག ༩ གསེར་ ཡལ་དང་།

རབ་དུ་འབྱུག་གོ། །དེའི་ཆེ་མཇོན་སྤྱ་ནས་དེ་བྱད་མེད་གང་ལ་^༡ འཕྲོས་པར་མཐོང་བར་
འགྱུར་ན་དེ་ལ་འབད་བས་བསྟེན་བཀྱར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་^༢ གྲུབ་ཐོབ་རི་ཁྲོད་བའི་ཞབས་
ལས་བྱུང་བའི་ཚུལ་གྱིས་གཡུང་དུང་གིས་དོ་ཆེ་ནལ་འབྱུར་མ་མཉམས་པར་བྱེད་བའི་ཆོག་འོ།།

དེ་ལ་ནལ་འབྱུར་མའི་ཆ་ལྷགས་སྤྱ་གནས་བས་མཆོད་བ་དང་སྤྲུགས་བཞུས་་་་
བ་དང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་བ་ནི་རབ་དུ་གསངས་ནས་གཡོན་བས་བྱའོ། །གནས་ལ་
སོགས་བ་བལྟ་བའི་ཕྱིར་འགྲོ་བར་འདོད་བས་དོ་ཆེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་དམིགས་བ་གདད་་
ནས་གྲོང་ཁྲིར་ལ་སོགས་བ་ལ་གཡོན་སྒྲོར་དུ་བསྒྲོར་བར་བྱའོ། །འགྲོ་བ་ལ་^༤ ནི་དང་པོ་
ཀྱང་བ་གཡོན་བ་བརྒྱུང་ནས་འགྲོ་བར་བྱའོ། །རི་ལྟར་བཤམས་བའི་འདོད་ཡོན་ནམ་
བ་ལྷས་ནམ་པར་སྤང་མཇོན་ལ་སོགས་བའི་ནམ་པར་དག་བས་སོམ་ཉི་མེད་པར་ཡོངས་་་་
སྤྱོད་དོ། །ལྟ་དང་སྤྲུགས་ཐ་དད་དུ་གཟུང་བར་མི་བྱའོ། །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་
སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་བ་བཅོམ་ལྷན་འདས་མས་ལྷག་ བར་མོས་བས་ཀྱང་བ་བརྒྱད་་་་
བའི་སྤྲུགས་ཀྱིས་མཆོད་ཅིང་བྱག་བྱའོ། །སྤྲུགས་དང་བྱག་རྒྱ་རང་གི་དྲོག་^༥ བས་མི་བྱ་
ཞིང་གཤིག་^༦ བར་ཡང་མི་བྱའོ། །ཚུལ་ཁྲིམས་དང་ལྷན་བ་དང་ཉམས་བ་མེད་བ་ལ་
མངོན་སྤྱོད་ཀྱི་ལས་མི་བྱའོ། །བྱད་མེད་ནམས་ལ་བརྟུང་བ་དང་ཁྲོ་བ་དང་སྦྱད་པར་མི་
བྱའོ། །བྱད་པར་དུ་བྱག་རྒྱ་དུག་འཛིན་བ་ནམས་ལ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལ་སོགས་བ་དམ་
ཆོག་གི་ནམ་བ་རྒྱད་ཀྱི་རྗེས་སྤྱ་འབྲངས་བས་ཤེས་ནས་བསྐྱུང་བར་བྱའོ། །འབྲུལ་འཁོར་^༧
ལ་སོགས་བ་ཡང་དེ་ཉིད་ལས་ཤེས་པར་རབ་དུ་སྦྱར་བར་བྱ་སྟེ། མངས་བས་འཛིགས་
བས་མ་གྲིས་དེ་མང་པོ་ལ་དོན་མེད་དོ། །

༡ ལྟ་དཔེར་ (༥༥ ༥༥) དེ་ག་གང་དུ། ༢ གཞེན་ ལ་ལ། ༣ གཞེན་ བྱ་ནི། ༤ གཞེན་ ལ་ མེད།
༥ གཞེན་ ལྷགས། ༦ གཞེན་ དོགས། ༧ གཞེན་ བཤིག ༨ ལྟ་དཔེར་ ལྟ་དང་སྤྲུགས་་་་་་ མི་བྱའོ། །
བར་མེད། ༩ ལྟ་དཔེར་ (༨༩) ལྷགས།

གླ་མ་སངས་རྒྱས་གླ་མ་ཆོས། །
 དེ་བཞིན་གླ་མ་དགེ་འདུན་དེ། །
 གླ་མ་དབལ་ལྷན་རྩེ་འཛིན། །
 གླ་མ་ཉིད་ནི་རྒྱ་རྒྱེན་འགྱུར། །
 དེ་སྤྱིར་སངས་རྒྱས་ཐོབ་འདོད་པས། །
 གླ་མ་དག་ནི་མཉམ་པར་བྱ། །ཞེས་སོ། །

སྤྱིད་པ་དག་པར་བྱུང་བའི་ཡོན་ཏན་མེ་དྲོག་གི་བཟང་འདི་ནི་བྱས་པ་ཡིས། །
 མཁས་པ་བརྒྱ་ལམ་ཞི་བའི་འབྲས་བུའི་གོ་འཕང་སྤྱར་དུ་སྦྲོད་འདོད་དེན་པ་ན། །
 དེ་ཆེ་མངོན་པར་རྟོགས་པ་དབག་བསམ་གྱིང་ལས་རབ་བྱུང་རྒྱས་པར་བཅུད་བཟང་འདི། །
 ཤིན་ཏུ་རོ་ལྷན་སར་^༡ པར་བྱུང་བའི་སྒྲེ་མ་འདི་ནི་ཉེ་བར་བསྟེན་^༢ པར་བྱིས། །

རྒྱུད་དང་མངོན་རྟོགས་ཐབས་དག་དང་། །
 གླ་མའི་ཞལ་ནས་སྐྱབ་ཐབས་ལས། །
 དག་ཅེས་བསྐྱས་ནས་འབྲལ་^༣ པ་མེད། །
 འདི་ནི་ལེགས་པར་བཅུམས་པའོ། །
 དདག་གིས་འདི་ནི་བྱས་པ་ཡི། །
 དེ་ལས་བྱུང་བའི་དགེ་བ་དེས།^༤ །
 འགྲོ་ཀུན་རྩེ་ཆེ་མཛེས་མ་ཡི། །
 གོ་འཕང་སྤྱར་དུ་ཐོབ་པར་གྲོག། །

དབལ་རྩེ་ཆེ་ནལ་འབྱོར་མའི་སྐྱབ་ཐབས་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་སྒྲེ་མ་ཞེས་བྱ་བ་
 སྦྲོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་དག་གའི་འབྲུང་གནས་སྤྱོད་པས་མཛད་པ་ཚོགས་སོ། །

རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་ཀྱི་བཞུགས་མཁས་པ་ཆེན་པོ་དུན་ཤུ་ལས་སྤྱི་རང་འགྱུར་དུ་
 བྱས་པའོ། །

༡ གཞེས་ ཟེ། ༢ གཞེས་ ཅོ་ གསར། ༣ གཞེས་ དེན། ༤ གཞེས་ བྱ། ༥ གཞེས་ སྐྱབས།
 ༦ གཞེས་ འབྲུགས། ༧ གཞེས་ དེ།

